राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत युवा जागरण का अग्रदूत RNI no. UPHIN45193/24/1/2014

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

जय विजय
मासिक

वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in, ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com

वर्ष-३, अंक-७ नवी मुंबई अप्रेल २०१७ विक्रमी सं. २०७४ युगाब्द ५११७ पृष्ठ-३२ निःशुल्क

३ तलाक का मामला संविधान पीठ में

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने ३ तलाक के मामले को ३० मार्च को न्यायालय की संविधान पीठ को सौंप दिया जो इसकी संवैधानिक वैधता पर फैसला देगी। मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति जगदीश सिंह केहर की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने अपने फैसले में कहा कि मामले की सुनवायी ११ मई से दैनिक आधार पर की जाएगी।

उच्चतम न्यायालय ने इस मसले पर २०१५ में संज्ञान लिया था। आज चीफ जस्टिस जे एस खेहर की अध्यक्षता वाली बेंच ने इसे पांच जजों की संविधान पीठ को सौंप दिया है। अदालत में मौजूद एटॅार्नी जनरल सहित कुछ वरिष्ठ वकीलों ने गर्मियों की छुट्टी में सुनवाई पर एतराज जताया। लेकिन चीफ जस्टिस ने कहा कि अदालत में आने वाले अहम मसले कई सालों तक चलते रहते हैं। मेरे हिसाब से इन्हें जल्द निपटाने का यही तरीका है। मैं और साथी जज छुट्टी में काम करने को तैयार हैं। आप नहीं करना चाहते तो फिर हम भी छुट्टी मनाएंगे। इस पर अदालत में मौजूद सभी पक्षों ने ११ मई से होने वाली सुनवाई के लिए सहमति जताई। उल्लेखनीय है कि अदालत यह पहले ही स्पष्ट कर चुकी है कि उसकी सुनवाई मुस्लिम पर्सनल लॉ के कुछ प्रावधानों की संवैधानिक वैधता पर है। ■

महिलाओं को मिलेगा २६ सप्ताह का मातृत्व अवकाश, नए कानून पर राष्ट्रपति की मुहर

नयी दिल्ली। नये कानून के तहत महिला कर्मचारियों को अब १२ सप्ताह की जगह २६ सप्ताह का सवैतनिक अवकाश मिलेगा. राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने मातृत्व लाभ (संशोधन) कानून, २०१७ को अपनी स्वीकृति दे दी. महिला कर्मचारियों के लाभ के लिए ५५ वर्ष पुराने इस कानून के कुछ प्रावधानों में बदलाव किया गया है.

नये कानून के अन्तर्गत ५० या इससे अधिक कर्मचारियों वाले प्रत्येक संस्थान के लिए निर्धारित दूरी के भीतर क्रेच की सुविधा होना आवश्यक है. नियोक्ता भी एक महिला को दिन में चार बार क्रेच जाने की अनुमति देने के लिए बाध्य होगा.

प्रत्येक महिला को देनी होगी जानकारी

कानून कहता है कि प्रत्येक प्रतिष्ठान को इसके तहत उपलब्ध हर सुविधा के बारे में प्रत्येक महिला को उसकी प्रारम्भिक नियुक्ति के वक्त लिखित और इलेक्ट्रॉनिक रूप से बताना होगा. नियोक्ता महिला को मातृत्व अवकाश पाने के बाद घर से काम करने की अनुमति दे सकता है.

इस कानून में कहा गया है, 'ऐसी स्थिति में जहां महिला को सौंपे गये कार्य की प्रकृति उस तरह की हो कि वह घर से काम कर सकती है, तो नियोक्ता ऐसी अवधि के लिए मातृत्व लाभ हासिल करने के बाद उसे ऐसा करने की अनुमति दे सकता है और ऐसी स्थिति में नियोक्ता और महिला आपसी तालमेल से ऐसा करने को राजी हो सकते हैं.'

बच्चा गोद लेने पर १२ सप्ताह का मातृत्व अवकाश

यह कानून तीन महीने से कम उम्र के बच्चे को गोद लेने और मां बनने (जैविक मां जो अपने अंडाणु को दूसरी महिला में प्रतिरोपित कर बच्चा पैदा करती हैं) वाली महिला को १२ सप्ताह के मातृत्व अवकाश की अनुमति देता है.

२६ सप्ताह का अवकाश केवल दो बच्चों के लिए

इस कानून के अन्तर्गत २६ सप्ताह का सवैतनिक अवकाश केवल दो बच्चों के लिए मिलेगा. दस या ज्यादा लोगों को नौकरी देने वाले सभी प्रतिष्ठानों पर लागू होने वाला कानून कहता है कि दो या ज्यादा बच्चों वाली महिला को १२ सप्ताह के मातृत्व अवकाश पाने का अधिकार होगा. ■

जीएसटी बिल लोकसभा में पास, 'एक राष्ट्र, एक टैक्स' लागू होगा

नई दिल्ली। देश में ऐतिहासिक टैक्स सुधार व्यवस्था जीएसटी को लागू करने का मार्ग प्रशस्त करते हुए लोकसभा ने ३० मार्च को वस्तु एवं सेवा कर से जुड़े चार विधेयकों को मंजूरी दे दी तथा सरकार ने आश्वस्त किया कि नई टैक्स प्रणाली में उपभोक्ताओं और राज्यों के हितों को पूरी तरह से सुरक्षित रखने के साथ ही कृषि पर टैक्स नहीं लगाया गया है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जीएसटी से जुड़े अनुपूरक विधेयकों के लोकसभा में पारित होने पर प्रसन्नता व्यक्त की. उन्होंने विधेयकों के पारित होने के तुरंत बाद ट्विटर पर लिखा, 'जीएसटी विधेयक पारित होने पर सभी देशवासियों को बधाई. नया साल, नया विधेयक, नया भारत.'

लोकसभा ने ३० मार्च को केंद्रीय माल एवं सेवा कर बिल २०१७ (सी जीएसटी बिल), एकीकृत माल एवं सेवा कर बिल २०१७ (आई जीएसटी बिल), संघ राज्य क्षेत्र माल एवं सेवाकर विधेयक २०१७ (यूटी जीएसटी बिल) और माल एवं सेवाकर (राज्यों को प्रतिकर) विधेयक २०१७ को सम्मिलित चर्चा के बाद कुछ सदस्यों के संशोधनों को नामंजूर करते हुए ध्वनिमत से पारित कर दिया। धन विधेयक होने के कारण इन चारों विधेयकों पर अब राज्यसभा को केवल चर्चा करने का अधिकार होगा। ■

दिव्यांगों को यूनिवर्सल पहचानपत्र, पूरे देश में होगा मान्य

नई दिल्ली। केन्द्रीय सरकार देशभर के दिव्यांगों को यूनिवर्सल पहचानपत्र (आईडी) दे रही है, जो पूरे देश में मान्य होगा। सामाजिक आधिकारिता मंत्री थावरचंद गहलोत ने एक प्रश्न के उत्तर में लोकसभा में बताया कि अब तक दिव्यांगों को जिला स्तर पर आईडी दिया जाता रहा है। ऐसे में एक जिले का कार्ड दूसरे जिले में मान्य नहीं होता। लेकिन अब सरकार सभी दिव्यांगों को यूनिवर्सल आईडी देगी, जो पूरे देश में मान्य होगा।

२०११ की जनगणना के अनुसार देश में दो करोड़ ६८ लाख दिव्यांग हैं। सरकार ने यूनीवर्सल पहचानपत्र बनाने के लिए वेबसाइट जारी की है, जिससे कोई भी दिव्यांग अपना आईडी बनवा सकता है। ■

विधानसभा चुनाव २०१७ : उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मणिपुर एवं गोवा में भाजपा, पंजाब में कांग्रेस

नई दिल्ली। भाजपा ने उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड विधानसभा चुनावों में जीत का शानदार परचम लहराया तथा कांग्रेस ने पंजाब में अपनी सफलता की जोरदार दस्तक दी. इसके अलावा कांग्रेस गोवा और मणिपुर में सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी जहां के विधानसभा चुनावों में खण्डित जनादेश आया. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं पार्टी अध्यक्ष अमित शाह के कुशल नेतृत्व में भाजपा ने उत्तर प्रदेश एवं पड़ोसी उत्तराखंड में तीन चौथाई बहुमत हासिल कर अपनी विजय का शंखनाद किया. उत्तराखंड के मुख्यमंत्री हरीश रावत उन दोनों सीटों पर हार गये, जहां से वह चुनाव लड़े थे.

उत्तर प्रदेश चुनाव परिणाम : भाजपा गठबंधन- ३२५ सीट, सपा-कांग्रेस गठबंधन- ५४ सीट, बहुजन समाज पार्टी- १९ सीट, अन्य- १० सीट

उत्तराखंड चुनाव परिणाम : भाजपा- ५६ सीट, कांग्रेस- ११ सीट, अन्य- २ सीट

पंजाब चुनाव परिणाम : कांग्रेस- ७७ सीट, आम आदमी पार्टी- २२ सीट, अकाली-भाजपा गठबंधन- १८ सीट

गोवा चुनाव परिणाम : कांग्रेस- १७ सीट, भाजपा- १३ सीट, अन्य- १० सीट

मणिपुर चुनाव परिणाम : कांग्रेस- २८ सीट, भाजपा- २१ सीट, टीएमसी- १ सीट, अन्य- १० सीट

राजनीतिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण राज्य उत्तर प्रदेश में भाजपा ने सत्ता से १५ साल के वनवास के बाद अपनी धमाकेदार वापसी की है. राज्य चुनाव में सपा एवं बसपा जैसे क्षेत्रीय दलों की सीट संख्या काफी सिकुड़ गयी. पांच राज्यों में हुए विधानसभा चुनावों को मोदी की लोकप्रियता एवं नोटबंदी पर एकतरह से जनादेश माना जा रहा था.

पंजाब में पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिन्दर सिंह की अगुवाई में कांग्रेस ने १० वर्ष बाद सत्ता में वापसी की है. इस चुनाव में कांग्रेस ने न केवल सत्तारूढ़ शिरोमणि अकाली दल-भाजपा गठबंधन बल्कि अरविन्द केजरीवाल की आम आदमी पार्टी को सीट संख्या के मामले में काफी पीछे छोड़ दिया. आआपा पंजाब चुनाव में अपनी स्पष्ट जीत की उम्मीद कर रही थी.

भाजपा ने गोवा और मणिपुर में सीट संख्या में पीछे रहने के बाद भी अपनी सरकारें बना लीं, क्योंकि सबसे अधिक सीटें जीतकर बहुमत से थोड़ा पीछे रह जाने वाली कांग्रेस दोनों राज्यों में किसी भी अन्य विधायक का समर्थन नहीं जुटा सकी।

भाजपा ने उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ, उत्तराखंड में त्रिवेन्द्र सिंह रावत, गोवा में डॉ मनोहर पर्रिकर तथा मणिपुर में एन. बीरेन सिंह को मुख्यमंत्री पद का दायित्व सौंपा है। ■

कार्टून

ये रिश्ता क्या कहलाता है? -- मनोज कुरील

प्रधानमंत्री के मन की बात : एक दिन बिना पेट्रोल-डीजल के रहें देशवासी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ३०वीं बार देश को 'मन की बात' के माध्यम से संबोधित किया. पीएम मोदी ने कहा कि हमारा ढाई हजार करोड़ के डिजिटल पेमेंट का सपना है. अब गरीब से गरीब भी डिजिटल पेमेंट करना सीख रहा है. साथ ही पीएम ने नागरिकों को सप्ताह में एक दिन पेट्रोल डीजल का उपयोग नहीं करने की नसीहत दी ताकि न्यू इंडिया का सपना पूरा होगा.

प्रधानमंत्री मोदी ने 'स्वच्छ भारत अभियान' को लोगों की आदत बदलने, बदलाव लाने और साफ सफाई का आंदोलन बताया है. इसके अलावा उन्होंने कहा कि हम कालेधन और भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई जारी रहेगी. साथ ही इस बार की 'मन की बात' में पीएम ने बांग्लादेश के स्वतंत्रता दिवस, रवींद्रनाथ टैगोर, भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु के बलिदान, महात्मा गांधी के चंपारण सत्याग्रह का भी उल्लेख किया. ■

सामान्य ज्ञान

प्रश्न

१. मैग्सेसे पुरस्कार विजेता पहले भारतीय कौन थे?
२. 'स्वर्ण कमल पुरस्कार किस क्षेत्र में दिया जाता है?
३. विस्डेन 'भारतीय शताब्दी की क्रिकेटर पुरस्कार किसको दिया गया था?
४. अपने जीवनकाल में भारतरत्न से सम्मानित किये जाने वाले राजपुरुष कौन थे?
५. 'कलिंग पुरस्कार' कौन प्रदान करता है?
६. 'त्रिपिटक' किससे सम्बन्धित है?
७. कौन प्रसिद्ध आई.एन.ए. मुकदमे के वकील थे?
८. किसने तीनों गोलमेज सम्मेलनों में भाग लिया था?
९. संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिन्दी में भाषण देने वाले पहले व्यक्ति कौन हैं?
१०. नागार्जुन सागर बाँध किस राज्य में स्थित है?

उत्तर-

१. विनोबा भावे; २. सिनेमा; ३. कपिल देव; ४. मोरारजी देसाई; ५. यूनेस्को; ६. बौद्धों से; ७. भूलाभाई देसाई; ८. डॉ बी आर अम्बेडकर; ९. अटल बिहारी वाजपेई; १०. आंध्र प्रदेश।

सुभाषित

मूर्खा यत्र न पूज्यन्ते धान्यं यत्र सुसंचितम्।
दम्पत्यो कलहो नास्ति तत्र श्रीः स्वयंमागता।। (चाणक्य नीति)

अर्थ- जहाँ मूर्खों की पूजा नहीं होती, घर में अन्न आदि का यथोचित भंडार रहता है और पति-पत्नी में कलह नहीं होती, वहाँ पर समृद्धि स्वयं आ जाती है।

पद्यार्थ- नहिं मूढ़न को सम्मान जहाँ, बसते न जहाँ गुणहीन अनारी।
घर अन्न भरा भरपूर रहे, सब पेट भरें जन दीन-दुखारी।
मिल बात करें सब प्रेम भरी, लड़ते न कभी घर में नर-नारी।
कहते कवि श्री उनके घर में, बरसात करे धन की अति भारी।।

(आचार्य स्वदेश)

सम्पादकीय

परम वैभव की ओर

प्रधानमंत्री के रूप में श्री नरेन्द्र मोदी जैसे संघप्रचारक को प्राप्त करने के बाद अब देश के सबसे बड़े प्रदेश उत्तर प्रदेश में प्रचंड बहुमत से योगी आदित्यनाथ मुख्यमंत्री पद का दायित्व निभा रहे हैं। जिस प्रकार अभी तक मोदी जी के कार्य और नीतियाँ देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करते हुए इसके लाभों को जनसाधारण तक पहुँचाने की ओर अग्रसर हैं, उसी प्रकार योगी जी ने अपने प्रारम्भिक कार्यों से यह स्पष्ट संकेत दे दिया है कि वे इस महत्वपूर्ण प्रदेश को विकास की उन ऊँचाइयों तक ले जाने के लिए प्रतिबद्ध हैं जिनसे यह अभी तक वंचित रहा है, हालांकि पूर्व की सरकारें इसके कितने भी दावे करती रही हों।

वैसे भी भारतीय जनता पार्टी केन्द्र में और देश के अनेक प्रदेशों में 'सबका साथ सबका विकास' का संकल्प लेकर सत्ता में आयी है, इसलिए उससे यह आशा करना स्वाभाविक ही है कि वह समाज के अन्तिम छोर पर खड़े नागरिकों के विकास के लिए ही कार्य करेंगे। सन्तोष की बात है कि मोदी जी और योगी जी के कुछ अप्रिय लगने वाले निर्णयों के बाद भी जनसाधारण का यह विश्वास दृढ़ हुआ है कि अपनी पूर्ववर्ती सरकारों के विपरीत ये सरकारें जो कहती हैं वास्तव में वही करती भी हैं।

इसका पूरा-पूरा परिचय आये दिन होने वाले विधानसभा, विधान परिषद, नगर निकाय, पंचायत आदि के चुनावों और उपचुनावों से मिल जाता है, जिनमें सभी पूर्व अनुमानों को धता बताते हुए भाजपा के प्रत्याशियों को भारी सफलता प्राप्त हो रही है। यह सफलता किसी क्षेत्र विशेष तक सीमित नहीं है, बल्कि कुछ अपवादों को छोड़कर उत्तर-दक्षिण-पूर्व-पश्चिम-उत्तरपूर्व अर्थात् देश के हर कोने तक फैली हुई है। इससे यही सिद्ध होता है कि देश की जनता का विश्वास मोदी जी की नीतियों में दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है और वह चाहती है कि मोदी जी देश के विकास के इसी मार्ग पर चलते रहें। जो दल और व्यक्ति उनके इस मार्ग में बाधायें डालते हैं, उनको धूल चटाकर किनारे करने में भी जनता जनार्दन को कोई संकोच नहीं है।

इसका एक सकारात्मक पक्ष यह भी है कि जब से नरेन्द्र मोदी देश के प्रधानमंत्री पद का दायित्व निभा रहे हैं, तब से नीचे से ऊपर तक व्याप्त भारी भ्रष्टाचार पर प्रभावी रोक लगी है और पूर्व सरकारों के शासन आये दिन सामने आने वाले घोटाले केवल इतिहास की वस्तु बन गये हैं। मोदी जी के शासन को लगभग तीन वर्ष हो गये हैं और हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि इस पूरे कार्यकाल में उनके ऊपर भ्रष्टाचार की एक काली रेखा तो क्या बिन्दु तक नहीं पड़ा है। भारत जैसे भ्रष्टाचार के लिए कुख्यात देश में यह भी कोई साधारण उपलब्धि नहीं है।

देश के प्रत्येक जागरूक नागरिक की तरह हमारी भी यह कामना है कि मोदी जी और उनके सभी सहयोगी इसी प्रकार देश को विकास के मार्ग पर चलाते रहें, ताकि देश शीघ्र ही परम वैभव की स्थिति को प्राप्त कर सके, जिसका स्वप्न हम सोते-जागते नित्य देखा करते हैं। यह मार्ग लम्बा अवश्य है, लेकिन यदि दृढ़तापूर्वक इसी पर चलते रहें तो शीघ्र ही उस लक्ष्य तक पहुँचना सुनिश्चित है।

-- विजय कुमार सिंघल

आपके पत्र

कविता, कहानी, समाचार, मनोरंजन से भरपूर सामग्री उपलब्ध कराने के लिए साधुवाद। **-- पूनम माटिया**

सदा की तरह सुन्दर और शानदार अंक। **-- डॉ डीएम मिश्र**

जय विजय का प्रतीक्षित सुन्दर नया अंक प्राप्त हुआ। आभार। **-- कल्पना रामानी**

'धर्म पालन की वस्तु है' यह लेख सबसे अच्छा और सारगर्भित लगा। लेखक और आपको धन्यवाद। **-- डॉ अनवर जमाल खान**

राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय का लेख 'गम्भीर बकवास' विचारणीय है। पर क्या इस बिडम्बना की जिम्मेदारी बहुत कुछ हम पर नहीं है? **-- मनोज पाण्डेय 'होश'**

शानदार अंक। पढ़कर अच्छा लगा।
-- शशि पुरवार, अ. कीर्तिवर्धन, नीरू श्रीवास्तव, शिवानी शर्मा

पत्रिका के लिए धन्यवाद। -- **उपेन्द्र ब्रह्मचारी, राहुल सिंह, कृष्ण नारायण पाण्डेय, भारती तिवारी, प्रेरणा गुप्ता, विनय कुमार तिवारी, मुकेश सिंह, कल्पना भट्ट, डॉ शुभ्रता मिश्रा, डॉ कमलेश द्विवेदी, शशांक मिश्र भारती, नवीन कुमार जैन, आशीष कुमार त्रिवेदी, अरुण निषाद, प्रमोद दीक्षित, डॉ वेद व्यथित, डॉ दिवाकर दत्त त्रिपाठी, अमित कुमार अम्बष्ट**

(सभी कृपालु पत्र-लेखकों का हार्दिक आभार! - सम्पादक)

राममंदिर विवाद समाप्त हो

मृदुल शरण

अब वह समय आ गया है कि अयोध्या में राम मंदिर विवाद को खत्म कर देना होगा। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने जब कह दिया कि वादी-प्रतिवादी दोनों पक्ष कोर्ट के बाहर मिल बैठकर फैसला कर लें, तो मुस्लिम धर्मगुरुओं को परेशानी क्यों हो रही है? वे क्यों नहीं तैयार हो रहे हैं? इनका यह विरोध साफ दर्शाता है कि मुस्लिम धर्मगुरूओं को यह चिंता खाई जा रही है कि अगर इस विषय का अंत हो गया तो इस मुद्दे ने उन्हें इस धर्म के बाजार का हीरो बनाया हुआ है। मुद्दे की समाप्ति उन्हें बेकारी के तरफ ढकेल देगी और उनकी दुकानदारी खतरे में पड़ जाएगी।

अगर देखा जाए तो भारत के ६० प्रतिशत मुसलमानों को मंदिर-मस्जिद विवाद से कुछ लेना-देना नहीं है, बल्कि बहुत से मुसलमान मंदिर के पक्षधर हैं। एक बात पर गौर करें कि ये बाबरी मस्जिद कहते हैं। क्या कोई मुसलमान बाबरी की पूजा करता है, नहीं न? फिर काहे की बाबरी मस्जिद? दूसरी बात अयोध्या राम की जन्मभूमि है इस पर किसी भी संप्रदाय को शक न होनी चाहिए, तो श्रीराम का मंदिर वहाँ नहीं बनेगा तो क्या लाहौर में बनेगा? तीसरी बात ईद-बकरीद इत्यादि बहुत से मौकों पे हमारे मुसलमान भाई मस्जिद के बाहर रोड पर नमाज पढ़ते हैं, तो तब क्या उनको मस्जिद याद नहीं रहती है?

हिन्दुस्तान में पूर्व में हम हिन्दूओं के कितने मंदिर तोड़ दिये गये और हमारी सहनशीलता देखिए कि हम चुप रहे। विभिन्न राजनीतिक दल अपने वोटों की राजनीति में भले ही इस मुद्दे पर राजनीति भाषा का प्रयोग करते हों, पर वो भी दिल से अयोध्या में मंदिर निर्माण के पक्षधर ही हैं। अगर वो बहुत ही सैक्यूलर हैं तो मस्जिद में माथा टेक कर दिखाएं आवाम को। वो क्यों श्रीराम को पूजते हैं? भारत की १२५ करोड़ जनता में से ८५ प्रतिशत लोग मंदिर निर्माण के पक्ष में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहमत हैं। यह एक सच्चाई है।

अब वह समय है जब केंद्र और राज्य सरकार एक ही दल की है और विवाद का कोई गुंजाइश नहीं है। जितना जल्द हो सके, समय रहते इस मुद्दे को समाप्त करें क्योंकि इसके अलावा और भी बहुत सी समस्याएं हैं देश में, जिनका समाधान हमें करना है। भारत की जनता यह कभी नहीं चाहेगी कि सिर्फ इस मुद्दे पर ही सरकारों के उलझने से देश के विकास की गति धीमी या अवरुद्ध हो जाए। ■

संस्कृत भाषा की महत्ता

डॉ विवेक आर्य

असम सरकार ने राज्य के सभी स्कूलों में ८वीं कक्षा तक संस्कृत को अनिवार्य बनाने का फैसला किया है। हमारे देश में एक विशेष समूह है जो हमारी सभी प्राचीन मान्यताओं का हरसंभव विरोध करना अपना कर्तव्य समझता है। इन्हें हम साम्यवादी, कम्युनिस्ट, पुरस्कार वापसी गैंग, जेएनयू के अधेड़ आदि नामों से जानते हैं। अपनी पुरानी आदत के चलते इन्होंने अनेक कुतर्क देने आरम्भ किये। नवभारत टाइम्स अखबार में ६ मार्च को दिल्ली संस्करण में 'संस्कृत का मोह' शीर्षक से संपादकीय प्रकाशित हुआ। हम इस संपादकीय में दिए गए कुतर्कों की समीक्षा करेंगे।

कुतर्क १- आज जब दुनिया भर के शिक्षाविद और मनोवैज्ञानिक बच्चों के बस्ते का बोझ कम करने के उपाय खोजने में जुटे हैं, तब असम सरकार उन पर एक और विषय का भार लाद रही है।

समाधान- बच्चों के बस्ते का बोझ तो केवल बहाना है। हमारी शिक्षा का मूल उद्देश्य मनुष्य को समाज का एक ऐसा आदर्श नागरिक बनाना है जो समाज और राष्ट्र को अपने योगदान द्वारा समृद्ध करे एवं उन्नति करे। पाश्चात्य शिक्षा का उद्देश्य केवल एक पैसा कमाऊ मशीन बनाना है, जो अपने भोगवाद की अधिक से अधिक पूर्ति के लिए येन-केन-प्रकारेण धन कमाए। अनेक पढ़े-लिखे युवक आज अपनी महिला मित्र को प्रसन्न करने के लिए या सैर सपाटे के लिए चोरी करते हैं, क्योंकि शिक्षा में उनको नैतिक मूल्यों, सामाजिक कर्त्तव्य, राष्ट्र उन्नति के लिए योगदान देने, महान एवं प्रेरणादायक प्राचीन इतिहास आदि के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं बताया जाता। यह कार्य संस्कृत शिक्षा के माध्यम से भली प्रकार से हो सकता है।

कुतर्क २- अंग्रेजी-हिंदी के अतिरिक्त तीसरी भाषा के रूप में तमिल, तेलुगू, कन्नड़ या असमिया आदि जीवित भाषा सिखाई जाये। संस्कृत मृत भाषा है।

समाधान- मृत और जीवित भाषा की बात केवल कल्पना है। भारत में कुछ लोग लैटिन, हिब्रू, ग्रीक, अरबी, फारसी आदि भाषाओं को प्रोत्साहित करते हैं। आप कभी इन भाषाओं को मृत नहीं बताते। यह दोहरी मानसिकता है। उसके ठीक उलट आप इन भाषाओं के संरक्षण के लिए सरकार से सहयोग की अपेक्षा करते हैं। कोई भी व्यक्ति जो संस्कृत भाषा की महता से अनभिज्ञ है इसी प्रकार की बात करेगा, परन्तु जो संस्कृत भाषा सीखने के लाभ जानता है उसकी राय निश्चित रूप से संस्कृत के पक्ष में होगी। संस्कृत भाषा को जानने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि हमारे धर्म ग्रन्थ जैसे वेद, दर्शन, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता इत्यादि में वर्णित नैतिक मूल्यों, सदाचार, सच्चरित्रता, देशभक्ति, बौद्धिकता आदि गुणों को संस्कृत की सहायता से जाना जा सकता है, जो जीवन में हर समय आपका मार्गदर्शन करने में परम सहायक हैं। कल्पना कीजिये जिस समाज में कोई चोर न हो, कोई व्यभिचारी न हो, कोई पापकर्म न करता हो, वह कितना आदर्श समाज होगा। वैदिक शिक्षा प्रणाली में इसी प्रकार के आदर्श समाज की परिकल्पना है।

कुतर्क ३- अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषा को सीखने से रोजगार के नवीन अवसर मिलने की अधिक सम्भावना है जबकि संस्कृत सीखने का कोई लाभ नहीं है। दुनिया के साथ हमकदम होकर चलने, आधुनिक ज्ञान और प्रौद्योगिकी की जानकारी हासिल करने के लिए अंग्रेजी अनिवार्य है। इससे आगे चलकर तकनीकी क्षेत्रों और शोध में भी मदद मिलती है।

समाधान- लगता है आप अपनी छोटी सी दुनिया तक सीमित है। विश्व में अनेक देश अपनी राष्ट्रभाषा को प्रोत्साहन देकर विकसित देशों की सूची में शामिल हुए है, जैसे रूस वाले रूसी भाषा, चीन वाले चीनी भाषा, जापान वाले जापानी भाषा, फ्रांस वाले फ्रांसीसी भाषा, इटली वाले इटालियन भाषा सीखकर ही संसार में अपना सिक्का जमाने में सफल हुए हैं। अंग्रेजी भाषा मुख्य रूप से उन देशों में अधिक प्रचलित है जिन देशों पर अंग्रेजों ने राज किया था। स्वतंत्र होने के पश्चात भी उन देशों के लोग गुलामी की मानसिकता से बाहर नहीं निकल पाए है। आप भूल गए कि संविधान निर्माता डॉ अंबेडकर द्वारा अंग्रेजी के स्थान पर संस्कृत को मातृभाषा बनाने का प्रस्ताव दिया गया था, जिसे अंग्रेजी समर्थकों ने लागू नहीं होने दिया। जब अन्य देश अपनी मातृभाषा में शोध और आधुनिक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, तो हम संस्कृत के माध्यम से क्यों नहीं कर सकते?

कुतर्क ४- संस्कृत भाषा में रोजगार की सम्भावना न के बराबर है। संस्कृत जानने वालों का भविष्य उन्नत नहीं है।

समाधान- आप व्यावहारिक एवं सामाजिक यथार्थ से अनभिज्ञ हैं। हमारी शिक्षा पद्धति में अनेक पाठ्यक्रम विद्यमान हैं जैसे विज्ञान, वाणिज्य, ललित कलाएं आदि। इनमें से उतीर्ण होने वाले क्या सभी बालक क्या अपनी शिक्षा को रोजगार में प्रयोग कर पाते है? नहीं। बहुत सारे छात्र अपने पारिवारिक व्यवसाय को चुनते है, बहुत सारे अन्य कार्य करते हैं। इसलिए यह कहना कि संस्कृत शिक्षा प्राप्त भूखे मरेंगे केवल अपनी अव्यवहारिक कल्पना है। अनेक संस्कृत शिक्षा प्राप्त छात्रों को आईएएस, आईपीएस तक बने हैं। दूसरी ओर पढ़े-लिखे बेरोजगार भी देश में बहुत हैं।

एक अन्य उदाहरण भी लीजिए। जेएनयू दिल्ली में राजनीति करने वाले अधेड़ छात्रों के शोध विषय देखिये। कोई बुद्धित स्टडीज से पीएचडी कर रहा है, कोई अफ्रीकन स्टडीज से। कोई पाली भाषा में शोध कर रहा है, कोई गालिब की गजलों पर। इन सभी को उचित रोजगार मिलने कि क्या गारंटी है? अगर भूले भटके कोई शिक्षक लग गया तब तो ठीक है। अन्यथा नारे लगाने के अलावा किसी काम का नहीं है। निश्चित रूप से अगर देश में संस्कृत भाषा में शोध होने लगे तो निश्चित रूप से संस्कृत भाषा के माध्यम से भी रोजगार के अवसर पैदा होंगे।

कुतर्क ५- विदेशी भाषा को जानने से व्यापार आदि की संभावनाएं प्रबल होंगी। इसलिए संस्कृत पर समय लगाना व्यर्थ है।

समाधान- संसार की सभी विदेशी भाषाओं का ज्ञान किसी एक व्यक्ति को नहीं हो सकता। कामचलाऊ ज्ञान एक-दो भाषाओं का हो सकता है। मगर इस कामचलाऊ ज्ञान के लिए संस्कृत जैसी महान भाषा की अनदेखी करना मूर्खता है। एक उदाहरण से इस विषय को समझने का प्रयास करते हैं। एक सेठ के तीन पुत्र थे। वृद्ध होने पर उसने उन तीनों को आजीविका कमाने के लिए कहा और एक वर्ष पश्चात् उनकी परीक्षा लेने का वचन दिया और कहा जो सबसे श्रेष्ठ होगा उसे ही संपत्ति मिलेगी। तीनों अलग-अलग दिशा में चल दिए।

सबसे बड़ा क्रोधी और दुष्ट स्वभाव का था। उसने सोचा की मैं जितना शीघ्र धनी बन जाऊंगा उतना पिताजी मेरा मान करेंगे। उसने चोरी करना, डाके डालना जैसे कार्य आरम्भ कर दिए एवं एक वर्ष में बहुत धन एकत्र कर लिया। दूसरे पुत्र ने जंगल से लकड़ी काटकर, भूखे पेट रहकर धन जोड़ा मगर उससे उसका स्वास्थ्य बहुत क्षीण हो गया। तीसरे पुत्र ने कपड़े का व्यापार आरम्भ किया एवं ईमानदारी से कार्य करते हुए अपने आपको सफल व्यापारी के रूप में स्थापित किया।

एक वर्ष के पश्चात पिता की तीनों से भेंट हुई। पहले पुत्र से बोले- तुम्हारा चरित्र और मान दोनों गया मगर धन रह गया इसलिए तुम्हारा सब कुछ गया क्यूंकि मान की भरपाई करना असंभव है। दूसरे पुत्र से बोले- तुम्हारा तन गया मगर धन रह गया इसलिए तुम्हारा कुछ कुछ गया। जो स्वास्थ्य की हानि हुई है उसकी भरपाई असंभव है। तीसरे पुत्र से बोले- तुम्हारा मान और धन दोनों बना रहा इसलिए तुम्हारा सब कुछ बना रहा। ध्यान रखो मान-सम्मान तन और धन से कीमती है।

यह मान सम्मान, नैतिकता, विचारों की पवित्रता, श्रेष्ठ आचरण, चरित्रवान होना यह सब उस शिक्षा से ही मिलना संभव हैं जिसका आधार वैदिक शिक्षा प्रणाली है। जिस शिक्षा का उद्देश्य केवल जीविकोपार्जन है, उससे इन गुणों की अपेक्षा रखना असंभव है। यह केवल उसी शिक्षा से संभव है जो मनुष्य का निर्माण करती है। मनुष्य निर्माण करने और सम्पूर्ण विश्व को अपने ज्ञान से प्रभावित करने की अपार क्षमता केवल हमारे वेदादि धर्म शास्त्रों में है। इस तथ्य को कोई नकार नहीं सकता।

जीवन यापन के लिए क्या क्या करना चाहिए यह आधुनिक शिक्षा से सीखा जा सकता हैं मगर जीवन जीने

(शेष पृष्ठ ३० पर)

झिझक मिटे तो हिंदी बढ़े...!

तारकेश कुमार ओझा

एक बार मुझे एक ऐसे समारोह में जाना पड़ा, जहां जाने से मैं यह सोचकर कतरा रहा था कि वहां अंग्रेजी का बोलबाला होगा। सामान्यतः ऐसे माहौल में मैं सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाता। लेकिन मन मारकर वहां पहुंचने पर मुझे सुखद आश्चर्य हुआ। ज्यादातर वक्ता भले ही अहिंदी भाषी और ऊंचे पदों को सुशोभित करने वाले थे, लेकिन समारोह के प्रारम्भ में ही एक ने हिंदी में भाषण क्या शुरू किया कि प्रबंधक से लेकर प्रबंध निदेशक तक ने पूरा भाषण हिंदी में प्रस्तुत किया। बात वहां मौजूद हर छोटे-बड़े के हृदय तक पहुंची। इस घटना ने मेरी धारणा बदल दी। मुझे लगा कि अंग्रेजीदां समझे जाने वाले लोग भी हिंदी पसंद करते हैं और इस भाषा में बोलना चाहते हैं।

लेकिन अक्सर वे बड़े समारोह जहां ऊंचे पदों को सुशोभित करने वाले लोग मौजूद हों हिंदी बोलने से यह सोच कर कतराते हैं कि यह शायद उन्हें पसंद न आए। जीवन प्रवाह में मुझे इस तरह के कई और अनुभव भी हुए। मसलन मैं एक नामी अंग्रेजी स्कूल के प्राचार्य कक्ष में बैठा था। स्वागत कक्ष में अनेक पत्र-पत्रिकाएं मेज पर रखी हुई थी, जिनमें स्कूल की अपनी पत्रिका भी थी। जो थी तो अंग्रेजी में लेकिन उसका नाम था शैशव। इससे भी सुखद आश्चर्य हुआ। क्योंकि पूरी तरह से अंग्रेजी वातावरण से निकलने वाली अंग्रेजी पत्रिका का नाम हिंदी में था। बेशक इसके प्रकाशकों ने हिंदी की ताकत को समझा होगा।

इस घटना से भी मैं गहरे सोच में पड़ गया कि आखिर क्या वजह है कि बड़े-बड़े कारपोरेट दफ्तरों व शॉपिंग मॉलों में भी रोमन लिपि में ही सही लेकिन हिंदी के वाक्य कैच वर्ड के तौर पर लिखे जाते हैं। जैसे.. शादी में अपनों को दें खास उपहार खास हो इस बार आपका त्योहार शुभ नववर्ष शुभ दीपावली हो जाए नवरात्र पर डांडिया वगैरह वगैरह। यही नहीं सामुदायिक भवनों के नाम भी मांगलिक आर्शीवाद, स्वागतम तो बड़े बड़े आधुनिक अस्पतालों का नामकरण स्पंदन, नवजीवन, सेवा सुश्रूषा होना क्या यह साबित नहीं करता कि बोलचाल में हम चाहे जितनी अंग्रेजी झाड़ लें लेकिन हम भारतीय सोचते हिंदी में ही है। क्या इसलिए कि अंग्रेजीदां किस्म के लोग भी जानते हैं कि बाहर से हम चाहे जितना आडंबर कर लें लेकिन हिंदी हमारे हृदय में बसती है।

मुझे लगता है हिंदी की राह में सबसे बड़ी रुकावट वह झिझक है जिसकी वजह से उच्चशिक्षित माहौल में हम हिंदी बोलने से कतराते हैं। जबकि किसी भी वातावरण में अब हिंदी के प्रति दुर्भावना जैसी कोई बात नहीं रह गई है। अपने पेश के चलते मुझे अक्सर आईआईटी जाना पड़ता है। बेशक वहां का माहौल पूरी तरह से अंग्रेजी के रंग में रंगा होता है। लेकिन खास समारोह में जब भी मैंने किसी संस्थान के छात्र या अन्य प्राध्यापकों से हिंदी में बातचीत की तो फिर माहौल बनता चला गया। यह तो हमारी झिझक है जो हम अपनी भाषा में बात करने से कतराते हैं।

आईआईटी के ही एक कार्यक्रम में एक अति विशिष्ट हस्ती मुख्य अतिथि थे। जो दक्षिण भारतीय पृष्ठभूमि के तो थे ही उनकी अंतरराष्ट्रीय ख्याति भी थी। उनके संभाषण से पहले एक हिंदी देशभक्ति गीत बजाया गया तो उन्होंने अपने संभाषण की शुरूआत में ही इस गीत का विशेष रूप से उल्लेख किया। ऐसे में हम कैसे कह सकते हैं कि आज के दौर में किसी को हिंदी से परहेज है या कहीं हिंदी सीखने सिखाने की आवश्यकता है।

अपने पेशे के चलते ही मुझे अनेक नामचीन लोगों के मोबाइल पर फोन करना पड़ता है जिनमें देश के विभिन्न प्रांतों के लोग होते हैं। लेकिन मैने ज्यादातर अहिंदीभाषी विशिष्ट हस्तियों का कॉलर टोन हिंदी में पाया। बेशक कुछ हिंदी भाषियों के मोबाइल पर अहिंदीभाषी गानों की धुन टोन के रूप में सुनने को मिली। भाषाई उदारता और देश की एकता की दृष्टि से इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है। दरअसल हीन ग्रंथि हमारे भीतर है। हम सोचते हैं कि उच्च शिक्षित और पढ़े-लिखे लोगों के बीच मैं यदि भारतीय भाषा में बात करूंगा तो वहां मौजूद लोगों को अजीब लगेगा। लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है। हमें अपनी इस झिझक से पार पाना ही होगा। मुझे याद आता है श्री हरिकोटा में प्रधानमंत्री मोदी जी का हिंदी में दिया गया वह भाषण जिसे वहां मौजूद वैज्ञानिक पूरी तन्मयता से सुनते रहे। फिर भाषाई वैशिष्टय या संकीर्णता को लेकर हम आधारहीन शिकायत क्यों करें। ■

भापस्नान की सरल विधि

विजय कुमार सिंघल

यदि भापस्नान के लिए केबिन या डिब्बे की सुविधा न हो तो आप निम्नलिखित विधि द्वारा अपने घर पर ही भापस्नान ले सकते हैं। इसके लिए निम्नलिखित वस्तुएं चाहिए-

१. एक स्टूल, जो इतना ऊँचा हो कि उस पर बैठकर पैर जमीन पर टिकाये जा सकें। आवश्यक होने पर पैरों के नीचे ईंट रखी जा सकती है। यदि स्टूल जालीदार हो तो बेहतर, नहीं तो साधारण स्टूल से ही काम लिया जा सकता है।

२. भाप बनाने का डिब्बा। यह बाजार में आता है जिसमें पानी भरकर बिजली से भाप बनायी जा सकती है। इस डिब्बे को स्टूल के नीचे इस प्रकार रखना चाहिए कि उसमें से भाप निकले तो सीधे पैरों पर न आये बल्कि सभी ओर फैल जाये। इसके अभाव में गैस वाले चूल्हे पर प्रेशर कुकर रखकर भी भाप बनायी जा सकती है। ऐसी स्थिति में प्रेशर कुकर की सीटी निकालकर उसमें एक पाइप लगा देना चाहिए। पाइप का दूसरा सिरा स्टूल से इस प्रकार बाँध देना चाहिए कि भाप पैरों में न लगे बल्कि पीछे की ओर ही निकले।

३. प्लास्टिक का घेरा। डेढ़ मीटर चौड़ी और तीन मीटर लम्बी प्लास्टिक की एक शीट ले आइए। उसके एक किनारे पर नाड़ा डालने के लिए मोड़कर लगभग दो इंच चौड़ाई में मोटा-मोटा सिल लीजिए। फिर उसको इस तरह सिलकर गोल कर लीजिए जैसे महिलाओं का पेटीकोट होता है। उसमें पर्याप्त लम्बाई का नाड़ा डाल लीजिए। यदि प्लास्टिक न मिले तो ऐसा घेरा मोटे कपड़े जैसे मारकीन या तिरपाल का भी बनाया जा सकता है।

जब भापस्नान लेना हो तो निम्न कार्य करें। कुछ कार्यों में किसी अन्य व्यक्ति की सहायता लेनी पड़ती है।

१. सबसे पहले मल-मूत्र विसर्जन कर आयें।

२. एक गिलास ठंडा पानी पी लें।

३. सब कपड़े उतार कर केवल एक तौलिया लपेट लें।

४. अब स्टूल पर बैठकर प्लास्टिक का घेरा ऊपर से इस प्रकार पहन लें कि स्टूल और पैरों सहित सारा शरीर ढक जाये, केवल सिर बाहर निकला रहे और घेरा जमीन को छूता रहे।

५. अब नाड़े को खींचकर घेरे को गले के चारों ओर थोड़ा सा हल्का टाइट कर दें, जिससे भाप बाहर न निकले और गला भी न घुट जाये।

६. अब भाप चालू कर दें और तौलिया हटा दें। भाप चालू करते ही शरीर जरा सा गर्म होते ही पसीना छोड़ना शुरू कर देगा। भीतर ही भीतर हाथों से शरीर की मालिश करते रहिये।

७. पर्याप्त पसीना आ जाने पर और शरीर पर्याप्त गरम हो जाने पर तौलिया फिर लपेट लें।

८. अब नाड़े को ढीला करके घेरे को उठाकर सिर के ऊपर ले जाकर बन्द कर लें। लगभग एक मिनट तक चेहरे पर भाप लगने दें।

९. भाप बन्द करके घेरा हटा लें और तुरन्त बाथरूम में जाकर ठंडे पानी से शरीर को अच्छी तरह धो लें। कोई साबुन न लगायें, केवल हाथ से मालिश करके शरीर को साफ करें।

१०. स्नान के बाद पौंछकर कपड़े पहन लें। फिर आराम करें। (शेष पृष्ठ २८ पर)

किसी से करता है बातें किसी की सुनता है
वो आदमी है कि यारो कोई फरिश्ता है
मुझे जो चोट लगे आँख उसकी भर आये
कि उसका मेरा अजीबो-गरीब रिश्ता है
जमाना समझे वो गाफिल है नींद में मगर
वो आदमी की हिफ़ाजत के ख्वाब बुनता है
मैं उसके ध्यान में जब डूबने को होता हूँ
तभी वो हौले से
मँझधार में उभरता है
अजीब 'शान्त' सी हरकत
है उसके हाथों में
वो बीच काँटों से
केवल गुलाब चुनता है

-- देवकी नन्दन 'शान्त'

जिसकी हुकूमत थी कभी आसमानों तक
वो इश्क है महदूद जिस्मों की दुकानों तक
चर्चे हैं बहुत जिसके वो बयार तरक्की की
देखें कब आती है गरीबी के ठिकानों तक
वो आयें भी तो कैसे, कोई राह नहीं मिलती
उस पक्की हवेली से इन कच्चे मकानों तक
कहते हैं कि आती है इमदाद बहुत लेकिन
बस पहुंच नहीं पाती हम आम इंसानों तक
ताले हैं जुबानों पर हिम्मत भी नहीं बाकी
कैसे पहुंचे आवाज उन बहरे कानों तक
तुम मरो भूख से वो तो बिरयानी खाएंगे
हाकिम को रंज तो है
पर बस बयानों तक
आवाम के सब्र का बांध
बस टूटने वाला है
गुस्सा आ पहुंचा है
खतरे के निशानों तक

-- भरत मल्होत्रा

हर अजीमत से मेरा जज्ब जवां होता है
देखता हूँ मैं कभी कि दर्द कहाँ होता है
बिन कहे जिसने किये सब संकट नाश
नाम उसका खुदा रहमत है या माँ होता है
हाट जहां बिके जन्नत की टिकट धरती पर
नाम उसका यहाँ धर्मों की दुकां होता है
लोग ऐसे ही नहीं बदनाम किसी को करते
आग लगती है तो हर ओर धुआं होता है
जो भी आया है यहाँ सबकी मिटी हस्तियाँ
जिसने कुछ काम किया उसका निशाँ होता है
आपसी प्यार से ही लोग जुड़े आपस में
बिन मुहब्बत के तो घर बस मकां होता है
जज अदालत भले फटकार लगाए उनको
रहनुमा को किसी से
शर्म कहाँ होता है
अब पढ़ाई हो गई
खत्म सियासत है शुरू
आज के देख ये
हालात गुमां होता है

-- कालीपद 'प्रसाद'

मानता हूँ शख्स वो झूठा नहीं है
पर वो सच्चा है तो क्यों कहता नहीं है
है जहाँ धोखा तो होगा प्यार कैसे
है जहाँ पर प्यार तो धोखा नहीं है
'तेरे जैसे हैं कई'-ये कह दिया था
तेरे जैसा पर कोई दिखता नहीं है
ये तो सच है इसमें गलती है तुम्हारी
तुम हो अपने इसलिए शिकवा नहीं है
है अगर मंजिल तो रस्ता भी मिलेगा
कोशिशों से क्या यहाँ मिलता नहीं है
दौड़ने वाला गिरा जब तो यों बोला-
पाँव टूटा, हौसला टूटा नहीं है

-- डॉ. कमलेश द्विवेदी

रोज किसी की शील टूटती प्रजापती के कमरे में
फिर शराब की बोतल खुलती प्रजापती के कमरे में
गाँव की ताजी चिड़िया भूनके प्लेट में रक्खी जाती है
फिर गिद्धों की दावत चलती प्रजापती के कमरे में
अंदर में अँगरक्षक बैठे बाहर लगे सुरक्षाकर्मी
हवा भी आने से है डरती प्रजापती के कमरे में
बड़े-बड़े नेता और अफसर यहाँ सलाम बजाते हैं
किस्मत बनती और बिगड़ती प्रजापती के कमरे में
घपला और घोटाला वाली भले तिजोरी कहीं रहे
चाभी मगर यहीं पर रहती
प्रजापती के कमरे में
फिर क्या गरज पड़ी रावण
को सीता का वह हरण करे
उसे यहीं हर सुविधा मिलती
प्रजापती के कमरे में

-- डॉ डी.एम. मिश्र

वो मांगता है पता आज हमसे साहिल का
कभी रहा है सबब, जो हमारी मुश्किल का
उठी हैं फिर से घटाएँ, घुमड़ रहा सावन
ये किसकी याद में मौसम बदल गया दिल का
न रौशनी, न कोई रंग है, न आराई
वो घर यही है, मोहब्बत में तेरे बिस्मिल का
किसे गवाह बनाएँगे जब कि जख्मों पर
कोई निशान नहीं है
हमारे कातिल का
न इसकी उससे बुराई,
न तंजो-फिकरा है
तुम्हें भी 'होश' सलीका
नहीं है महफिल का

-- मनोज पाण्डेय 'होश'

आज मेरे संग हुई
जिन्दगी तरंग हुई
गम भी खडे मिले
टिके नहीं जंग हुई
फाकों में भी सूकूं था
भूख मेरी मलंग हुई
देखी अदा जो चांद की
फिर चांदनी पतंग हुई
शब बडी रंगीन थी
और सहर नवरंग हुई
देखकर खुशी तेरी 'जय'
कायनात भी दंग हुई

-- जयकृष्ण चांडक 'जय'

मन से मन भी मिल जाये, तन से तन भी मिल जाये
प्रियतम ने प्रिया से आज मन की बात खोली है
मौसम है आज रंगों का छायी अब खुमारी है
चलो सब एक रंग में हो कि आयी आज होली है
ले के हाथ हाथों में, दिल से दिल मिला लो सब
यारो कब मिले मौका अब छोड़ो ना कि होली है
क्या जीजा हो कि साली हो, देवर हो या भाभी हो
दिखे रंगने में रंगाने में, सभी मशगूल होली है
ना शिकवा अब रहे कोई, ना ही दुश्मनी पनपे
गले अब मिल भी जाओ
सब, आयी आज होली है
प्रियतम क्या प्रिया क्या अब
सभी रंगने को आतुर हैं
चलो हम भी बोलें होली है
तुम भी बोलो होली है

-- मदन मोहन सक्सेना

मन वचन औ कर्म पर विश्वास रख
तन की बगिया में सदा मधुमास रख
जीत जायेगा जिन्दगी की जंग तू
रंजिश ना रख मुहब्बत पास रख
तूफां आकर के चला जायेगा यूँ
हिम्मत की पतवार अपने पास रख
तन्हाइयों में भी मुस्कराना सीख ले
काबू में मन इच्छाओं को दास रख
'व्यग्र' जीवन सिर्फ जीने के लिए
पेशानी ना पकड़ तू उल्लास रख

-- विश्वम्भर पाण्डेय 'व्यग्र'

होली पर रंग लगाने को दिल चाहता है
थोड़ी भांग खा लेने को दिल चाहता है
अभी तो बचपन की मस्ती गई नहीं है
सभी को रंग लगाने को दिल चाहता है
जो खुशियां जमाने से गुम हो गई हैं
फिर हँसने हंसाने को दिल चाहता है
सभी दोस्त यार सभी भाभियों के संग
फिर वही रंग लगाने को दिल चाहता है
बहुत गिले शिकवे हैं जमाने में 'हृदय'
फिर सब कुछ भुलाने को दिल चाहता है
कहां आजादी कहां नटखट वो बचपन
कहां प्रेम वो जो पाने को दिल चाहता है
समटते हुए सभी के पुराने प्यारे रिश्ते
फिर से रंगीन बनाने को दिल चाहता है

-- हृदय जौनपुरी

हो गया क्यों अजनबी हर आदमी
सो गया क्यों मजहबी हर आदमी
वह पढ़ा है वह गुना है देश में
नहीं बना क्यों मकतबी हर आदमी
खूब धन दौलत कमा के बावला
बन गया क्यों मतलबी हर आदमी
आँख हैं आकाश पर अब जीत के
हो गया क्यों मनसबी हर आदमी
नाम 'आकुल' का जुड़ा है वतन से
बस जुड़े अब ए नबी हर आदमी

-- डॉ गोपाल कृष्ण भट्ट 'आकुल'

(पहली किस्त)

मेवे वाला

मनोज कुमार शिव

विजयपुर किसी जन्नत से कम नहीं था। पहाड़ पर बसा एक बेहद खुबसूरत गाँव। उसके ऊपर कुछ था तो केवल नीला आसमान और तलहटी पर बहती थी बलखाती सतलुज। सर्दियों में जब विजयपुर हिम की चादर ओढ़ता तो आभा देखते ही बनती थी। देवदारू-बान का घना जंगल इसकी खुबसूरती को चार चाँद लगाते थे। नवंबर का महीना शुरू हो चुका था। हवा में हल्की-हल्की ठंडक तैरने लगी थी। यशोधा गौशाला में काम निपटाकर रसोईघर में व्यस्त थी। गाय के गोबर से लिपा हुआ रसोईघर का फर्श, फर्श पर मिट्टी व गोबर के मिश्रण से की हुई बारिक कलाकारी यशोधा की दक्षता को दर्शा रही थी। चूल्हे के पास बिछाई हुई खजूर की चट्टाई, एक ओर खजूर के बिन्ने पर बैठी यशोधा, लकड़ी की पुरात में आधा गीला-आधा सूखा मक्की का आटा, चूल्हे में बिहूल की जलती हुई लकड़ियां, अगले आंवदे पर रखा तवा, तवे पर अधकच्ची रोटी, पिछले आंवदे पर तांबिया जिसमें पानी गर्म हो रहा था, दूसरे आंवदे पर भाडू में बन रही दाल, यशोधा ने तैंथू से अंगारों को आगे खींचकर तवे वाली रोटी को नीचे सेंका, रोटी एकदम फूल गई। बीच-बीच में यशोधा एक भजन की पंक्तियां गुनगुना रही थी- रघुपति राघव राजा राम। अगली रोटी बनाने के लिए आटे की लोई बनाने ही लगी थी कि 'अम्मा, ओ अम्मा' बाहर से किसी ने आवाज दी। अम्मा का संबोधन पाकर यशोधा चौंक गई। जहन में सबसे पहला ख्याल आया अपने बेटे मंगलू का। मंगलू, उसके कलेजे का टुकड़ा। उसे लगा जैसे आंगन में खड़ा होकर उसी को पुकार रहा हो। खुद को आश्वस्त करने के लिए यशोधा ने बैठे-बैठे ही कहा- 'कौण है ओ बाहरे?'

रोशनदान से झांककर देखा तो उसका मंगलू नहीं बल्कि १३-१४ वर्ष का एक लड़का, कंधे पर झोला लटकाए खड़ा था। 'कौन है बे तू? क्या काम है तुझे?' यशोधा ने पूछा। 'अम्मा! मेरा नाम बिरजू है, मैं मेवा बेचने वाला हूं!' 'मुझे नहीं चाहिए मेवा।' 'अरे नहीं अम्मा! मैं आपको मेवा बेचने नहीं आया। मुझे तो रहने के लिए एक कमरा चाहिए। पिछले घर में पता किया तो उन्होंने कहा कि आपके यहां कमरा खाली है। मैं मुंह मांगा किराया देने को भी तैयार हूं, आप दे दोगी ना मुझे कमरा अम्मा? मैंने हर जगह पता कर लिया। अब आपसे ही अंतिम उम्मीद है, सर्दियां खत्म होते ही कमरा छोड़ दूंगा, आप दे दोगी ना मुझे कमरा अम्मा?'

यशोधा ने एकटक नजर से उस बातूनी मगर प्यारे से लड़के को देखा। एकबार मन करा कि नहीं देगी कमरा। पता नहीं कौन है? कहां से आया है? कैसे रहेगा? क्यों किसी को घर में घुसा ले? पर फिर सोचा कि आज अगर उसका मंगलू होता तो बिल्कुल उसी के जैसा होता, आखिर एक कमरा ही तो है। उसको भी एक साथ मिल जाएगा, सर्दियों तक की ही तो बात है, चार पैसों की आमदनी भी होगी।

'अम्मा! बोलो!' मंगलू ने फिर से कहा। 'रुक जरा मैं नीचे आती हूं!' यशोधा ने आटे से सने हाथों को धोया और आंगन में चली गई। पास जाकर जब देखा तो उसमें अपने मंगलू का अक्स पाया, वैसी ही बड़ी-बड़ी आंखें, ऊँचा लंबा कद मजबूत शरीर और बातूनी भी पूरा मंगलू जैसा ही, एक पल को तो लगा जैसे मंगलू ही वापस आ गया हो, शायद कुलदेवता ने उसकी फरियाद सुन ली हो। उसे बैठने के लिए एक खजूर का बिन्ना दिया 'अब बता कहां से आया है तू? कितने लोग होंगे तुम यहां रहने वाले? '

'अम्मा मैं अकेला ही हूं, बाकी साथियों ने पास के गांव में अपने लिए कमरा ले लिया है, हम कुल पांच लोग हैं, मेवा बेचने का काम करते हैं। सर्दियों में पहाड़ की तरफ निकल पड़ते हैं और सर्दियाँ खत्म होते ही वापस अपने घर की ओर!'

'और तेरे मां-बाप?' यधोधा ने पूछा।

'मां बाप तो बचपन में ही छोड़ गए। दूर के एक रिश्तेदार ने जैसे-तैसे पाल पोसकर बड़ा किया, अब तो वह भी नहीं रहे, बस टोली के लोग ही अपने हैं,पर मैं एकदम शरीफ लड़का हूं, ना बीड़ी पीता हूं ना मदिरा ना भांग न सूल्फा, आप दोगी ना कमरा अम्मा!'

'और तेरे घर कहां है?'

'घर तो मेरे उत्तराखंड में है केदारनाथ धाम का वासी हूं मैं, जय भोलेनाथ!' बिरजू ने जोर से जयकारा लगाया। उत्तराखंड का नाम सुनते ही यशोधा का दर्द जाग गया, मानो भरते घावों को फिर से किसी ने कुरेद दिया हो। दरअसल, कुछ वर्ष पहले उत्तराखंड में हुई भीषण त्रासदी ने यशोधा के पति और बेटे मंगलू को उससे छीन लिया था। कई महीनों तक तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ कि ऐसा कुछ उसके साथ घट चुका है।

बेचारी एक-दो बार उनकी तलाश में उत्तराखंड भी जाकर आई। वहाँ अनजान लोगों को उनकी तस्वीर दिखाती और पूछती कि देखा है क्या इनको, मगर सबका एक ही जवाब होता ना, नहीं देखा, बह चुकी सड़कें, जड़ों समेत उखड़े हुए पेड़, बड़ी-बड़ी चट्टानें उस त्रासदी की भयानक तस्वीर पेश कर रहे थे जिन्हें देखकर किसी की भी रूह सिहर उठती। यशोधा ने पिछले महीने ही अपनी जिंदगी के पचास बसंत देखे। पति हरिया और बेटे मंगलू की गैरमौजूदगी ने उसे हिलाकर रख दिया था। मगर फिर भी यशोधा ने खुद को काफी हद तक संभाल लिया था। विजयपुर गांव में उसकी ७५ बीघा जमीन थी, एक बड़ा घर, एक गाय, दो भेड़ें भी पाल रखी थी। खुद को काम में इतना व्यस्त रखती थी ताकि काले अतीत की छाया उसके वर्तमान और भविष्य को प्रभावित ना कर सके।

गांव वाले उसकी हिम्मत और जिंदादिली की दाद देते थे। इतनी जमीन में खेती हो रही थी। उजड़ नहीं डाली थी। गांव वालों के बैल लेकर, किसी एक आदमी को दिहाड़ी पर लगाकर बीज बिजती थी। कुछ खेतों में आलू लगाए थे, कुछ में मक्की बीज रखी थी, दो-तीन खेतों में धान रोपे थे। अपने खेतों, अपनी फसलों को देखकर उसके चेहरे पर मुस्कान अनायास ही तैरने लगती थी। उसे लगता कि जैसे उसकी पति हरिया आज भी इन्हीं खेतों में बैलों की जोड़ी को हांक रहा है और उसका बेटा मंगलू पिता के पीछे पीछे चलकर फाट से ढ़ीली हुई मिट्टी में बीज डाल रहा है। ये खेत उसके खुशहाल अतीत की यादों को समेटे हुए थे। इन्हें वह बंजर हरगिज नहीं डालना चाहती थी। मगर कुछ धूर्त लोगों की उसकी जमीन पर बुरी नजर थी जो सोचते थे कि कब जैसे मौका मिले और उसकी सारी जमीन हड़प ली जाए।

'अम्मा, ओ अम्मा!' अपने सुनहरे अतीत की यादों में खोयी यशोधा को मंगलू के शब्दों ने वापिस भविष्य में लौटा दिया था, आंखों से आंसू निकलने ही लगे थे कि उसने अपने दुपट्टे से पोंछ लिए। 'तो कमरा मिल जाएगा ना?' बिरजू ने उत्सुकता से पूछा।

'बड़ा बातूनी है रे तू, चपड़-चपड़ बोलता ही रहता है, कमरा तो है मेरे पास मगर कुछ बातों का ध्यान रखना है तुझे, समझा, सफाई चाहिए मुझे, गंदगी मुझे जरा भी पसंद नहीं, झाडू लगाना पड़ेगा हर रोज, दूसरा, ऊंची आवाज में ना तो बोलना, ना ही फिल्मी गाने चलाने, किराया महीने की पहली तारीख को देना होगा। गांव में पहले भी कुछ लोग आए थे। पंद्रह दिन जमुना के घर रहे और एक दिन रातोरात भाग गए। सारा सामान भी ले गए कलमुँहे, कोई किराया भाड़ा भी नहीं दिया।' 'हा, हा, हा!' बिरजू हंस दिया- 'मगर मैं ऐसा बिल्कुल नहीं हूँ अम्मा, मुझे सफाई पसंद है, और मैं किराया भी समय पर दे दिया करूंगा।' बिरजू ने मुस्कुराते हुए कहा। बिरजू को एहसास हो गया था कि उसे कमरा मिल गया है। यशोधा को कल सुबह सामान सहित आने की बात कहकर वह चला गया।

यशोधा सोचने लगी थी कि क्या उसने सही भी किया, है तो अजनबी और आजकल तो जमाना वैसे ही खराब है, लूटपाट, चोरी-डकैती तो बहुत ज्यादा होने लगी है पिछले साल भी गांव में चोरी हुई थी, लक्ष्मी के जेवर गायब थे। कुल देवता के मंदिर में दान पात्र टूटा मिला था। वह तो जरूर उन प्रवासियों का काम होगा जो मनसाराम के घर लैंटर डालने आए थे। पर इस लड़के में जैसे शराफत थी भोलापन था और था भी बिल्कुल उसके मंगलू जैसा। यशोधा ख्यालों के घने जंगल में खो सी गई।

(अगले अंक में जारी)

पृष्ठ २२ की पहेलियों के उत्तर-

(१) दर्पण (२) घड़ी (३) काई (४) बिजली का सॉकेट (५) स्विचबोर्ड में लगा इंडीकेटर

मेरे मन के मीत हो तुम/मेरे आँखों की तस्वीर हो तुम
उम्मीदों का दीप जलाए/ख्वाबों की तकदीर हो तुम
मन-मन्दिर की पूजा हो तुम/प्रार्थना का स्वीकार हो तुम
जो मिट न सके कभी यादों से/वो गहरी छाप हो तुम
शरीर से जो कभी जुदा न होता
उस जीवन की परछाई हो तुम
इस तन की बुझती प्यास हो तुम
जज्बातों के सुखद एहसास हो तुम
जो शब्दों से बयाँ न हो उन
अनकही बातों की आवाज हो तुम
ओ सुन लो मीत मेरे/ये जीवन तुमसे ही शुरू
और तुम पर ही खत्म है...

-- बबली सिन्हा

मुमकिन है यह उम्र/रेगिस्तान में ही चुक जाए
कोई न मिले उस जैसा/जो मेरी हथेलियों पर
चमकते सितारों वाला/आसमान उतार दे!
यह भी मुमकिन है/एक और रेगिस्तान
सदियों-सदियों से/बाँह पसारे मेरे लिए बैठा हो
जिसकी हठीली जमीन पर/मैं खुशबू के ढाई बोल उगा दूँ
कुछ भी हो सकता है/अनदेखा अनचाहा अनकहा अनसुना
या यह भी कि तमाम जमाने के सामने
धड़धड़ाता हुआ कँटीला मौसम आए
और मेरे पेशानी से लिपट जाए!
यह भी तो मुमकिन है
मैं रेगिस्तान से याराना कर लूँ
शबो सहर उसके नाम गुनगुनाऊँ
साथ जीने मरने की कस्में खाऊँ
और एक दूसरे के माथे पर
अपने लहू से जिन्दगी लिख दूँ!

-- डॉ जेन्नी शबनम

बहुत कुछ कहना होता है तुमसे
पर रह जाती हैं/कुछ अनकही बातें/जिसे जुबाँ पर
आने नहीं देती मैं/कि कहीं, मेरे आँसू मेरी बातें
तुम्हारे फर्ज के आड़े/ना आ जाए
क्यूँकि देशधर्म तो सर्वोपरि है
पर जब कभी पाओ
फुर्सत के पल/तो बैठना मेरे संग
कुछ सुनना मेरी/कुछ सुनाना अपनी
और समझना मेरी
वो कुछ अनकही बातें

-- रीना मौर्य 'मुस्कान'

बाज के चंगुल में फँसी चिड़िया को
सब व्यर्थ/मृत्यु का झंझावात नजर आया
किन्तु क्या है फड़फड़ाने के सिवा ?
मन विचलित उपाय में लिप्त
धीरे से चिड़िया ने/बाज के पंजे पर
चौंच का नुकीला प्रहार किया
बाज हताश ! छोड़ चिड़िया उड़ उठा
लंबी साँसे बारम्बार निकाल
जंगल की ओर वीराने में...

-- अशोक बाबू माहौर

जाने कैसी फितरत है/खुद से लड़ने की जुगत है
है परेशान सी है/जिन्दगी की चाह भी खत्म है
संवेदनाओं के अहसास भी/झूठे पड़े अपने भी
है स्व से मैं की/लड़ाई का मंजर
खो रहा आंगन का चैन
क्यों जगती है/आस हर दिन नई
गूंगे से हैं संवेदनाओं के स्वर
पर बंजर जमीं पर शायद
रिश्तों के फूल नहीं खिला करते!
अब अहसासों की खाद भी फूलन से भरी है
दिन के सपनों सी है ये खुर्द सी राहें...!

-- अल्पना हर्ष

प्रज्वलित कर मन की वेदी/कर्मों की ले समिधा बना
कुछ धृत अश्रु चढ़ा तभी/एक हवन कुंड खुद में बना
पत्थर पत्थर भगवान है/इंसान अब पत्थर बना
राम का नाम जपता/पाप से है मन सना
खुद को ही छलता रहा/तन मन से है भोगी बना
खुद को नहीं पहचानता/बातें रहा कितनी बना
छल कपट और पाप से/बहुमूल्य जीवन दिया गँवा
पूछता फिरता गली गली/भगवान बोलो है कहाँ ??
जल जाने दो प्रमाद सब/उन्माद ! प्रण ऐसा बना
खुद की बेदी पे खुदी को
आज तू समिधा बना
महक जायेगा तन मन
मन को फिर मंदिर बना
हृदय दीपक जल उठा
अंतर्मन ले इतना बना

-- अंशु प्रधान

आँखों में समन्दर और लबों पर तिश्नगी है,
जैसी भी है यार, बड़ी हसीं जिंदगी है!
एक एक पत्ता गिरेगा इस शाख से,
जल्द ही शजर शर्माना बन्द कर देगा!
तारीख निकलती जा रही है मियाद-ए-इश्क की
फिर महबूब भी मुस्कुराना बन्द कर देगा!
ये हालात एक से नहीं रहते, कोई समझता क्यों नहीं
आज दिलकश है, कल दिल लुभाना बन्द कर देगा!
सब कुछ कह दिया और कुछ कह भी न पाए,
डूब भी सके नहीं, न ही बह पाए,
अल्फाज कम पड़ गए या प्यार ज्यादा था!
या उनसे मुलाकात का
ये नया बहाना था
अब देखते हैं इश्क का
अंजाम क्या होगा,
नाम तो है नहीं,
'दवे' बदनाम क्या होगा!

-- विनोद दवे

दोहा

होली फागुन पर्व है, खेलो रंग गुलाल।
हार जीत है जिंदगी, रखना दूर मलाल।।

-- कालीपद 'प्रसाद'

बरसों नहीं, जिन्हें जीया मैंने जन्मों
उन ख्वाबों के कत्ल में मुझे तू नजर आया
रेत के महल जैसे, ख्वाब मेरे बिखरे,
उस साजिश के पीछे मुझे तू नजर आया
उठी थी जब डोली, वो अर्थी थी मेरी,
अरमानों पे हँसता मुझे तू नजर आया
मुकद्दर का था खेला, जिसे मैंने झेला
अपनी हर रुसवाई के पीछे
मुझे तू नजर आया...

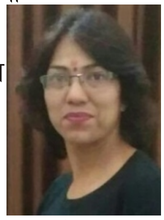

-- अंजु गुप्ता

अधूरे ज्ञान पे तुझे अभिमान कैसा?
अधंकार मिटाती है चादँनी
फिर, सूरज को खुद पे गुमान कैसा?
बिक जाए कुछ टुकडों में
लोगों का वो ईमान कैसा?
अज्ञानी जल जाते मेरे ज्ञान से
'रचना' तेरे नाम का ये असर कैसा?
पत्थरों में मिट्टी न रहे वो इंसान ही कैसा?
घमंड में खो जाता सब/वक्त गुजरने पे पश्चाताप कैसा?
ऐसे ज्ञान से अज्ञानी ही अच्छे
अहंकार भर दे जो वो ज्ञान कैसा?

-- रीना सिंह गहलौत 'रचना'

देखो आजकल बड़े ही इतराते हैं लोग
जब जाकर शहर में बस जाते हैं लोग
गाँव का नाम बताने में भी शर्माते हैं
खुद को शहर वाला ही बताते हैं लोग
गाँव की अपनी हवेली छोटी लगती है
शहर में सौ गज में महल बनाते हैं लोग
गाँव की आब ओ हवा रास नहीं आती
धूल बहुत है कहकर नाक चढ़ाते हैं लोग
पर शहर में तरसते हैं ताजी हवा के लिए
इसीलिये पार्कों के चक्कर लगाते हैं लोग
पड़ोसी ही पड़ोसी को नहीं जानता शहर में
पर गाँव में खानदानों के नाम गिनाते हैं लोग
इन शहरों का पेट भरते हैं ये गाँव आज भी
फिर भी क्यों वापिस नहीं लौट आते हैं लोग
देखो 'सुलक्षणा' स्वर्ग सा सुंदर है अपना गाँव
फिर क्यों शहर का मोह छोड़ नहीं पाते हैं लोग

-- डॉ सुलक्षणा अहलावत

कविता मात्र एक रचना नहीं
एक अक्स होता है किसी दिल का
मेल होता है भावों का
उमड़कर बादलों की तरह आते हैं जो
बरसते हैं फिर स्याही के रूप में
लेते हैं आकार अक्षरों की बूंद बनकर
खत्म चाहे हो जाए यह कविता रूपी मेघा
छोड़ जाती है पर इक प्रभाव
जो छू ले कोना किसी और के दिल का
यही होती है एक कविता!

-- डॉ सोनिया गुप्ता

इच्छा

वह उनकी इकलौती पुत्री थी. दोनों माता-पिता अपने-अपने हिसाब से वर चुनना चाहते थे. माता ने कहा, 'यह लड़का ठीक रहेगा. इसकी सरकारी नौकरी है. अपनी लड़की खुश रहेगी.' पिता ने कहा, 'नहीं-नहीं, यह ठीक नहीं रहेगा. मेरे हाथ में जो फोटो है, यह अच्छा व्यापारी है. खूब पैसे कमाता है. लड़की सुखी रहेगी.' लड़की पास के कमरे में किताब पढ़ रही थी. बहस सुनकर उसका ध्यान भंग हो गया. माता कह रही थी, 'मुझे अपनी लड़की के लिए आपके जैसा पति नहीं चाहिए.' पिता कह रहे थे, 'नहीं-नहीं. जिस लड़के को तुम पसंद कर रही हो, वह हमारी लड़की के लिए उचित नहीं है.' माता ने विरोध किया, 'मुझे अपनी लड़की के भविष्य की चिंता है. उसे तुम जैसा व्यापारी पति नहीं चाहिए जो अपनी पत्नी के सुख-दुख में काम ना आ सके. रात दिन व्यापार में ही लगा रहे.'

यह सुनकर लड़की के माथे पर त्यौरियां चढ़ गईं. ये बिना बात आपस में बहस क्यों कर रहे हैं. इसलिए वह तेजी से कमरे में आकर बोली, 'कभी आपने मुझसे पूछा है कि मैं क्या बनना चाहती हूं?' दोनों चकित रह गए. एक साथ लड़की का मुंह तांकने लगे. मानो, पूछ रहे हो, 'आखिर तुम क्या चाहती हो?'

लड़की ने तुरंत कहा, 'मेरा लक्ष्य शादी करना नहीं है.' और उसने अपने हाथ में पकड़ी हुई भगिनी निवेदिता की जीवनी उनके सामने धीरे से रख दी.

-- ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

जांच जारी है

राज दरबार में एक-एक करके फरियादी अपनी शिकायत कर रहे थे। पहले व्यक्ति ने आकर प्रणाम किया और अपनी व्यथा कहने लगा- 'मेरी जमीन पर दबंगों ने जबरन कब्जा कर लिया है। मैंने शिकायत की थी, पर कुछ हुआ नहीं।'

'जांच जारी है। दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा।'

दूसरा एक ग्रामीण था। डरते हुए बोला- 'हमें रोजगार देने की जो योजना बनी थी उसमें बहुत धांधली हो रही है हूजूर। कोई सुनवाई नहीं है।'

'जांच जारी है। दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा।'

इसके बाद एक मजबूर बाप आया। कुछ ना कर पाने की लाचारी चेहरे पर साफ झलक रही थी- 'मेरी बच्ची को रसूखदार लोगों ने अगवा करके...' कहते हुए वह रो पड़ा। आस पास की आँखें भी नम हो गईं।

'जांच जारी है। दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा।'

सामने सिंहासन पर एक तोता बैठा था।

-- आशीष कुमार त्रिवेदी

ईमानदारी

सोहनलाल अपनी दुकान पर एक ग्राहक को कुछ सामान दे रहे थे। उसे सामान देकर वह रमेश की तरफ पलटे और उससे पूछकर सामान देने लगे कि तभी उनकी नजर सामने काउंटर पर पड़े एक पर्स पर पड़ी। हाथ का सामान नीचे रखकर उन्होंने पर्स उठाया। रमेश भी पर्स से अनजान था। सोहनलाल ने पर्स खोलकर देखा। पर्स के अन्दर वाले खाने में पांच सौ के कुछ नोट और ऊपर कई बैंकों के क्रेडिट कार्ड और कुछ अन्य कागजात रखे हुए थे। पैन कार्ड पर छपे फोटो से ज्ञात हुआ कि यह तो उसी ग्राहक का था जो अभी अभी सामान लेकर यहाँ से गया था।

एक क्षण का भी विलम्ब किये बिना सोहनलाल उस पर्स को हाथ में लिए अपनी स्कूटर की तरफ बढ़ गए। स्कूटर शुरू करते हुए रमेश से बोले 'बस दो मिनट में आया। अभी वह आदमी ज्यादा दूर नहीं गया होगा। पैदल ही जा रहा होगा। नजदीक ही मिल जायेगा। पर्स उसे देकर आता हूँ।' और जवाब की प्रतीक्षा किये बिना स्कूटर पर बैठकर उस दिशा में स्कूटर दौड़ा दिया।

लगभग पांच मिनट भी नहीं बीते होंगे कि सोहनलाल वापस आ गए। इस बार उनके चेहरे पर संतोष झलक रहा था और वह और चुस्ती से रमेश को सामान देने लगे। रमेश से रहा नहीं गया। उसने सोहनलाल से पूछ ही लिया 'सेठ जी! आपने इतनी मेहनत करके पर्स उसे पहुँचाया। इसकी क्या जरूरत थी? वह खुद ही आता ढूंढ़ता हुआ।'

सोहनलाल जी के अधरों पर मुस्कान तैर गयी। बोले 'बेटा! मैं अपने स्वार्थवश उसके पीछे उसका पर्स उसे वापस देने गया था। पर्स तो तलाश करता हुआ वह कल भी आकर मेरे पास से ले जाता। लेकिन तब तक उसे कितनी परेशानी होती इसका अंदाजा तुम्हें है? और इतनी परेशानी के बाद जब वह कल मेरे यहाँ आकर पर्स पा जाता तब उसके मन में मेरे लिए क्या छवि बनती? किसी की परेशानियों से बेमतलब एक लापरवाह दुकानदार की और मैं यही नहीं चाहता था। समय पर उसे पर्स वापस देकर मैंने उस पर कोई अहसान नहीं किया है। मैंने अपनी छवि को दागदार होने से बचाने के

लिए यह किया है क्योंकि व्यवसाय में हम दुकानदारों की जमा पूंजी ही होती है- ग्राहकों का विश्वास और मुझे खुशी है कि मैंने अपनी जमा पूंजी बचा ली है।'

-- राजकुमार कांदु

सूची पत्र

इस एकांत कक्ष में निर्णायक मंडल के जज और चार सदस्यों में मीटिंग चल रही थी. आज यहाँ दो महीने पहले घोषित 'भारतीय संस्कृति बचाओ' विषय पर राष्ट्र-स्तरीय काव्य प्रतियोगिता का अंतिम निर्णय होना था. सदस्यों ने पूरे देश से आई हुई प्रविष्टियों का गहन अध्ययन करके उत्कृष्ट रचनाओं के रचनाकारों के नाम सहित सूची-पत्र तैयार कर लिये थे. सबने अपनी-अपनी पसंद के अनुसार रचनाओं को ॉड्र में अंक दिए थे. अब केवल पाँच सर्वोत्कृष्ट रचनाओं का चयन होना था. जिनके रचनाकारों को एक विशेष साहित्यिक समारोह में नगद पुरस्कार से सम्मानित किया जाना था.

अचानक जज साहब ने एक पुर्जा अपने बैग से निकालकर सामने टेबल पर फैला दिया और सदस्यों से कहा- 'एक बार अच्छी तरह सूची का निरीक्षण करके बताइये कि इन सदस्यों का नाम आपकी बनाई हुई सूची में है क्या, अगर है तो उनकी क्या पोजीशन है?'

चारों सदस्य सूची पर निगाह दौड़ाने लगे.

'इसमें से तो एक भी नाम हमारी सूची में नहीं है सर! लेकिन...' कहते हुए एक सदस्य ने सवालिया नजरों से जज साहब की तरफ देखा.

'है तो गंभीर बात, लेकिन मजबूरी है। रात को ही मंत्रालय से काल किया गया है कि पुरस्कार इन्हीं प्रतिभागियों को इसी क्रम में मिलना चाहिए. तो आप लोग अपनी-अपनी सूची में ये नाम, रचनाओं के नाम सहित शामिल करके इसी क्रम से सर्वाधिक अंक देकर सूची पर अपने-अपने हस्ताक्षर करके मुझे दे दीजिये ताकि मैं फाइनल एक्शन ले सकूँ.'

तुरंत कंप्यूटर खटखटाने लगे और नए नामों की रचनाओं को खोजकर सामने लाया गया.

'देखिये सर, इन सबकी कविताएँ कितनी स्तरहीन हैं? इस समय हम निर्णायक के महत्वपूर्ण पद पर हैं, यह तो सरासर अंधेर है सर!' एक सदस्य ने डरते-डरते कहा.

'आप इस बात की फिक्र मत कीजिये, मंत्रालय से जुड़ते ही रचनाओं का स्तर कई गुना बढ़ गया है.'

'मगर सर, क्या यह होनहार प्रतिभाओं के साथ अन्याय और भारत की गौरवशाली संस्कृति का अपमान न होगा? क्या ऐसी प्रतियोगिताओं से नई पीढ़ी का विशवास नहीं उठ जाएगा? मैं सम्बंधित उच्चाधिकारियों से फरियाद करूँगा.'

'किस-किस के द्वार खटखटाएँगे बन्धु आप? किस-किस बात की चिंता करेंगे? अच्छा है, अपने

चिंतन के द्वार बंद करके आप सब चुपचाप सूची पत्र पर अपनी सहमति की मोहर लगा दीजिये.' कहते हुए जज साहब उठकर खड़े हो गए.

-- कल्पना रामानी

जनता ने एलान सुनाया यूपी के दरबारों को
नहीं चुनेंगे लोकतंत्र के हैवानों हत्यारों को
नहीं चुनेंगे जाति वर्ग का जाल बिछाने वालों को
नहीं चुनेंगे अपना ही परिवार बढ़ाने वालों को
नहीं चुनेंगे मजहब वाला जहर बांटने वालों को
नहीं चुनेंगे गौ माता के शीश काटने वालों को
नहीं चुनेंगे कैराना पर मौन धारने वालों को
नहीं चुनेंगे संतों को बेखौफ मारने वालों को
नहीं चुनेंगे नौकरियों में फर्जी भर्ती वालों को
नहीं चुनेंगे लालच वाली गठबंधन की चालों को
नहीं चुनेंगे चोरों से समझौता करने वालों को
दीवाली पर अफ्तारों का न्योता करने वालों को
नहीं चुनेंगे दहशतगर्दों के पापी हमदर्दों को
नहीं चुनेंगे सिंह रूप में छुपे हुए नामर्दों को
यूपी ना बंगाल बनेगा, आस जगा दी जनता में
छप्पन इंची सीने पर ही, मुहर लगा दी जनता ने
उनके चेहरे देखो तो जो अपना झंडा ताने थे
तीनों के तीनों मुस्लिम वोटों के ही दीवाने थे
सोते-जगते मुस्लिम मुस्लिम जो चिल्लाने वाले थे
राम धनुष को छोड़, गजनबी की तलवार संभाले थे
बारह बजते ही दिन में भी रात दिखा दी यूपी ने
पप्पू टीपू को उनकी औकात दिखा दी यूपी ने
जो परिवार सिर्फ सैफई के इर्द गिर्द ही नाचा है
ये चुनाव उनके गालों पर कसके एक तमाचा है
कार्ड दलित-मुस्लिम वाले की जुगत नहीं लग सकती है
माया ठगिनी अब जनता को और नहीं ठग सकती है
लड़कों ने गलती कर डाली, जनता ने इन्साफ किया
अवध, बिरज, बुंदेलखंड में आज सूपड़ा साफ किया
मिला आज बहुमत प्रचंड तो साफ नजर में आया है
गुंडों की छाती पर अबकी केसरिया लहराया है
जिनको तीन तलाक था प्यारा उनका सपना तोड़ दिया
जनता ने उनको ही तीन तलाक बोलकर छोड़ दिया
लगता है इस मुद्दे ने मतदान में रंग जमाया है
सलमा, जीनत ने भी शायद कमल का बटन दबाया है
अब चलने दो लहर क्रांति की, परिवर्तन को आने दो
यूपी में सबके विकास की गंगा को बह जाने दो
जनता उन्नति खोज रही है, मोदी के जयकारे में
सारी यूपी झूम रही है जय श्री राम के नारे में

-- कवि गौरव चौहान

दोहे

भली लगे शीतल हवा, मौसम के प्रतिमान।
अधरों पर पलने लगा, ढाई आखर गान।।
करते मंगलकामना, आकर रंग-अबीर।
वे भी चंचल हो गये, जो थे नित गम्भीर।।
कायम रह पाये नहीं, अनुशासन के बंध।
अभिसारों ने रच दिये, नये-नये अनुबंध।।
फागुन की अठखेलियां, नयनों की है मार।
बदला-बदला लग रहा, देखो यह संसार।।

-- प्रो. शरद नारायण खरे

आयो मदन गोपाल रंग ले होली में
नाचत दे दे ताल, गोरिया होली में
रंगो के रसिया के रस की रार मची है
पीके भंग,करत हुड़दंग गोरी से आँख लड़ी है
मल-मल रंगते गाल गोरिया होली में
नीला, पीला, लाल गोरिया होली में
कामदेव ने रतिकन्या पर बाण चलाए
सोई जगी उमंग, अंग-अंग उमसाए
मर्यादा की टूटी ढाल गोरिया होली में
यौवन है बेहाल गोरिया होली में
लेके हाथ गुलाल करत सखियों से ठिठोली
गली-गली में ढूंढत हैं वृषभानु किशोरी
छेडत सबहिं गोपाल गोरिया होली में
हो जा मालामाल गोरिया होली में

-- डॉ रमा द्विवेदी

मन उड़ता था वनपाखी बनकर
हवा, पेड़, फूल-पत्तों से, बातें करता था जमकर
रोज सवेरे उठकर माँ से कहता था हंसकर
तू भी तो उड़ वनपाखी बनकर
मन उड़ता था वनपाखी बनकर
चूल्हे-चौके की अनबन में, करती हो क्यूं झगड़ा दिनभर
छौड़ सभी की चिंता, माँ तू जी ले तू भी जी भरकर
तू भी तो उड़ वनपाखी बनकर
मन उड़ता था वनपाखी बनकर
हो गई इक दिन कौख पराई ले गया कोई साथी बनकर
निकला वो तो बहेलिया आया था जो साथी बनकर
तोड़ दिए सब मन के पांखी
उड़ गया मन वनपाखी बनकर
अब सोचूं 'चंद्रेश' क्यूं जलती थी
माँ दीये-सी बाती बनकर
रह गया गम साथी बनकर
मन उड़ता था वनपाखी बनकर

-- चन्द्रकांता सिवाल 'चन्द्रेश'

प्रीत की पोथियाँ बाँचते-बाँचते
झुक गयी है कमर, ढल गयी है उमर
फासलों की फसल काटते-काटते
मन है चिरयुवा तन शिथिल पड़ रहा
बूढ़ा बरगद अभी, जंग को लड़ रहा
सुख की सौगात को बाँटते-बाँटते
नेह की आस में, बातियाँ जल रहीं
वक्त आया बुरा, आँधियाँ चल रहीं
धुन्ध को, धूल को छाँटते-छाँटते
झूठ की रेल है, सत्यता है कहाँ?
नौनिहालों में अब, सभ्यता है कहाँ?
ज्ञान की गन्ध को बाँटते-बाँटते
ख्वाब का नगमगी, 'रूप' है अब कहाँ?
प्यार की गुनगुनी, धूप है अब कहाँ?
खाई अलगाव की पाटते-पाटते

-- डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

चलो न फिर से जीवन सीधा-सादा कर लें
कथनी, करनी, सोच एक हों, वादा कर लें
थोड़ा खायें, बहुत हँसें हम, हवा-धूप में घूमें
रोज ढेर सा पानी पीयें, नाचें, गायें, झूमें
स्वस्थ रहेंगे, दिल में आज इरादा कर लें
चलो न फिर से जीवन सीधा-सादा कर लें
रहे फेसबुक, व्हाट्स-एप पर अब कण्ट्रोल हमारा
घर की जिम्मेदारी हो अब पहला गोल हमारा
इन्टरनेट पर वक्त आज से आधा कर लें
चलो न फिर से जीवन सीधा-सादा कर लें
सभी मर्ज की दवा 'दुआ' है जो मिलती अपनों से
जीने को जो मिले ऊर्जा है वो मिलती सपनों से
वक्त फेमिली संग बिताना ज्यादा कर लें
चलो न फिर से जीवन सीधा-सादा कर लें

-- अर्चना पांडा

सोच रहा हूँ, एक कहानी लिख डालूँ
सोच रहा हूँ, पीड़ा का एक चित्र लिखूँ
सोच रहा हूँ, दुखड़ों को मैं मित्र लिखूँ
गम की कोई एक निशानी लिख डालूँ
कलम तेरी किस्मत में सत्ता भोग नहीं
तेरे भाग में शासन का भी योग नहीं
लेकिन आ तू राजा रानी लिख डालूँ
नील गगन की हर सीमा को बंद करूँ
सोच रहा हूँ, मैं सागर से द्वंद करूँ
पानी पर पानी से पानी लिख डालूँ
एक अधूरी प्रेमकथा लिख डालूँ मैं
या विरहन की हृदय व्यथा लिख डालूँ मैं
या कोई मीरा दीवानी लिख डालूँ

-- डॉ दिवाकर दत्त त्रिपाठी

अब तक तो गूंजा था मोदी-मोदी हिंदुस्तान में
और छा रहा है यह नारा देखो पाकिस्तान में
लगा रहे कोरे कयास वह क्यों कर जीते हैं मोदी
वोट मिले शायद मुस्लिम के यों कर जीते हैं मोदी
मोदी को तुम समझ पाओगे रहना नहीं गुमान में
साफ करूंगा पूरा भारत भ्रष्टाचार मिटाऊंगा
नहीं किसी को खाने दूंगा और न मैं खुद खाऊंगा
अव्वल मुल्क बनाऊंगा मैं भारत सकल जहान में
साथ विकास सभी का होगा यह मोदी का नारा है
मजहब और उन्माद से ऊपर हिंदुस्तान हमारा है
हर एक गलत सोच की खातिर है एक तीर कमान में
और छा रहा मोदी-मोदी पूरे पाकिस्तान में

-- मनोज श्रीवास्तव

(दूसरी किस्त)

अनुत्तरित प्रश्न

डॉ राजेन्द्र प्रसाद सिंह

बखूबी मैं जावेद को अब समझने लगी हूं। वह मेरे करीब आना चाह रहा है। उसकी मंशा को ले मेरे परेशान होने की वजह है।

इस बीच मैं जानबूझ कर मायके चली गयी। जावेद भी कालेज में पहुंच गये। वह अक्सर मुझे खत लिखते, 'भाभी जान! आपके बिना मन नहीं लग रहा है। अगर आप यहां न आयीं तो मेरा रिजल्ट खराब हो जायेगा। प्लीज भाभी जान, परीक्षा के पहले घर लौट आइए! प्लीज। मैं आपके आने की राह देख रहा।'

एक रोज मेरे शौहर मुझे बुला लाये और तब से मैं ससुराल में ही रहने लगी और मेरे शौहर काम की तलाश में कलकत्ता चले गये। तब से वे वहीं रह रहे हैं।

इधर, जनाब जावेद कालेज में जाने के बाद और ज्यादा बदल गये। शायद यह उनकी संगति का ही असर है। कुछ समय से मैं देख रही हूं, पढ़ाई में उनका मन नहीं रम रहा, जनाब शेरो-शायरी में अधिक रस ले रहे हैं। अब धरती पर उनके पैर नहीं पड़ते। आकाश में उड़ने लगे हैं। इश्क-मोहब्बत में रुचि रखते हैं। मानो पढाई-लिखाई उन्हें काटने दोड़ती हो! 'जनाब, जावेद अली! अभी आप हवा में उड़ रहे हैं। जब आपके सिर पर ओले गिरेंगे, तब आपको पता चलेगा कि रात-दिन कैसे गुजरते हैं।' उसकी ढिठाई पर मैं रंज जाहिर करती हूं। जावेद मेरे कंधे पर हाथ रखकर मुझ से पूछता है, 'भाभी जान, क्या सचमुच ही, शादी के बाद रात और दिन बदल जाते हैं? क्या दिन काला और रात उजला हो जाता है?' उसने फिर मेरे भीतर झांकने की शरारत की।

'जावेद! अम्मा सोने चली गयीं। आप भी सोने चले जाओ।' उसे यह हिदायत देकर मैं अपने कमरे में सोने चली गयी। मेरे अचेतन मन को जावेद ने अनजाने ही इस कदर कुरेद दिया कि मैं बेचैन हो गयी। अशरफ के साथ बिताये मधुर लम्हों की याद मुझे सताने लगी। मेरी स्मृतियों में मेरा अशरफ फिर लौट आया और मैं उसकी बाहों में समा गयी। बदन में एक अजीब-सी सिरहन होने लगी।

एक औरत के जीवन में उसके शौहर के मिलन का सुख सभी सुखों से ऊपर होता है। मर्द का ईमानदार स्पर्श औरत की ताकत होती है, जबकि उसका अविश्वास औरत को कमजोर बनाता है। अर्से बाद आज शबनम अशरफ के स्पर्श को महसूस कर पुलकित हो रही है। उसके आलिंगन-सुख में वह भीग रही है। उसकी नींद मानो गायब हो गयी हो। अशरफ की कितनी कही-अनकही बातों में वह उलझती रही। स्मृतियों के अथाह समंदर में वह अनायास ही पूरी तरह समा गयी।

'मेरा शौहर अशरफ मुझे बेहद प्यार करता है। उसका कहना है कि अगर यह पापी पेट न होता तो वह एक पल भी मुझसे दूर न जाता। वह हरदम अपने सीने से मुझे लगाये रखता। वह अपनी प्यारी शबनम को सदैव समय के शीत-ताप से बचाता। अपनी पलकों पर बैठाये रहता। यानी कि अपने से दूर नहीं होने देता।'

लेकिन परिवार की आर्थिक तंगी ने इस कदर मेरे अशरफ को मजबूर कर दिया कि उन्हें रोजगार की तलाश में परदेश जाना पड़ा! बढ़ती महंगाई, जावेद की पढ़ाई, अम्मा का अपने खाविंद को रिझाने का मसनूई शौक, घर के खर्चे और ऊपर से ननदों की नयी-नयी फरमाइशों को लेकर अशरफ अक्सर परेशान रहते। परिवार के बड़े लड़के होने के नाते वह अपना फर्ज निभा रहे थे। इधर उनकी अनुपस्थिति में जावेद के कदम बहकने लगे थे। वह किसी न किसी बहाने मेरे दिल के करीब आने का यत्न करता। मेरे शरीर में हो रहे कुदरती बदलाव के प्रति उसकी रुचि बढने लगी।

मैं हर बार उसकी आंखों के मौन निमंत्रण को अस्वीकार करती और वह बार-बार मुझे अपने अभिनव अंदाज से रिझाने का यत्न करता रहता। उसकी आंखों में व्याप्त वासना उसके मन के विकार स्वतः ही प्रकट कर देती। मैं उसके भाव-तरंग को भांप जाती। मेरे भीतर की औरत का चंचल मन डगमगाता जरूर, मगर मैं उसे मजबूती से संभाल लेती। अशरफ के विश्वास और परिवार की मर्यादा का मुझे बराबर ही ख्याल बना रहा। मैं अपनी देह व सुंगध को अपने शौहर के लिय संजोये हुए भावी जीवन के सपनों में विचरण करती, रंगों में नहाती, सपनों में तैरती-उतराती। अशरफ हर वक्त मेरे ख्यालों में होते। देह-मन से मैं उनकी हो चुकी थी, उन्हीं के प्रति समर्पित रही। फिर भी चांद की कालिमा ने मेरा स्पर्श कर ही लिया और मैं हमेशा-हमेशा के लिए कलंकित हो गयी। और कलंक भी ऐसा कि जिसका दाग ही न मिटे! हालांकि इसमें मेरा कोई कसूर भी न रहा। फिर भी मजहबी अभिशाप की मैं शिकार बनी!

मैं अपनी स्मृतियों के पन्ने पलटने में व्यस्त हो गयी। तभी अचानक मेरे सुखद अहसास के तार टूट गये। जावेद ने आहिस्ते से दरवाजा पर दस्तक दी। दरवाजा पूरी तरह बंद नहीं था, उसे मौका मिला और वह मेरे कमरे के भीतर दाखिल हो गया। उसने धीरे से आवाज लगायी, 'भाभीजान, मेरी चादर! प्लीज!' जावेद की चादर मैंने ओढ़ रखी थी। मैं आफत टालने को बोली, 'जाकर अम्मा से ले लो। उनके पास दो चादर हैं और मेरी नयी वाली भी उन्हीं के कमरे में पड़ी हुई है।' यह कहते हुए मैं अपने बेपर्द अंगों को चादर में समटने की कोशिश करने लगी।

अपनी ओर जावेद के बढ़ते कदम की आहट पाकर अन्यमनस्क भाव से मैंने करवट ली। मगर जावेद रुका नहीं। दरअसल उसकी नीयत में खोट थी। वह मेरे करीब आ गया और मनुहार करते हुए बोला, 'भाभी जान! मुझे तो वही चादर चाहिए जिसमें आपकी खूबसूरत देह लिपटी हुई है। मुझे तो आपकी सुंगध वाली मलमल की चादर चाहिए। इसके बगैर आंखों में नींद कहां आयेगी!'

मुझे बदन से चादर हटाना मुनासिब न लगा। लालटेन की मद्धिम रोशनी में मैंने जावेद के चेहरे का रंग पढ़ लिया। उसके मन के भाव को मैं भांप गयी। जावेद भी अपने बड़े भाई की तरह ढिठाई पर उतर आया। उसके इस अंदाज से मैं बेहद घबड़ा गयी। हालांकि अशरफ की ढिठाई में मुझे एक खास तरह की अनुभूति होती, अतः उनसे कभी डर नहीं लगा।

मैंने उसे समझाने की हर संभव कोशिश की, मगर उस पर इसका कोई असर न पडा। वह अपनी जिद पर अड़ा रहा। अंततः उसने खुद ही लपककर मेरे जिस्म से चादर खींच ली। जिस्म से चादर के अलग होते ही मैं सन्न रह गयी। अचानक जो हुआ, उसके लिए मैं पहले से बिल्कुल ही तैयार नहीं थी। मैं समझ गयी कि आज कोई न कोई अनहोनी होकर ही रहेगी। उसकी नजरें मेरे बदन पर फिसलने लगीं। दरअसल उसका मकसद, मुझसे चादर लेना नहीं था, चादर तो मात्र एक बहाना था। चादर के बहाने वह रात के अंधेरे में दबे पांव मेरे कमरे में दाखिल हुआ था। वह तुरंत अपनी शरारत पर उतर आया। उसकी धृष्ट नजरें अचानक मेरे उरोजों पर आकर ठहर गयीं। उसकी आंखों में एक अजीब तरह का नशा था।

मैं सहम गयी। मैंने खुद को बचाने की गरज से अपने एक हाथ से वक्ष को ढका तथा दूसरे हाथ से त्रिवली से फिसले हुए कपड़ों को संभालने में लग गयी।

जावेद मेरे सामने निडर होकर खड़ा रहा। मैं बखूबी समझ गयी कि वह मेरी विवशता का फायदा उठाना चाह रहा है। उसकी इस ढिठाई पर मैंने अपने तेवर कड़े किये और रंज होकर उसे हिदायत दी। 'आप यहां से क्यों नहीं जाते? अपनी निर्लज्जता की सारी हदें पार कर रहे हो। मैं दरवाजा बंद करूंगी।'

मेरी नाराजगी से वह बिल्कुल ही विचलित नहीं हुआ, मानो वह दुनिया से बेखबर हो। उसे मेरी हिदायत की जरा भी लिहाज नहीं रही। काम-वासना ने उसे वहशी बना दिया था। फिर उस पर असर होता कैसे! मेरी अवस्था को भांप कर उसने हिम्मत की। वह मेरी ओर फुर्ती से लपका और एक ही झटके में उसने मुझे अपने बांहों में समेट लिया। उसकी मजबूत पकड़ से खुद को आजाद कराने की कोशिश करती हुई मैं चीख पड़ी, 'बेशर्म कहीं का, जानवर! मैं अभी अम्मा को बुलाये देती हूं।'

इस पर जावेद के नियंत्रण खुद-ब-खुद ढीले पड़ गये और वह घबराकर दो कदम पीछे हट गया। वह सिर झुकाये मेरे समाने खड़ा रहा और मैं किंकर्तव्यविमूढ़-सी अपने अस्त-व्यस्त कपड़ों में सुबकती व सिसकती रही।

(अगले अंक में जारी)

यकीं है हमको ये मेरा प्यार याद आएगा
मैं कोई पल नहीं हूं गुजरा तू भूल जाएगा
मैंने नजरें ये तेरे रुख पर ही बिछा रखी हैं
एक न एक दिन चाहत का सलाम आएगा
नहीं जी सकोगे तन्हा तुम अब मेरे बगैर
होगी मेरी जरूरत तुम्हें वो मकाम आएगा
हाल हो जाएगा इक दिन तेरा दिवानों सा
बस वफा ए प्यार के नगमे तू गुनगुनाएगा
हद तो तब होगी जब ये लोग हाल पूछेंगे
बिना ही बात के जब खामोश मुस्कराएगा
हम मोहब्बत में जोड़ लेंगे रूह का रिश्ता
जुदा हुए तो न इक पल भी जिया जाएगा
यूं बनके जोगी फिरेगा मोहब्बत के लिए
सांस की लय पे तू बस प्यार प्यार गाएगा
इस कदर जब भी मोहब्बत हो गई 'जानिब'
सुन नाम तेरा भी फरिश्तों में गिना जाएगा

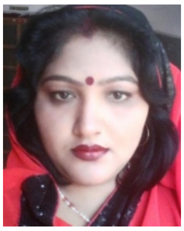

-- पावनी दीक्षित 'जानिब'

खार हो फूल हो हालात पे गम क्या करना
मैं तो कहता हूँ किसी बात पे गम क्या करना
खाक को आग बना दे वो अगर चाहे तो
खाक हो आग हो औकात पे गम क्या करना
कीमती है ये बहुत और मुलाकातों से
आखिरी बार मुलाकात पे गम क्या करना
ढूढता था न मिला आज खुद मिलेगा वो
मौत की रात हसीं रात पे गम क्या करना
जीत पर नाम लिखा गर है किसी अपने का
जीत से लाख गुना, मात पे गम क्या करना

-- प्रवीण श्रीवास्तव 'प्रसून'

जीस्त के पाँव यूँ जो ठहरते नहीं
चलने से आबले ये मुकरते नहीं
बेवजह साथ क्यूँ छोड़ तुमने दिया
बिन खिजां के तो पत्ते भी झरते नहीं
हर कहीं है मिलावट नमक की, तभी
आजकल जख्म मरहम से भरते नहीं
दुश्मनी जाने क्या हो गई आँख से
ख्वाब भी मेरी शब से गुजरते नहीं
दिल की तन्हाई में रो लें चाहे, मगर
हम जमाने से फरियाद करते नहीं
फासला था दरक कर बिखर जाने में
थाम लेते जो तुम तो बिखरते नहीं
मिलती उम्मीद की गर खुराकें उन्हें
ख्वाब मुफलिस निगाहों के मरते नहीं
सर झुकाने से 'पूनम' वो भी हैं डरते
मौत से जिनका दावा है डरते नहीं

-- पूनम पाण्डेय

कुछ दिनों से लगता है जैसे मैं नहीं रही
खो गयी हूँ भीड़ भरे रास्तों पर फिर कहीं
न कोई आवाज है प्यार भरी न उम्मीद कहीं
न जाने किस मोड़ पर जिंदगी मेरी जा रही
करवटों का आलम न पूछिये टूटे हुए दिल से
लगता है बुझ रहा हो कोई दीपक यहीं कहीं
अजीब शै है या है मौत की खामोशी दूर तक
पतझड़ है तो शोर सूखे पत्तों का क्यों नहीं
वो देखो दूर लौ जल रही है जगमगाती हुई
शायद अभी मैं जिंदा हूँ बता रही शमा यही
करके गया था वादा कभी लौटने का जन्नत में
आयेगा अभी फिर से वो सुनहरा दौर भी यहीं
उजालों की कहानी है या ख्वाबों का दौर है
जीने की सजा मिली या मौत का खौफ कहीं
लो तुम्हें कर देते हैं रिहा उजड़ी मोहब्बत से
फिर जन्म लेकर आयेंगे मिलने यहीं कहीं

-- वर्षा वार्ष्णेय

न हो खफा, तू लौट आ दूरियाँ मिटाने को
तू दे जहर मेरे रकीब, मुझे बचाने को
अजब कशिश है जालिम तुम्हारी चाहत में
मचल रहा है दिल गहरे जख्म खाने को
न रोक मुझको आज टूटने दे बाँहों में
तड़प है दिल में वस्ल-ए-शब जगाने को
आ दबोच ले मुझको अपनी बाजुओं में
जरा निचोड़ दे आँचल मुझे भिगाने को
न चाह बाकी रहे दे दे चाहत का सिला
मुझे मदहोश कर दे दर्दो-गम मिटाने को
बरस जा खुलके आज मुझे तर कर दे
दिल है बेताब तेरे आगोश में समाने को

-- राम दीक्षित 'आभास'

मुझे सच कहने की बीमारी है
इसीलिए तो ये संगबारी है
अपने हिस्से में महज ख्वाब हैं
नींद भी, रात भी तुम्हारी है
एक अरसे की बेकरारी पर
वस्ल का एक पल ही भारी है
चीरती जाती है मिरे दिल को
याद तेरी है या कि आरी है?
हमने साँसें भी गिरवी रख दी हैं
अब तो ये जिन्दगी उधारी है
सब तो वाकिफ हैं आखिरी सच से
किसलिए फिर ये मारा-मारी है?
नींद का तो कुछ अता-पता नहीं
रात है, ख्वाब हैं, खुमारी है

-- जयनित कुमार मेहता

आ सवारें देश की तस्वीर को
हम मिटा दें धीर बन हर पीर को
है हमारा ही सदा से अंग वो
छीन लेगा कौन यूं कश्मीर को
कत्ल करती है जुबां ही इस कदर
म्यान में रखना सदा शमशीर को
बेवफाई जख्म से जादा रिसी
है खुदा हाजिर यहाँ तहरीर को
खुद ब खुद हम हो गये हैं आपके
अब समझ लो प्यार मेरी पीर को
रोजने उम्मीद आया सामने
क्यूं भुला बैठे भला तकदीर को
काल में कल, क्या मिलेगा कल यहाँ
आज तुम बांधों न यूँ जंजीर को
ढूँढ़ता है आज भी गमगीन हो
रांझड़ा बन मेघ अपनी हीर को
नफरतों की आग सी है जिन्दगी
खुश 'अधर' हैं पी नयन के नीर को

-- शुभा शुक्ला मिश्रा 'अधर'

दिल में उठी दीवार गिरा क्यों नहीं देते
शिकवे गिले हैं जो भी मिटा क्यों नहीं देते
दुनिया में अगर चैन से जीना है आपको
हर गम को अपने दिल से भुला क्यों नहीं देते
ऐसे न कीजिये कभी बदनाम इश्क को
जो हम हैं गुनहगार सजा क्यों नहीं देते
कुछ भी न सूझता है बड़ी कशमकश सी है
है आपको खबर तो बता क्यों नहीं देते
चर्चा हुआ है आम यहां बेवफाई का सनम
वादे वफा भी आप निभा क्यों नहीं देते
नफरत की गिराकर अजी दीवार फिर से अब
घर उल्फतों का दिल में बना क्यों नहीं देते
मरते रहे हैं रोज ही बेमौत यहाँ पर
मैयत हमारी आज उठा क्यों नहीं देते

-- रमा प्रवीर वर्मा

तुम्हें प्यार ऐसे सजन कर रही हूँ
तेरे नाम का ही भजन कर रही हूँ
सताओ न ऐसे चले अब तो आओ
हरिक साँस अपनी हवन कर रही हूँ
तुम्हें याद कर मैं फिरूँ छटपटाती
ये दर्दे जुदाई सहन कर रही हूँ
गये छोड़कर क्यूँ मुहब्बत हमारी
कमी क्या रही ये मनन कर रही हूँ
कभी राधिका तुम हमें थे बुलाते
उसी कृष्ण का मैं जहन कर रही हूँ
रहे 'गूँज' दिल में तिरे बोल अबतक
उन्हीं से सलौने सपन कर रही हूँ

-- गुंजन अग्रवाल 'गूँज'

शान्तिदूत

(दसवीं कड़ी)

विजय कुमार सिंघल

कृष्ण को याद था कि जब अग्रपूजा के लिए पितामह भीष्म उनका अभिषेक करने के लिए आगे बढ़े, तो राजाओं की पंक्ति में बैठा हुआ चेदिराज शिशुपाल, जो कृष्ण का फुफेरा भाई लगता था, इसका विरोध करने के लिए उठकर खड़ा हो गया। उसने पितामह भीष्म, भगवान वेदव्यास, राजा उग्रसेन, वसुदेव और द्रोणाचार्य के होते हुए भी कृष्ण की अग्रपूजा का विरोध किया। पितामह भीष्म, महात्मा विदुर और स्वयं महाराज युधिष्ठिर ने उसको युक्तियुक्त उत्तर दिये, परन्तु वह संतुष्ट नहीं हुआ और अनर्गल प्रलाप करने लगा। जब उसके कथन तर्क छोड़कर व्यक्तिगत लांछनों और अशोभनीय अपशब्दों पर उतर आये, तो महाबली भीम और अर्जुन उसको मारने के लिए उठे। लेकिन कृष्ण ने उनको संकेत से बैठा दिया।

कृष्ण को स्मरण था कि मैं मन ही मन उसके अपराधों को गिन रहा था। उन्होंने शिशुपाल की माता यानी अपनी बुआ को वचन दिया था कि मैं उसके सौ अपराधों को क्षमा कर दूँगा। सौ की गिनती पूरी होते ही कृष्ण ने शिशुपाल को चेतावनी दी कि अब बोला गया कोई भी अपशब्द उसका अन्तिम शब्द होगा। परन्तु शिशुपाल के सिर पर मृत्यु नाच रही थी, उसने कृष्ण की चेतावनी को अनसुना कर दिया और अपशब्दों भरा अनर्गल प्रलाप करता रहा, तो कृष्ण ने सुदर्शन चक्र से उसका सिर काट दिया। कृष्ण को बहुत खेद हुआ था कि राजसूय यज्ञ जैसे मांगलिक अवसर पर मानव-वध करना पड़ा, लेकिन यज्ञ निर्विघ्न समाप्त हो, इस कर्तव्य के कारण ऐसा करना आवश्यक हो गया था।

शिशुपाल के वध के पश्चात् राजसूय यज्ञ निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। यज्ञ पूरा होने के बाद सभी अतिथि गण यथायोग्य भेंट लेकर लौट गये। सभी कौरव भी हस्तिनापुर चले गये और कृष्ण भी अपने परिजनों के साथ द्वारिका को प्रस्थान कर गये।

इस यज्ञ से महाराज युधिष्ठिर की सार्वभौम सत्ता सम्पूर्ण आर्यावर्त में स्थापित हो गयी। सम्राट युधिष्ठिर अत्यन्त योग्यता से राजकार्य करने लगे, जिससे सभी प्रजाजन संतुष्ट रहते थे।

राजसूय यज्ञ के बाद की घटनाओं को याद करके कृष्ण का मन फिर खिन्न हो गया। इस यज्ञ के बाद वे एक प्रकार से पांडवों की ओर से निश्चिंत हो गये थे, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि पांडवों की दिग्विजय और राजसूय यज्ञ के बाद दुर्योधन उनके प्रति पहले की तरह दुष्टतापूर्ण व्यवहार नहीं करेगा और उनको शान्ति से रहने देगा। लेकिन उनकी यह आशा गलत सिद्ध हुई।

राजसूय यज्ञ के समय युधिष्ठिर का ऐश्वर्य देखकर दुर्योधन ईर्ष्या की आग में जल रहा था। उसने खांडव वन जैसा घनघोर जंगल का क्षेत्र पांडवों को दिलवाया था। उसने सोचा था कि पांडव वहाँ कोई नगर नहीं बसा सकेंगे और जंगली पशुओं का आहार बन जायेंगे। लेकिन पांडवों ने अपने पराक्रम और श्रीकृष्ण की सहायता से इन्द्रप्रस्थ जैसा सुन्दर और विराट नगर उसी जंगल में बना दिया और अब वह समृद्धि में हस्तिनापुर से बहुत आगे हो गया था। इसके अतिरिक्त, राजसूय यज्ञ करके युधिष्ठिर ने सम्पूर्ण आर्यावर्त में अपनी निर्विवाद श्रेष्ठता सिद्ध कर दी थी और एक प्रकार से हस्तिनापुर को महत्वहीन कर दिया था। यही दुर्योधन की ईर्ष्या का प्रमुख कारण था। शकुनि उसको लगातार भड़काता रहता था और कर्ण भी उसकी 'हां' में 'हां' मिलाता रहता था।

ईर्ष्या की आग में जलते हुए दुर्योधन और उसके भाई किसी भी तरह पांडवों को नीचा दिखाना चाहते थे। वे स्वयं तो राजसूय यज्ञ या दिग्विजय कर नहीं सकते थे, क्योंकि बातें वे कितनी भी बड़ी-बड़ी कर लें, परन्तु लम्बे युद्ध करना उनकी शक्ति से बाहर की बात थी। वे युद्ध में भी पांडवों को पराजित कर नहीं सकते थे और अकारण युद्ध करने की अनुमति भी पितामह भीष्म उनको नहीं दे सकते थे। इसलिए वे किसी अन्य प्रकार से पांडवों को नीचा दिखाना चाहते थे।

गांधार राज शकुनि पासे के खेल में बहुत चतुर था। उसे पता था कि युधिष्ठिर भी पासे के खेल में रुचि रखते हैं। उसने दुर्योधन को यह सलाह दी कि युधिष्ठिर को पासे का द्यूत खेलने के लिए आमंत्रित करो। मैं उसे इस खेल में हराकर उसका सर्वस्व जीत लूँगा। दुर्योधन और शकुनि दोनों जानते थे कि युधिष्ठिर उनके निमंत्रण पर खेलने के लिए नहीं आयेंगे। इसलिए उन्होंने महाराज धृतराष्ट्र से आदेश दिलवा दिया कि खेलने के लिए आओ। उनको ज्ञात था कि युधिष्ठिर अंधे महाराज धृतराष्ट्र का बहुत सम्मान करते हैं, इसलिए वे उनके आदेश का उल्लंघन नहीं करेंगे। उन्होंने इस बात का पूरा लाभ उठाया और धृतराष्ट्र से वैसा आदेश करा लिया। अंधे राजा ने एक बार फिर पुत्र-मोह में फँसकर एक मूर्खतापूर्ण आदेश दे दिया और अपने वंश के सर्वनाश का बीज बो दिया।

कृष्ण ने युधिष्ठिर के इस कार्य पर कई बार विचार किया था और हर बार इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि युधिष्ठिर को धृतराष्ट्र का यह आदेश स्वीकार नहीं करना चाहिए था। बड़ों का सम्मान करना अपने आप में अच्छा है, परन्तु उनके अनुचित आदेशों को मानना आवश्यक नहीं है। केवल उनके उचित आदेशों और इच्छाओं का ही पालन करना चाहिए। यह आदेश किसी अच्छे कार्य के लिए होता, तो अधिक विचार करने की आवश्यकता नहीं थी, लेकिन द्यूत जैसे व्यसन के लिए पहले तो धृतराष्ट्र को आदेश देना ही नहीं चाहिए था और यदि उन्होंने दिया भी था, तो युधिष्ठिर को यह आदेश किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं करना चाहिए था। अगर यह गर्हित खेल न हुआ होता, तो आगे की वे दुर्भाग्यपूर्ण घटनायें न हुई होतीं, जिन्होंने सम्पूर्ण कुरुवंश को कलंकित कर दिया।

कृष्ण उस समय द्वारिका में थे और उनको लेशमात्र भी आशंका नहीं थी कि दुर्योधन और शकुनि युधिष्ठिर को द्यूतक्रीड़ा के षड्यंत्र में फँसाकर उनका सर्वस्व हरण कर लेंगे। यदि कृष्ण को इसकी लेशमात्र भी भनक लग जाती, तो वे किसी भी तरह युधिष्ठिर को यह खेल न खेलने देते, भले ही उनको बल प्रयोग करना पड़ता। कृष्ण के हस्तक्षेप से कुरुवंश उन कलंकित घटनाओं से बच जाता, जिनके कारण अन्ततः उनका और पूरे देश का विनाश हुआ।

कृष्ण को बाद में ज्ञात हुआ था कि द्यूतक्रीड़ा में दुर्योधन ने प्रारम्भ में ही अपनी ओर से शकुनि को खिलाने की सूचना दी थी। यह भी युधिष्ठिर को तत्काल अस्वीकार कर देना चाहिए था, क्योंकि वे दुर्योधन के साथ खेलने आये थे, शकुनि के बुलावे पर नहीं। युधिष्ठिर जानते थे कि शकुनि इस खेल में पारंगत है और वह सरलता से उनको हरा देगा, फिर भी कहना कठिन है कि क्या सोचकर उन्होंने खेलना स्वीकार किया। लगता है कि वे इस बात के लिए कृतसंकल्प होकर आये थे कि चाहे कुछ भी हो जाये, महाराज धृतराष्ट्र के आदेश का पालन अवश्य होगा।

कृष्ण का विचार था कि जब युधिष्ठिर द्यूत में अपना सब कुछ हार गये, सारा साम्राज्य भी हार गये, तो उनको खेल वहीं समाप्त कर देना चाहिए था और उठकर वन की राह पकड़ लेनी चाहिए थी। महामंत्री विदुर ने उनको यह राय दी भी थी, लेकिन युधिष्ठिर ने उस सलाह पर कोई ध्यान नहीं दिया और शकुनि के उकसावे पर दांव लगाकर अपने भाइयों को, स्वयं को और अन्ततः द्रोपदी को भी हार गये। इसके बाद बड़े-बड़े नीतिज्ञों, वीरों और विद्वानों से भरी हुई उस राजसभा में जो हुआ, उसने सदा के लिए इतिहास को कलंकित कर दिया।

उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन भरी राजसभा में द्रोपदी को घसीटकर लाया गया। फिर कर्ण के सुझाव और दुर्योधन के आदेश पर दुःशासन ने द्रोपदी के वस्त्र उतारकर उसे निर्वस्त्र करने की कोशिश की।

उस समय कौरवों की उस राजसभा में महाराज धृतराष्ट्र के अतिरिक्त पितामह भीष्म, गुरु द्रोणाचार्य, गुरु कृपाचार्य, महामंत्री विदुर सहित अनेक वरिष्ठ और सम्मानित जन उपस्थित थे, लेकिन वे केवल शाब्दिक विरोध प्रकट करने और दाँत पीसने के अतिरिक्त कुछ नहीं कर सके। द्रोपदी ने नाम ले-लेकर उन सब वरिष्ठ जनों को ललकारा और अपना सम्मान बचाने की प्रार्थना की, लेकिन सब अपने कानों में रुई लगाकर और आँखें बन्द करके बैठ गये।

(अगले अंक में जारी)

दीवार

सिमरन की गोद में उसके भतीजे की तीन साल की बेटी बुआ दादी कहकर चढ़ गयी। उस मासूम को गोद में इस तरह देखकर सिमरन की आँखों के सामने वो दृश्य आया जिसको देखकर कुछ पल के लिए तो सिहर गयी। उस बच्ची की मासूम आँखों में उसको लगा जैसे कोई उसकी कोख से उससे सवाल पूछ रहा था, 'माँ, हमें क्यों मार दिया, हमारा क्या कुसूर था?'

पति के थप्पड़ कानों में गूंज रहे थे, 'समझती क्यों नहीं, मुझे बच्चे नहीं चाहिए।' 'पर इस तरह से दो की बलि चढ़ा चुके हो? आखिर क्यों किया ऐसा?'

'मेरी मर्जी, मैं क्यों किसी चीज का उपयोग कर अपनी मर्दानगी को ठेस पहुँचाऊँ? तुम मेरी पत्नी हो, तुम वही करोगी जो मैं चाहता हूँ।'

मन को मारकर रह गयी सिमरन। उसकी आंखों में दो छोटे-छोटे बच्चे थे जो उसको ताक रहे थे। अकेली रोती बिलखती छोड़कर उसका पति जा चुका था। सिमरन अपने कमरे की दीवारों से पूछ रही थी, 'सुना है तुम्हारे भी कान होते हैं? क्या इस जुल्म से कभी मुक्त हो पाऊँगी?' उसके दोनों बच्चे उससे चिपके हुए पुकार रहे थे, 'माँ भूख लगी है।'

'बुआ दादी...!' आवाज सुनकर वह अतीत से वर्तमान में आई। भैया की पोती को खूब प्यार किया। आज भी दीवारें सिमरन पर हंस रही थी मानो कह रही

हों, 'अरे बेवकूफ औरत, हमारे कान वहीं होते हैं जहाँ कोई खबर मसालेदार हो। घर में होते अत्याचार तो आम बात है।'

-- कल्पना भट्ट

गिरगिट

'हेलो! भाभी हम दोनों कुछ दिनों के लिए आपके घर आ रहे हैं। मेरे पति की तबीयत बहुत बिगड़ गई है।' मायना ने अपनी भाभी से फोन पर बात की। 'क्या हुआ आपके पति को दीदी? आपने जीजाजी को वहाँ के डॉक्टर को दिखा लिया क्या?' भाभी के चेहरे पर मनहूसियत छा गई, ननद की आने की खबर सुनकर।

'हाँ हाँ! भाभी वहाँ के डॉक्टर को दिखला चुके हैं। डॉक्टर ने बड़े शहर में दिखलाने के लिए कहा था, तो हम कई दिनों से यहाँ आए हुए हैं। टेस्ट सब हुए तो पता चला कि इनकी दोनों किडनी फेल हैं और इलाज के लिए इसी शहर में ज्यादा दिन रुकना होगा।'

'तुम्हारे पति के छः भाई भी तो इसी शहर में रहते हैं! सुख-दुःख अपनों के बीच ही काट ली जाती है।'

'हाँ भाभी! आप सही कह रही हैं। सबों से बात करने के बाद ही आपको फोन किया है। इस उम्मीद में कि आपके घर में हमारे लिए जरूर जगह होगी। ससुराल के इनके सभी भाई एक-एक घर में रहते हैं। लेकिन मेरे भाई की चार मंजिला हवेली है। कोई बता रहा था कि सभी तीन मंजिलों के कमरे खाली पड़े हैं।'

'अरे कहाँ से तुम गलत खबरें पा जाती हो ननदी? कुछ कमरों के लिए पेशगी ले चुकी हूँ। हमें तो क्षमा ही करो तुम।'

'क्यूँ भाभी, हम कोर्ट में मिलें क्या?'

'धत्त! हमलोग घर में आप लोगों का इंतजार कर रहे हैं दीदी, जल्द आइयेगा प्यारी ननद रानी।'

-- विभा रानी श्रीवास्तव

कहानी अपनी सी

एक बड़ी सी परात में रंग बिरंगे पानी में अंगूठी डालकर जिठानी बोली- 'देखो देवर जी हर हाल में जीतना है। वरना जिंदगी भर जोरू के गुलाम बनकर रहना होगा।' ऐसा कहकर अंगूठी पानी में छोड दी। घूंघट में दामिनी अपने आप में ही शरमायी जा रही थी। पानी के अन्दर दीपक (पति) का स्पर्श उसे रोमांचित कर रहा था। दोनों अंगूठी ढूंढने में लगे थे, बारी दामिनी के पक्ष में थी, सब चिढ़ाने लगे- 'क्या देवर जी! यहाँ तो जीत नहीं पा रहे लगता है बीवी के गुलाम हो गये हो अभी से, जानबूझकर तो नहीं हार रहे, सात में चार बार जीतना जरूरी है। अब जरा ध्यान से...' ऐसा कहकर अंगूठी पानी में फिर छोड़ दी।

इस बार भी दामिनी के हाथ में थी अंगूठी। घूंघट में हंसी आ रही थी दामिनी को। पर ये क्या अचानक पानी के अन्दर दीपक ने दामिनी के हाथ को जोर से पकड़ा और अंगूठी पर जबरदस्ती कब्जा कर लिया। सकपका गई दामिनी उसने पानी में उसी पल अंगूठी छोड़ दी। तीसरी बार फिर वही किया गया किन्तु दामिनी ने इस बार कोई कोशिश नहीं की। अब हर बार जीत दीपक की हुई।

दामिनी की आंखों से आंसू टपक रहे थे, वो समझ चुकी थी इसी अहंकार को जीना होगा, उसके बाद फिर कभी न जीत सकी दामिनी। अरे कहां खो गई दामिनी? बहू की रस्म पूरी करवाओ।

आज बेटे बहू को उसी रस्म को करते देख उसे अपने दिन याद आ गये थे। 'देख बहू सास की इज्जत का सवाल है हारना नहीं है।' ऐसा कहकर अंगूठी पानी

में छोड़ दी गई। इस तरह बहू की जीत से आज दामिनी जीत गई। और बेटा जो जानबूझकर हारा था माँ की खुशी महसूस कर रहा था।

-- रजनी विलगैयाँ

मनहूस

'बताईये डाक्टर साहब संजय कैसे हैं?' भराई हुई आवाज में नीता ने पूछा।

'हमने अपनी कोशिश कर ली, आगे जो भगवान की मर्जी' कहकर डाक्टर चला गया।

नीता और संजय की शादी को कुछ दिन ही हुए थे, संजय अपनी बाइक से जा रहा था। तभी अचानक पीछे तेज रफ्तार से आती हुई कार ने टक्कर मारी, कई फुट ऊपर उछलकर गिरे वो। कार वाला तो भाग गया मगर वहां भीड़ में से किसी ने उसे अस्पताल पहुंचाया।

रिश्तेदारों का आना जाना शुरू हो गया, वो माँ से तो सांत्वना जताते, मगर नीता को गुनहगार की दृष्टि से देखते, कई लोगों ने ये भी कहा- 'नीता मनहूस निकली संजय के लिए।' यह सब सुन टूट-सी गयी नीता।

उसने मन ही मन निश्चय किया और सास के पास गयी, 'माँजी मैं आपसे कुछ कहना चाहती हूं '

नीता के गले से शब्द अटक-अटक कर निकल रहे थे। 'माँजी संजय की इस हालत के लिए मैं जिम्मेदार हूं, शायद मैं उनके लिए मनहूस हूं इसलिए आज संजय की यह हालत है, मगर माँजी एक बार संजय ठीक हो जाए मैं खुद उनकी जिंदगी से दूर चली जाऊंगी, बस उनके ठीक होने तक मुझे उनके साथ रहने दें।' नीता के हाथ विनती की मुद्रा में जुड़े हुए थे व आँखों से अविरल अश्क बहे जा रहे थे।

'यह क्या कह रही हो बहू?' माँजी ने कहा- 'क्यूं ऐसा सोच रही हो?'

'अरे पगली, लोगों को मौका चाहिये बोलने का, मगर यह हम पर निर्भर करता है कि हम कितनी उनकी सुनते हैं! मेरी सोच इतनी छोटी नहीं कि बेटे के साथ घटी दुर्घटना का दोष बहू को दूं।'

नीता के आँसू पोचते हुए बोली- 'फिक्र ना करो बहू संजय जल्द ठीक हो जायेगा मुझे भगवान पर पूरा भरोसा है, जब हमने किसी का बुरा नहीं किया तो हमारे साथ क्यूं बुरा होगा?'

नीता सास के गले लगते हुए बोली- 'आज

आपके रूप में मुझे मेरी माँ वापस मिल गयी।' नीता जी जान लगाकर संजय की सेवा करने लगी, तब भगवान को भी उनके प्यार और सेवा के सामने झुकना पड़ा।

-- प्रिया वच्छानी

चले आओ गले मिल लो, पुलक इस साल होली में
भुला शिकवे-शिकायत, लाल कर दें गाल होली में
बहाकर छंद की सलिला, भिगा दें स्नेह से तुमको
खिला लें मन कमल अपने, हुलस इस साल होली में
नहीं माया की गल पाई है अबकी दाल होली में
नहीं अखिलेश-राहुल का सजा है भाल होली में
अमित पा जनसमर्थन, ले कमल खिल रहे हैं मोदी
लिखो कविता बने जो प्रेम की टकसाल होली में

-- संजीव वर्मा 'सलिल'

(गम्भीर कर्क रोग से ग्रस्त पत्नी की रोग शैया के निकट बैठे एक पति के उद्‌गार)

फिर मैं क्या करूँ?

कोई मुझे बतलाये मैं क्या करूँ?
मैं लखनऊ के अपने उन अग्रज जैसा तेजस्वी तो नहीं
जो समस्याओं, मुसीबतों से सीधे दो-दो हाथ करते हैं
और छलाँग लगाकर आगे बढ जाते हैं!
मैं अपने उन मित्र जैसा भी तो नहीं जो निश्चिंत,
बेफिक्र हो जिन्दगी अपने रंग में जीते हैं
दिक्कतों, परेशानियों को मानो, धूएँ के संग उडाते हैं!
ईश्वर ने मुझे मेरे उस भाई जैसा शांत भी तो नहीं बनाया
जो अंदर ही अंदर बुझने देते हैं भावों को अंतरमन में!
तो फिर मैं क्या करूँ?
हे ईश्वर काश, मुझे उन साथी जैसा ही बनाया होता,
जो दौड़ते, भागते पाये जाते हैं हर किसी के साथ
और जिनको कई लोग कहने लगे हैं दीनबंधु दीनानाथ!
फिर मै क्या करूँ?
मैं बनारस के उन आत्मीय जैसा साहित्यकार भी तो नहीं
जो पीड़ा और विषाद में भी लिख देते हैं अनेक पुस्तकें,
रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथों पर!
न ही उन जैसी प्रतिभा है मुझमें
जिसने अपनी शारीरिक अक्षमता को भी
बदल दिया अतिरिक्त क्षमता में,
अपनी दिव्यांगता को बना लिया ईश्वर का वरदान!
मंदिर में बैठे उस भक्त जैसा समर्पण कहाँ है मेरे अंदर
जो सब कुछ परमेश्वर पर छोड़ लीन रहता है साधना में
और उसी मे खोजता है, मुक्ति का मार्ग!
तो फिर कोई बतलाये मैं क्या करूँ?
क्या मैं उनको उनके हाल पर छोड दूँ
जो सारी रात बिता देती हैं सिरहाने बैठ कर,
मेरी थोडी सी हारी बीमारी में
रास्ता देखती हैं अपलक नेत्रों से जब तक घर नहीं आता
तो फिर कोई बतलाये मैं क्या करूँ?
हारकर मैंने अपने मनोभाव उन्हें ही सुना डाले.
मेरी बातों को समझ, उसने अपना दुर्बल हाथ
मेरी ओर बढ़ाया, और कहने लगी-
क्यों नहीं तुम कर सकते हो, बहुत कुछ कर सकते हो!
देखो अपने अगल बगल में, थोडा नीचे झुककर देखो
पाओगे कितने गरीब साधन हीन,
जो असह्य दुख उठाते हैं/उनके मैले, कुचैले बच्चे
मुस्कराने के पहले ही साथ छोड़ जाते हैं!
उनके आगे तो हमारा दुख कुछ भी नहीं
उनके लिए कुछ संवेदना दिखाओ
कुछ सहारा दो, अपना हाथ बढ़ाओ
कुछ नहीं तो कम से कम, दो मीठे बोल ही बोल आओ!
मन में आस जगने लगेगी, जिन्दगी हसीन लगने लगेगी!
वैसे भी सुख-दुख तो आना जाना है
क्योंकि दिन के बाद रात और,
रात के बाद दिन होता है,
यही प्रकृति का नियम है,
यही प्रकृति का नियम है...!

-- गोविन्द राम अग्रवाल

इन रंगीन कपड़ों के बीच
मेरा भी एक कपड़ा है
लाल पीले हरे नीले के बीच
मेरा भी एक सपना है
बाँधा था बड़ी मेहनत से मैंने
कूदकर सबसे ऊपर की डाल पर
पूरी हो पहले मेरी ख्वाइश
सोच टांगा था आसमां छूती डाल पर
मन्नत का पेड़ कभी धोखा नहीं देता
सुना था मैंने! यह तमन्ना अधूरी नहीं छोड़ता
सच्चे मन से मांगी हर दुआ कुबूल होती है
हजारों के इस भरोसे की सोच
मैं खड़ी मन्नत के पेड़ को निहार रही!

-- कृतांशा अरोरा

किया था तुमने जब स्वीकार
लुटाकर सब भूलों पर प्यार
बिछी थी अधरों पर मुस्कान
हृदय में उठा था तब मनुहार
टूटते स्वर को लिया था बाँध
दी थी मेरे गीतों को एक तान
जहाँ को दिये थे मेरे बोल/बना दी जिसने एक पहचान
भर दिये थे तुमने जज्बात/आलिंगन कर मेरे एहसास
ठहरे पानी में हो बरसात/कहीं न बीते ये मधुमास
विरह व्यथा बढती दिनरात/प्राण कहते न अपनी बात
नैनों से हो निशदिन बरसात/करुणमय झुलस रहे जज्बात
कहाँ हो फिर आ जाओ?

-- नीरू श्रीवास्तव 'निराली'

वो रोज ही मुझे देख मुस्कुराता, उछलता
हाथ चूमता और फिर आगोश में ले लेता
क्योकि वो मेरे रूह और जिस्म के बेहद करीबी है
आज वो मुझे देख न मुस्कुराया न उछला
बस अकबकाया और दौड़ गया उल्टे पाँव
क्योंकि आज मेरे हाथों में फूल नहीं
किताब रूपी खंजर था
चाहे मेरा करीबी एक सुशील समझदार
इन्सां होने के साथ/एक चिंतक कवि
एक कुशल नेता
और बहादुर योद्धा है
परन्तु अफसोस
वो पढ़ नहीं सका
नैनों की भाषा
मै खंजर उसको
भेंट करने आई थी!

-- रितु शर्मा

अक्सर रातों को मेरी तन्हाइयों में
धीरे से चुपके से तुम आते हो
मुस्कुराते हो और यह कहकर
चले जाते हो कि फिर आऊंगा
रातों को तुम्हारी तन्हाइयों में
धीरे से चुपके से...

-- मोनिका अग्रवाल

प्रेम और जुदाई/इनका तो किस्सा ही पुराना है
इनका काम ही रातों की नींद/दिन का चैन चुराना है
जब पास हो दिलबर/तो मौसम भी लगता सुहाना है
ये मैंने ही नहीं/पूरे जग ने माना है
और दूर हो जाय/जब दिल से कोसों दूर
तो तुमने भी और मैंने भी/आंसुओं से नहाना है
दर्द भी मिलता है कभी-कभी
जुदाई नहीं सही जाती कभी-कभी
फिर भी जुदा तो होना है एक दिन
फिर क्यूँ ये दिल लगाना है जब
पता है कि एक दिन ये टूट जाना है
अब तो समझो प्रेम और जुदाई
इनका तो किस्सा ही पुराना है

-- महेश कुमार माटा

ऐसा क्यों होता है?
किसान के पसीनों से उसके
बच्चों की रोटी क्यों नहीं बनती?
मजदूर के लहू से उसके
घर में रौनक क्यों नहीं आती?
उसी के पसीनों से
अमीरों के बच्चों के पेट कैसे भरते हैं?
उसी के लहू से अमीरों के घर में रंग कैसे उभरते हैं?

-- नलिका दुलांजली, श्रीलंका

हम सत्य के जितने करीब
उतने उज्ज्वल, उतने धवल
सत्य का सिर्फ एक रंग 'श्वेत'
विलीन है जिसमे रंग अनेक
मिथ्या है केशों लिप्त ये कालिमा
देह के सत्य ने अनवरत
शुरू कर दिया जो यह बोलना
भ्रम गुंथे मन बंधन को खोलना
झुकने लगे अनुभवों से लदे वृक्ष
देखो प्रगाढ़ होती इन झुर्रियों पर
लटक आये हैं परिपक्व फल
आड़ी टेढ़ी सी कुछ डालियों पर
अन्धकार बोलने लगे आलोक्यमान होकर
जाग उठा सत्य जब लम्बी नींद सोकर
सब कुछ यहां धुंधला जाता है
एक वो जब उभर कर सामने आ जाता है
भड़कीले इन सात रंगों का सत्य
जब भी एकाकार हो जाता है
तिमिर उभरकर लुप्तप्राय हो जाता है
कालचक्र के वेग पर चल
सिर्फ प्रकाश जगमगाता है
क्योंकि सत्य का सिर्फ एक रंग- श्वेत
विलीन हैं जिसमे रंग अनेक

-- प्रियंवदा अवस्थी

इस्लामी आतंकवाद से संघर्ष में भारत-इजरायल संबंधों का महत्व

उपानन्द ब्रह्मचारी

इस वर्ष भारत और इजरायल के राजनयिक संबंधों का रजत जयंती वर्ष है! आज जबकि समूची मानवता के तथा शांति और प्रगति के सबसे बड़े खतरे के रूप में इस्लामी आतंकवाद दिखाई दे रहा है, तब अपने इस साझा शत्रु का सामना करने के लिए हिंदू और यहूदियों के रिश्तों को बढ़ावा देना आवश्यक है। इस संदर्भ में यह महत्वपूर्ण है कि भारत और इजरायल के राजनयिक संबंधों की २५ वीं वर्षगांठ के अवसर पर भारत में इसराइल के राजदूत डैनियल कार्मोन ने आतंकवाद के मुद्दे पर भारत के प्रति अपने समर्थन को दोहराते हुए कहा कि दुनिया में कोई भी आतंक का औचित्य सिद्ध नहीं कर सकता। खूनी जिहाद की आड़ में पनपने वाला यह आतंकवाद वस्तुतः दोनों देशों की शांति और प्रगति को नष्ट करने की साजिश और भारत तथा इसराइल पर सीधा आक्रमण ही है। कार्मोन ने इस बात पर संतोष जताया कि आतंकवाद को लेकर वैश्विक चेतना बढ़ रही है तथा दुनिया को 'काफिर' मानने वाले आईएसआईएस और 'जिहाद' की क्रूरता के खिलाफ समूचा विश्व एकजुट होता जा रहा है।

स्मरणीय है कि इस साल जून महीने में भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा इसराइल का दौरा किये जाने की संभावना है। कार्मोन ने इसका भी उल्लेख करते हुए कहा कि यह यात्रा अत्यधिक महत्वपूर्ण है तथा इसका उपयोग साझा रणनीति बनाने में किया जाएगा। प्रधानमंत्री मोदी की यह प्रस्तावित इसराइल यात्रा स्पष्टतः निर्दयता और परोक्ष युद्ध के मूल कारण जेहादी आतंकवाद का मुकाबला करने के प्रयास के रूप में देखी जा रही है, तथा इससे हिंदुओं और यहूदियों के बीच संबंधों को और मजबूती मिलेगी। दोनों ही देश लम्बे समय से अपने-अपने देशों में इस्लामी आतंकवाद और जेहादी तत्वों के खतरे का सामना कर रहे हैं। कट्टरपंथी इस्लाम के विभिन्न एजेंट हमेशा से हिंदुओं और यहूदियों को अपना दुश्मन नंबर एक मानकर नुकसान पहुंचाने की कोशिश करते रहे हैं। इस परिप्रेक्ष में यरूशलेम में होने वाली मोदी-नेतनयाहू की भेंट वर्तमान समय में कुछ ज्यादा ही महत्वपूर्ण है।

यह भी उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस यहूदी राष्ट्र की यात्रा करने वाले पहले भारतीय प्रधानमंत्री होंगे। अब देखना यह है कि इस यात्रा का उपयोग भारत के हित में कैसे होगा। मुख्यतः पानी, नवाचार और शैक्षणिक तंत्र की महत्वपूर्ण तकनीक प्राप्त करना भी इस यात्रा का अहम उद्देश्य होगा, क्योंकि इजराईल की इन विषयों पर महारत के सभी कायल हैं। कार्मोन के अनुसार इसराइल अपनी अर्थव्यवस्था की सीमाओं के बावजूद इन विषयों पर भारत सरकार का सहयोग करने को तत्पर है। क्योंकि हम भारत के साथ अपने संबंधों को अत्यंत महत्व देते हैं। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि कैसे इजराइल भारत की रक्षा एवं सिंचाई प्रणाली में तथा विनिर्माण क्षेत्र में योगदान दे सकता है।

स्मरणीय है कि भारत की स्वतंत्रता के लगभग साथ ही इजराईल भी १४ मई १९४८ को अस्तित्व में आया तथा ११ मई १९४९ को उसे मान्यता मिली! यह भी उल्लेखनीय है कि अपने जन्म के साथ ही दोनों देश जिहाद और कट्टरपंथी इस्लाम से जूझ रहे हैं। यह हैरत की बात है कि इतना साम्य होने के बाद भी भारत सरकार ने हिचकिचाहट के साथ १७ सितंबर १९५० को इजराईल को मान्यता तो दी किन्तु नई दिल्ली में उसका दूतावास १९९२ में प्रारम्भ हुआ और तभी इजराईल के साथ भारत के राजनयिक सम्बन्ध स्थापित हुए ! वह भी तब जबकि भारत और इजराईल का सम्बन्ध सदियों पुराना है, क्योंकि भारत ही वह देश था जहाँ पीड़ित और विस्थापित यहूदियों को आश्रय मिला था! इसलिए यहूदी भारत को अपना दूसरा घर मानते हैं। ■

रामजन्मभूमि विवाद सुलझने की आशा

राजीव चौधरी

योगी आदित्यनाथ भारत के सबसे बड़े राज्य के मुख्यमंत्री बन गये. हर एक फैसले की तरह इस फैसले से भी लोगों में बराबर खुशी और निराशा का माहौल है. लेकिन सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या अब अयोध्या में राम मंदिर बनेगा? हालाँकि यह मुद्दा साम्प्रदायिक बताया जाता रहा है ऐसा मुद्दा जिसे सुप्रीम कोर्ट भी नेताओं के पाले में फेंक देती है. इस बार फिर सुप्रीम कोर्ट ने अहम टिप्पणी करते हुए कहा कि दोनों पक्ष मसले को बातचीत के जरिए सुलझाएं. कोर्ट ने कहा है कि यह धर्म और आस्था से जुड़ा मामला है और संवेदनशील मसलों का हल आपसी बातचीत से हो.

कुल मिलाकर देश की राजनैतिक हालत ऐसी है कि सुप्रीम कोर्ट भी इस मामले से अपनी दूरी बनाये रखना उचित समझ रही है क्योंकि भले ही यह मामला आम लोगों के आस्था का हो पर राजनैतिक दलों के लिए यह मामला वोट बैंक की दृष्टि से देखा जाता रहा है. आजाद होने के बाद भारत के संविधान में हर व्यक्ति को धार्मिक स्वतंत्रता की गारंटी दी गई, यह बात भी तय हुई कि १५ अगस्त १९४७ को जो धार्मिक स्थल जिस स्थिति में था उसे ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया जाएगा. लेकिन बाबरी मस्जिद को इससे अलग रखा गया. यानी यह एक विवादास्पद स्थान जमीनी विवाद माना गया जिसका फैसला होना था कि इस पर किसका अधिकार है. हिंदुओं का दावा है कि भगवान राम का उसी स्थान पर जन्म हुआ था, जहाँ बाबरी मस्जिद बनी हुई थी. वहाँ एक मंदिर था जिसे बाबर ने ध्वस्त करा कर बाबरी मस्जिद बनवा दी. वैसे तो बाबरी मस्जिद पर मालिकाना हक का मामला तो सौ बरस से भी अधिक पुराना है. लेकिन यह अदालत पहुँचा १९४९ में २३ दिसंबर को जब सवेरे बाबरी मस्जिद का दरवाजा खोलने पर पाया गया कि उसके भीतर हिंदुओं के आराध्य देव राम के बाल रूप की मूर्ति रखी थी. इस जगह हिंदुओं के आराध्य राम की जन्मभूमि होने का दावा करने वाले हिन्दुओं ने कहा था कि रामलला यहाँ प्रकट यानि पैदा हुए हैं. लेकिन मुसलमान इस तर्क से सहमत नहीं थे और मामला कोर्ट में चला गया. जमीन विवाद में उलझी अयोध्या रामजन्म भूमि ने अब मंदिर, मस्जिद विवाद का रूप ले लिया था.

खैर संविधान की अवहेलना कर बाबरी मस्जिद को छह दिसंबर १९९२ को ध्वस्त कर दिया गया था. उसके बाद हर साल इस दिन बाबरी मस्जिद के समर्थक 'काला दिन' और मंदिर समर्थक 'विजय दिवस' के रूप मनाते आ रहे हैं. हालाँकि ५०० साल पहले वहाँ क्या था और क्या नहीं था, ये तो पुरातत्वविद और इतिहासकार या फिर राम ही जाने, लेकिन पिछले १०० साल से बाबरी मस्जिद भारत में धर्म और नफरत की राजनीति की धुरी बनकर रह गई है. हिन्दू राम के प्रति आस्था को तो भारतीय मुसलमान जिनका बाबर से कोई ताल्लुक दूर-दूर तक नहीं लेकिन एक जिद लेकर बैठे हैं.

जबकि मुसलमानों का एक पढ़ा-लिखा तबका समझता है कि जब भारत में इस्लाम का प्रवेश नहीं हुआ था तब तक यहाँ जरूर मंदिर ही रहा होगा और दूसरा इस्लाम में इबादत के लिए कोई विशेष स्थान जरूरी नहीं होता। मसलन यदि कोई मस्जिद में इबादत के लिए घर से निकलता है यदि वो किसी कारण लेट हो जाये तो वह रास्ते में किसी चबूतरे, सड़क किनारे, बस, या ट्रेन में भी नमाज अदा कर लेता है तो क्या वह जगह मस्जिद हो गयी? परन्तु पूजा के लिए निकला कोई हिन्दू मंदिर में ही पूजा करता है बीच रास्ते में नहीं. इस कारण बहुसंख्यक समुदाय की आस्था की कद्र करते हुए भी क्या मस्जिद दूसरी जगह नहीं बन सकती है!

बहराल बाबरी मस्जिद ध्वस्त की जा चुकी है लेकिन इसके मलबे में नफरत की राजनीति अब भी हो रही है. स्वतंत्र भारत के इतिहास में हिंदुओं और मुसलमानों के बीच किसी एक मुद्दे ने ऐसी खाई और ऐसा मतभेद पैदा नहीं किया जैसा कि बाबरी-राम मंदिर के मुद्दे ने किया है. भारतीय गणराज्य बाबरी मलबे का अभी तक बंधक बना हुआ है. भारत एक उदार और संवैधानिक समाज है. देश का संविधान भारत की जनता की सामूहिक चेतना का प्रतिबिंब है. मौजूदा दौर में धर्मों

(शेष पृष्ठ ३० पर)

कबीर के साथ एक सुबह

शरद सुनेरी

पुराण कहते हैं कि काशी गये बिना मुक्ति नहीं मिलती। किसे पता कि मरने के बाद बेटा अस्थियाँ गंगा में प्रवाहित करता है या समय और धन के अभाव में बगल में बहनेवाली नाग नदी को ही मेरी मुक्ति का रास्ता बना देता है। नया जमाना जो है। फिर भी लोग अंतिम सांस लेने के लिए काशी में डेरा डाले बैठे रहते हैं। चुनाव के बहाने पूर्व चायवाले से लेकर भावी प्रधानमंत्री तक कई हस्तियाँ इन दिनों काशी में तीर्थ-यात्रा का लाभ ले रही हैं। मैंने सोचा चलो एक बार इस बहाने काशी-यात्रा कर ली जाए। आम के आम गुठलियों के दाम! भोर होते ही मैं काशी के कबीर चौराहे पर पहुँचा। आश्चर्य! घोर आश्चर्य!! कबीर चौराहे पर कबीर बाबा साक्षात मिल गये। उनका एक हाथ कमर पर था और दूसरे हाथ में चिलम थी। एक नवोदित व्यंग्यकार और 'व्यंग्य की नींव' का वह मिलन ऐतिहासिक था।

'राम-राम दद्दा' अपनी 'लाईन' के बुजुर्ग जानकर भारतीय संस्कृति का अनुसरण करते हुए मैंने चरण स्पर्श करने चाहे तो उन्होंने पैर खींच लिए और खामोश रहे। कुछ डरे-डरे से। मैंने दोहराया- 'बाबा राम-राम। सुबह-सुबह मौन व्रत रखा है क्या? दादा, जुहार का जबाव तो दो।' उन्होंने मुझे डाँट दिया-'चुप रह मूर्ख। ये पता होना चाहिए कि 'कबीर बहुरिया राम की'। बेटा, अपने देश में बहुरिया, पति का नाम नहीं लेतीं।' अब मैं खामोश हो गया। बनारस जैसे सांस्कृतिक नगर में इतना असांस्कृतिक कृत्य मुझ मूढ़ से हो गया। लानत है मेरी शिक्षा पर! विषय बदलने के लिए अगला प्रश्न पूछ लिया- 'अच्छा बाबा! एक बात बताइए। आजकल बिजनेस कैसा चल रहा है?' वे चकराए। माथे पर जोर देकर पूछा-'बिजनेस? कैसा बिजनेस? उ का होत है बिटवा?' 'अरे बाबा, वही आपकी खटर-पटर? आजकल चदरिया नहीं बुनते क्या? या फिर ये चिलम का नशा आपको कोई काम करने नहीं देता।' मैं बोला।

'अच्छा। कपड़ा बुनने की बात कह रहे हो बेटा। अब कौन इस बूढ़े के हाथ की बनी 'चदरिया' ओढ़ता है बेटा? सबरी लुगाइयाँ तो कपड़ा उतार-उतारकर घूम रही हैं। दो-चार बनारसी साड़ियाँ बना रखी हैं। सोचा था कि रोड-शो के लिए नेता लोग अपनी लुगाइयन के संग आयेंगे तो उनको भेंट देने के काम आ जाएगी। पर यहाँ तो एक आया था जिसने कच्ची उमर में ही घरवाली को छोड़ दिया था। एक अधेड़ चेला आया था जो देश-विदेश भटकने के बाद भी अब तक कुँवारा है। उसके बाद उसके 'रंडुवा' गुरु के आने की उम्मीद थी, जो दूसरा ब्याह रचाने के चक्कर में है, पर वह अब तक आया नहीं। अब ऐसा कर तू ले जा ये सारी साड़ियाँ। तेरी लुगाई के काम आ जाएंगी।' बाबा की पीड़ा मेरे फायदे की थी। सोचा घर लौटकर पत्नी पर रौब जमाऊँगा कि 'देख तेरे लिए इतनी महँगाई में भी तीन-तीन बनारसी साड़ियाँ ले आया।'

मैंने कहा-'बाबा, बूढ़े हो गये हो। पर अब तक हँसी-ठिठोली और ताना मारने की आदत गई नहीं आपकी?' बाबा अपना पोपला मुँह खोलकर जोर से हँसे और बोले- 'बेटा, बंदर बूढ़ा हो जाता है, तो कुल्हाटी मारना छोड़ देता है क्या?'

'अच्छा दद्दा एक बात बताइए। इतने रोड-शो हो गये आपके शहर में। आप किसके साथ हो? कौन-सी पार्टी का समर्थन किया आपने? वैसे तो बड़े संत बने फिरते हो। आपकी जाति के लाखों वोट जो हैं। जो भी जीतेगा, इसी साल गणतंत्र दिवस के पहले आपको 'भारत रत्न' घोषित कर देगा। बताइए ना किसके साथ हो?' मैं जिदियाया।

'गदहे जैसी बातें करते हो लल्ला। हम किसी के साथ रोड-शो में क्यों जाएँगे भला? भाई अपना तो शुरु से सिद्धांत रहा है- कबिरा खड़ा बाजार में लिए लुकाटी हाथ, जो घर फूँके आपुना चले हमारे साथ। इतने सालों से चिल्ला रहा हूँ पर किसी ने हिम्मत नहीं दिखाई आज तक इस बूसे करें। भिखमंगे कहीं के। लाखों की भीड़ ले कर आते हैं रोड-शो करने पर मेरे साथ चलकर घर फुँकवाने के लिए छप्पन इंच का सीना चाहिए जो किसी के पास नहीं है। सबकी अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग है। मैं तो रोज जाता हूँ भोर होते ही गंगाजी का पूजन करने। ये देख कमंडल में गंगाजल भी है। पर गंगा-पूजन का ऐसा भीड़ भरा डिरामा करने की कभी जरूरत नहीं पड़ी। इ सब रोड-शो है कि रॉड-शो पता नहीं।' दद्दा अपनी वाली पर आ गये थे। 'और इ का भारत रतन, भारत रतन लगा रखी है। हमको मूरख समझते हो? उ तो जिंदा लोगन को मिलता है या मरे लोगन हो। हम तो अमर हैं और ऊपर से हिंदू-मुस्लिम दोनों ही को गरियाते रहते हैं। हमसे इ भारत रतन के लिए होनेवाली चापलूसी नहीं बनेगी। समझे?' वे गुर्राए।

'अरे बाबा, आप तो नाहक नाराज हो गये। भारत रत्न तो गायक, वादक, कलाकार सबको मिलता है। चुनाव सिर पर रहे, तो आजकल सरकार खिलाड़ियों को भी यह सम्मान दे देती है। क्या पता इस साल से आपके कारण साहित्यकारों को भी सरकार इस जमात में शामिल कर दें। कल को आपके साथ-साथ अपना भी भला हो सकता है। आखिर हम भी तो आपकी ही लाईन के हैं। हें-हें-हें...' मैं खिसियाया। 'अरे बचुवा, काहे के साहितकार? हमने तो पहले ही कह रखी है- मसि कागद छुयो नहिं, कलम गही नहिं हाथ। इ सब हमारी बकबक हमारे चेला लोगन अपनी जोड़-तोड़कर हमारे नाम से छपवा दिए हैं। इस चोरी के माल पर भारत रतन मिल जाएगा का?' वे भड़के।

'बाबा जी आप भले ही अंगूठा छाप होंगे पर आप पर कितने लोगों को पी.एच.डी और डी.लिट जैसी उपाधि मिल गईं तो क्या आपको भारत रत्न नहीं मिल सकता। और हिन्दुस्तान में वैसे भी इसके पहले अनेक बार मरे हुओं को अमर बनाकर भारत रत्न दिया जा चुका है। अगर मिलेगा तो मना मत करना। चुपचाप धर लेना। दोनों मिलकर बाँट लेंगे। वरना जिंदगी भर आप चदरिया बुनते रह जाओगे, मैं कलम घिसते।' मैंने समझाने की कोशिश की। बाबा ने मेरी तरफ घूरकर देखा और बोले- 'रे मूर्ख! माया के फेर में खुद पड़ा है और मुझे भी लपेट रहा है। मैं तुझे कोई समोसे-छोले खिलाकर आशीर्वाद बरसानेवाला बाबा दिख रहा हूँ जो लखपति या करोड़पति बना दूँगा। मैं संत हूँ, संत कबीर! गुरु रामानंद जी के चरण स्पर्श से मुझे ज्ञान मिल गया था। तू मुझे रतन-फतन के मोह-माया में बाँधना चाहता है। सुना नहीं- माया महा ठगिनी हम जानी।'

'हाँ बाबा, सच बात है। पर इस बार आपका शहर पूरे संसार में चर्चा में है। अमेरिका से लेकर यूरोप तक सब तरफ चर्चा है कि इस बार काशी में भारत का प्रधानमंत्री पैदा होने वाला है। फिर आपकी तो पौ बारह समझो। बस एक बार वो प्रधानमंत्री बन जाए। उसके पास विकास की ऐसी चाबी है कि आपकी पाँचों उँगलियाँ घी में और सिर...। अमेरिका और यूरोप की गोरी-गोरी लौंडियाँ भी आपकी बुनी हुई बनारसी साड़ियाँ पहनकर डिस्को डांस करेंगी। आप अपने को पिछड़ी जाति का बताते हो ना, वह भी अपने को पिछड़ी जाति का ही कहता है। सब बड़े नाराज हैं उससे। उसकी तो नहीं पता पर आपकी जाति? मेरा प्रश्न अधूरा रोक ही वे बिफर पडे- 'तू फूहड़ पैदा हुआ और फूहड़ ही मरेगा। मैंने कहा है ना कि जाति न पूछो साधू की, पूछ लीजिए ज्ञान। मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान।'

अबकी बार मैं शांत न रह सका। फूट पड़ा-'कौन जमाने में जी रहे हो बाबा जी? ये हजार साल पहले वाली काशी नहीं है जब रामानंद जी आपको चेता गये थे। ये इंडिया है बाबा इंडिया। अब गुरु दक्षिणा नहीं दी जाती। चेला गुरु को अंगूठा दिखा जाता है। ये आपकी काशी नहीं आज का बनारस है जहाँ पोली में रखिए। ज्ञान कम होगा या ना होगा तो भी चलेगा। पर इधर जाति का होना बहुत जरूरी है। ये आपके जमाने का रुढ़िवादी जातिवादी पिछड़ा देश भारत नहीं, आज का इंडिया है- धर्म निरपेक्ष, जाति निरपेक्ष। यहाँ अब ज्ञान और प्रतिभा की नहीं जाति की आवश्यकता है क्योंकि-यहाँ घोड़ों को नहीं मिलती घास और गधे खाते हैं च्यवनप्राश।'

बाबा जी निरुत्तर होकर कहीं विलीन हो गये। शायद उन्हें यह उलटबासी पसंद नहीं आयी थी। ■

घिरी हुई है कालिमा, अमावसी यह रात
क्षीण हुई है चाँदनी, उम्मीदी सौगात
हाथ उठाकर दौड़ता, देख लिया मन चाँद
आशा में जीवन पला, पल दो पल की बात

-- महातम मिश्र गौतम गोरखपुरी

कर्मों का फल

गुरमेल सिंह भमरा, लंदन

मैं एक फोटोग्राफर हूँ। बहुत सी धार्मिक पत्रकाओं के लिए काम करता हूँ। धार्मिक स्थानों और बड़े बड़े साधू संतों और धर्म उपदेशकों की फोटो लेने के साथ-साथ उनके उपदेशों को भी लिखकर फोटो के साथ किसी न किसी पत्रिका को भेजता हूँ। धर्म मेरा प्रिय विषय हैं। यूँ मैं कोई धर्मी नहीं हूँ लेकिन भगवान् के बारे में जानने के लिए जिज्ञासा के कारण महात्मा बुध की तरह भटक रहा हूँ। महात्मा बुध ने तो जंगलों में घोर तपस्या करके भी देख लिया था लेकिन मैं ऐसी तपस्या नहीं करता। मेरी तपस्या तो तीर्थों में भटकना ही है। सभी धर्मों के प्रचारकों और इन धर्मों के श्रद्धालुओं को देख सुनकर लगता है जैसे सब अपने-अपने राग अलाप रहे हैं। शान्ति किसी को नहीं है, हर कोई अपने धर्म को ही सही मानता है। झगडे होते हैं, दूसरे को काफर बोलते हैं। नए-नए गुरु स्वामी उत्पन हो रहे हैं और मैं जानना चाहता हूँ कि भगवान् कहाँ हैं!

वैसे तो मैं बहुत घूम चुका हूँ लेकिन हरिद्वार मैंने तब देखा था, जब बहुत छोटा सा था। अब मैंने फिर से तैयारी कर ली। ट्रेन का टिकट लिया, अपने कैमरे और नोटबुकों से बैग भर लिया। जब मैं हरिद्वार पहुंचा तो गंगा के किनारे रौनक ही रौनक थी। लोग डुबकियां लगा रहे थे और हरिओम-हरिओम की ध्वनि चारों ओर गूंज रही थी। जगह-जगह साधू संतों के आगे श्रद्धालु माथा टेक कर आशीर्वाद ले रहे थे। जटाधारी साधू भभूत धारण किये सुखासन में बैठे चिलमों के सरूर से भगवान् की ओर बिरति लगाए बैठे थे। जगह-जगह कथा प्रवचन हो रहा था और लोग श्रद्धा से सुन रहे थे। मेरा कैमरा तीव्र गति से अपना काम कर रहा था। बंदरों से बचता हुआ मैं आगे बढ़ रहा था। कुछ महात्माओं से कुछ प्रवचन भी सुने, लेकिन पत्रिका के लिए कुछ खास नसीब नहीं हुआ। खाते-पीते, घूमते-घूमते शाम हो गई। थककर अपने होटल के कमरे में आकर सो गया।

कुछ दिन बाद, एक शाम को गंगा की सैर करते-करते बहुत दूर निकल गया और एक जगह एक महात्मा को देखा, जिनके आगे कुछ श्रद्धालु बैठे उनके साथ वार्तालाप कर रहे थे। महात्मा जी के साफ-सुथरे चिट्टे कपड़े और बढ़ी हुई दाढ़ी और उनके तेज को देखकर कुछ अजीब सा आकर्षण महसूस हुआ और मैं उनके आगे बैठ गया। कुछ देर बाद महात्मा मेरी ओर मुखातब होकर बोले, 'भगत जी! पहले फोटो ले लो, फिर बातचीत करेंगे।' हैरान हुआ मैं फोटो लेने लगा। फोटो लेने के बाद मैं उनके आगे बैठ गया। महात्मा, जिनको लोग स्वामी जी बोल रहे थे से मैंने सीधा सवाल किया, 'स्वामी जी! कर्मों के फल को आप कैसे डिफाइन करेंगे?' स्वामी जी की बोल चाल से मैंने समझ लिया था कि वे पढ़े लिखे स्वामी हैं।

स्वामी जी मुस्कराकर बोले, 'भगत जी इसके अर्थ बहुत सीधे हैं, पिछले जनम में जो हमने किया था, उसी के हिसाब से हमने यह योनि पाई है।'

मैं बोला, 'स्वामी जी क्या हमको यकीन है कि पिछले जनम में हम इंसान ही थे जबकि हमें यह बताया जाता है कि ८४ लाख योनि के बाद हमें मानुष जनम मिलता है?'

स्वामी जी कुछ संजीदा हो गए और बोले, 'भगत जी, अच्छे बुरे काम हम हर योनि में करते हैं, मसलन, बहुत से जानवर दूसरे जानवरों को मारकर खा जाते हैं, इसकी सजा तो उन्हें मिलेगी ही।' मैंने कहा- 'स्वामी जी, जब भगवान् ने उन जानवरों की खुराक ही मांस तय कर दी तो वोह मांस तो खाएंगे ही। हाथी इतना बड़ा होकर भी मांस को मुंह नहीं लगाता, इसलिए वोह तो हमेशा दूसरे जनम में मानुष जनम ही पायेगा।'

स्वामी जी बोले, 'बेटा ! यह सब समझने के लिए तर्क का रास्ता छोड़ना होगा। ये बातें समझने के लिए धार्मिक होना पड़ता है, वरना कुछ समझ नहीं आएगा।'

मैंने फिर सवाल कर दिया, 'स्वामी जी, एक बात मुझे बहुत खटकती है कि अक्सर लोग कहते हैं कि जनम मरण भगवान् के हाथ में है। फिर कुछ धर्मों के लोगों में ज्यादा बच्चे होते हैं और कुछ लोगों में कम और साथ ही हम फैमिली प्लैनिंग के लिए बहुत कुछ करते हैं और हम अपनी मर्जी के मुताबिक बच्चे पैदा करते हैं, तो इसमें भगवान् की मर्जी तो रही नहीं।'

स्वामी जी हंस पड़े और बोले, 'बेटा! मैंने पहले ही कह दिया कि यह आध्यात्मिक बातें समझने के लिए धार्मिक होना पड़ेगा।'

कुछ देर हमारी बातें होती रहीं और बहुत से श्रद्धालु भी हमारी बातों का आनंद ले रहे थे लेकिन मेरे मन को सन्तुष्टता नहीं हुई और मैंने स्वामी जी से सीधा सवाल ही कर दिया, 'स्वामी जी! आप सांसारिक जीवन छोड़कर यहां गंगा किनारे कैसे पधारे?'

स्वामी जी खामोश हो गए, कुछ देर बाद बोले, 'बेटा! तुमने देखा ही है कि यहां कितने सन्यासी, कितने साधू और कितने डेरे हैं। ये सब लोग अपना-अपना इतिहास पीछे छोड़कर मोक्ष प्राप्ति के लिए यहां आकर अपने-अपने ढंग से प्रभु के गुण गाते हैं, इससे पहले कि तुम मेरे बारे में पूछो, मैं खुद ही बता देता हूँ।'

मैंने कुछ और फोटो लिए और स्वामी जी बोले, 'कभी मेरा भी घर था, मेरी माताजी का देहांत हो चुका था, मेरी सर्विस अच्छी थी, दो बच्चे थे और साथ में बूढ़े पिताजी रहते थे। मेरी पत्नी मेरे पिताजी को बहुत तंग करती थी, पिताजी को दुखी देखकर मेरा मन उदास रहता था। कभी-कभी पिताजी घर छोड़ने की बात कह देते तो मन और भी दुखी होता, एक दिन तो पत्नी मुझे मजबूर करने लगी कि मैं अपने पिताजी को किसी आश्रम में छोड़ आऊं। बात इतनी बढ़ी कि एक दिन मैं पिताजी को एक वृद्ध आश्रम में छोड़ आया।

कभी कभी मैं पिताजी को मिल आता था और कुछ पैसे भी दे देता था। कई महीने गुजर गए, एक दिन मेरी तबीअत कुछ ठीक नहीं थी और मैं काम से जल्दी घर आ गया। पत्नी कहीं गई हुई थी, घर में आते ही मुझे कुछ-कुछ शराब की दुर्गन्ध आई, तभी मोबाइल बज उठा, आवाज चारपाई के नीचे से आ रही थी। नीचे पड़ा एक मोबाइल फोन बज रहा था और कुछ देर बाद बन्द हो गया, मैं मोबाइल को उठा कर देखने लगा। देखते देखते मेरी आँखों के आगे अँधेरा छाने लगा। मेरी पत्नी की सेल्फीज किसी पराये मर्द के साथ बहुत ही ऐतराज योग्य हालत में थीं। ऐसे में कोई मर्द क्या कर सकता है, कोई भी समझ सकता है। कोई एक घंटे बाद मुझे कुछ होश आया और कुछ पैसे लेकर हरिद्वार की ट्रेन में बैठ गया। यहां आकर बहुत महापुरुषों से मिलन हुआ और आखिर में मैंने समझ लिया कि इस जगत में हर कोई अपने अपने कर्मों का फल भोगने आया है।' स्वामी जी कुछ चुप हो गए।

मैंने कहा, 'स्वामी जी! आपकी पत्नी तो गुमराह हुई थी, लेकिन बच्चों को आपने क्यों सजा दी?'

स्वामी जी बोले, 'बेटा! इस संसार में हर कोई अपने-अपने कर्मों का फल भोगने आया है। मेरी पत्नी को बच्चों की परवरिश खुद ही करनी पड़ेगी और सारी जिन्दगी तकलीफों से गुजारनी पड़ेगी, उसके लिये यह अच्छा ही होगा कि वोह इस जिन्दगी में ही अपने पापों का फल भुगत ले, प्रायश्चित कर ले ताकि अगले जनम में दुखों से छुटकारा मिल जाए।'

स्वामी जी चुप हो गए और मुझे भी और सवाल करने की हिम्मत नहीं हुई। मैंने स्वामी जी को हाथ जोड़कर नमस्कार की और अपना बैग लेकर अपने होटल में आ गया। सुबह ट्रेन में बैठकर घर आ गया। मेरी पत्नी बोली, 'कहिये कोई स्कूप मिला?'

मैंने कहा, 'अबकी बार तो मुझे ज्ञान हुआ है कि हम सभी अपने-अपने कर्मों का फल भोग रहे हैं।' फिर मैंने हंसकर बोला, 'अरी बीवी! ये जो चोर, खूनी, घूसखोर और ब्लैकमार्किटिये हैं, इनको बुरा-भला नहीं कहना चाहिए क्योंकि सभी अपने-अपने कर्मों के फल के हिसाब से कर रहे हैं।'

बीवी जोर से हंसने लगी और बोली, 'आपके इन चोरों, खूनियों, घूसखोरों और ब्लैकमार्किटिओं को तो मोदी जी दुरुस्त कर रहे हैं और यह नोटबंदी उसी का हिस्सा है ताकि ये लोग इसी जनम में अपने पापों का फल भुगत लें और अगले जनम में इनके लिए कोई समस्या ना रहे।'

अब हम दोनों हंसने लगे, मैं बोला, 'अरी मेरी प्यारी बीवी, तुमने तो हरिद्वार गए बगैर ही कर्मों के फल के बारे में जान लिया। तुम आज से मेरी बीवी ही नहीं हो, बल्कि गुरु भी हो!' और फिर हम दोनों जोर-जोर से हंसने लगे। ■

अपनी जिन्दगी को/शिद्दत के साथ जीने की
मेरी हमेशा होती है/पुरजोर कोशिश
मकसद होता है/हर लम्हे को जीना
अपने वजूद की सुनना/अपने जज्बातों को समझना
पर जाने क्यों ऐसा होता है
बेकार जाती है... मेरी हर कोशिश
कुछ नहीं होता हासिल/दूर ही रह जाती है मंजिल
अन्दर ही अन्दर घुटता हूँ/सवाल करता हूँ खुद से
मै अक्सर तन्हाई में/आता है जबाब जेहन से
सन्नाटे भी देते हैं आवाज/सुना भी जा सकता है जिसे
बस जरूरत होती है
एक अदद कोशिश की
दमदार कोशिश की...
समझ लेता हूँ इशारा
कोशिश करता हूँ पाने की
एक बार फिर मंजिल...

-- राजेश सिन्हा

जैसे सूरज की किरणों के प्यार भरे स्पर्श से
खारे पानी की बूंदें/वाष्प का रूप लेकर
उन्नत राह पर चल देती हैं
शीतलता के प्यारे स्पर्श से शुद्ध जल बन जाती हैं
सावन की बूंदों के स्पर्श से
मिट्टी भी महक जाती है
सीप के मुंह में आने से
बूंद मोती बन जाती है
पारस के छू लेने से
लोहे की धातु भी
सोना बन जाती है/मैं कितना भी बुरा हूँ
तू मुझे एक बार प्यार से छू के तो देख
मैं भी कुछ बन जाऊंगा/प्यार में वो शक्ति है जो
कुदरत को हिला दे/तेरा एक प्यार भरा आलिंगन
शायद मुझे भी 'इंसान' बना दे

-- जय प्रकाश भाटिया

मेरी कविता ने कहा-/कहाँ गए वे शब्द
जिन्हें कभी तुम हर घड़ी/रटते थे वक्त वेवक्त
गूँज उठती थी हड़बड़ी/हाथ मेरे थे व्यस्त
आकर पीछे से पकड़/कर देते थे ध्वस्त
चींख उठते थे तवे हमारे/रोटी की झंकार अलग
दाल बेचारी छलक छलक कर
करती थी गुणगान अलग
शर्म हया की दुविधा में
करवट लेती थी ललक पलक
कहाँ गए वे लटके झटके
कहाँ गयी प्रिय प्रखर कलम

-- महातम मिश्रा गौतम गोरखपुरी

सब हथेलियाँ जख्मी हैं
हाथ आसमान से ऊँचे
मीनारों के आगे फैले हुए
क्या करें? अब गरीबों को
दूसरों की रोटी छीनने का
सलीका भी तो नहीं आता

-- अमित कु.अम्बष्ट 'आमिली'

आज कुछ प्रज्ज्वाल लपटें उठ रही हैं मन के अंदर
आज कुछ कंपित हुआ है जैसे भीतर का समंदर
टूटते हुए तिलिस्मों का बयान लिख रहा हूँ
मैं बदलते रंग धरती आसमान लिख रहा हूँ
शब्द जैसे ढाल बनकर भाव जैसे काल बनकर
हो रहा है समर इनमें धार का औजार बनकर
वज्रघातों से है छलनी रोज छाती हो रही जो
वेदना के निकट बैठी आत्मा भी रो रही जो
क्षीण कर दूँ विदीर्ण कर दूँ
या लगा दूँ आग ही मैं
शमशीरों के बीच बैठा
मैं मयान लिख रहा हूँ
मैं बदलते रंग धरती
आसमान लिख रहा हूँ

-- सौरभ कुमार दुबे

ईश्वर ने भी इस नारी का सदा किया सम्मान
धन की देवी लक्ष्मी शक्ति दुर्गा की पहचान
हर परीवार का अनमोल गहना है नारी शक्ति
हर घर को स्वर्ग बनाए करके अब हरी भक्ति
बलिदान जिनकी भावना है उनको नारी कहते
नारी शक्ति का सम्मान स्वयं ईश्वर भी करते
अजन्मे बालकों का पालन अपने पेठ में करती
अपने ममता तले
हर बच्चों का ब्रह्मांड रचाती
नौ महीने तक हर कष्ट उठाकर
सहती है नारी
कभी बेटी तो कभी पत्नी
और कभी माँ है नारी

-- राज मालपाणी

ना जाने क्यों, लोग फैलाते हैं गंदगी
अपने आचार-विचार व्यवहार से
दूसरों को सताने के भाव से
फिर क्यों उखड जाते हैं उनसे
जब उस गंदगी का एक छींटा
उड़कर खुद उन पर आ गिरता है
प्रकृति की बेरहम मार से
कितना कड़वा किन्तु शाश्वत यह सच है
जो बोया है वही मिलेगा भविष्य में
कर सको तो कर देखो लाख जतन
पर हमेशा नहीं बचोगे, वक्त की मार से

-- पूर्णिमा शर्मा

जीवन पति-पत्नी का नहीं चलता कभी सीधी रेखा में
दोनों के बीच वाचा के उग्रबाण होते हैं
जो रूपांतरित होते हैं
ये रूपांतरण हमेशा धनात्मक होता है
भरता है उन्हें
एकात्मता व आनंदोत्सव में
प्रेम को प्रखर करता है
तरंग-आवृत में स्पंदन बदल देता है
आनंदोत्सव वसंतोत्सव में

-- डॉ किरण मिश्रा

माटी के ही तो विभिन्न रूप हैं/भिन्न भिन्न चित्र
उनमें गढ़ी गई मांसलता/उनमें उकेरे हुए उभार
उनका आकर्षण उनकी मोहकता
और उनकी मादकता
कलाकार ने माटी को
कितने रूप दिए हैं
कितना सौंदर्य दिया है
माटी को कितना सजाया है
पुनः माटी होने से पहले...

-- डॉ वेद व्यथित

कभी थमती कभी उभरती
हृदय की उन भ्रमित धड़कनों ने
छेड़ा है फिर मधुर अहसास
जो कहता है बार बार
कह दो! कह दो इक बार
वो जो कहना था तुमको
हमराही से अपने कभी
कह दो न सोचो फिर/न जाने फिर वो हमराही
हमसफर न बनकर राहें/जुदा कर अपनी मंजिल
को तलाशता चला जाए/न फिर लौटे कभी
उस राह पर यहां/तुम उससे मिले थे यूं !

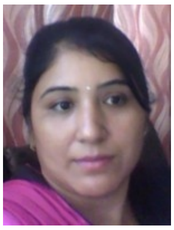

-- कामनी गुप्ता

होली के छंद

होली की मची है धूम, रहे होलियार झूम,
मस्त है मलंग जैसे, डफली बजात है।
हाथ उठा आँख मींच, जोगीड़ा की तान खींच,
मुख से अजीब कोई, स्वाँग को बनात है।
रंगों में हैं सराबोर, हुड़दंग पुरजोर,
शिव के गणों की जैसे, निकली बरात है।
ऊँच-नीच सारे त्याग एक होय खेले फाग,
'बासु' कैसे एकता का, रस बरसात है।
बजती है चंग उड़े रंग घुटे भंग यहाँ,
उमगे उमंग व तरंग यहाँ फाग में।
उड़ता गुलाल भाल लाल है रसाल सब,
करते धमाल दे दे ताल रंगी पाग में।
मार पिचकारी भिगा डारी गौरी साड़ी सारी,
भरे किलकारी खेले होरी सारे बाग में।
'बासु' कहे हाथ जोड़ खेलो फाग ऐंठ छोड़,
किसी का न दिल तोड़ मन बसी लाग में।

-- बासुदेव अग्रवाल 'नमन'

नैन पिचकारी तान-तान बान मार रही,
देख पिचकारी मोहे बरजो न राधिका।
आस-प्यास रास की न फागुन में पूरी हो,
तो मुख ही न फेर ले साँसों की साधिका।
गोरी-गोरी देह लाल-लाल हो गुलाल सी,
बावरे से साँवरे की कामना सी कालिका।
बैन से मना करे, सैन से न ना कहे,
नायक के आस-पास घूम-घूम नायिका।।

-- संजीव वर्मा 'सलिल'

केशव जिनके साथ है! जीत उन्हीं के हाथ है!

जवाहर लाल सिंह

यहाँ 'केशव' को बृहत् अर्थ में लिया जाय। केशव मतलब भगवान कृष्ण और जनता जनार्दन! मोदी जी ने जनता के दिल में जगह बनायी है, जनता को उनसे ढेरों उम्मीदें हैं। उनका अथक परिश्रम काबिले तारीफ है। अमित शाह का राजनीतिक प्रबंधन और जमीनी स्तर पर तैयारी भी पार्टी के लिए सकारात्मक सिद्ध हुई है। जनता की नब्ज पकड़ने में इन्होंने महारत हासिल कर ली है। टिकट बंटवारे से लेकर जमीनी स्तर पर कार्यकर्ताओं की फौज, प्रखर और मुखर प्रवक्ताओं के साथ, स्वयं की वक्तृत्त्व कला से सभी विरोधियों को चारों खाने चित्त कर दिया। जनता जिस भाषा को समझती है उसी की भाषा में संवाद कर अपनी लोकप्रियता ऐसी सुरक्षित कर ली है कि अच्छे-अच्छे नेता उनकी तारीफ में कसीदे काढ़ने लगे हैं। मीडिया और पत्रकार भी उनकी छवि को जनता के बीच में उजागर करते रहे हैं।

सबसे बड़ी बात यह रही कि जिसने भी इन पर भद्दे कमेंट किये उसे भी स्वीकार कर जनता के दिल में जगह बना ली। कुछ नीतियां जो जनता और गरीबों के हित में रहीं, वे हैं जन-धन खाता, उज्ज्वला योजना, मुद्रा योजना, स्वच्छ भारत अभियान, यहाँ तक कि नोटबंदी को भी आम जनता ने सकारात्मक तरीके से लिया। थोड़ी तकलीफ हुई पर यह सफाई भी जरूरी थी। इसका दूसरा प्रभाव यह भी हुआ कि विरोधियों का छिपा हुआ धन मिट्टी के बराबर हो गया। आदरणीय मोदी जी और उनकी पूरी टीम बधाई की पात्र है! साथ ही उम्मीद है कि वे सबका साथ और सबका विकास करेंगे।

जैसा आशातीत परिणाम उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड की जनता ने दिया है, इसे लोकतंत्र की ही जीत कही जा सकती है। मणिपुर और गोवा में भी भाजपा की सरकारें बन चुकी हैं। एक पंजाब को छोड़कर सभी जगह भाजपा विजयी हुई है। भारत में लोकतंत्र की जड़ें गहरी हैं, इसे नकार नहीं सकते। मीडिया के अनुसार उत्तर प्रदेश के दूरस्थ गाँव बिहार के गांवों से भी पिछड़े लग रहे थे। मतलब विकास गांवों तक नहीं पहुँचा है। गरीब के वोट ही निर्णायक होते हैं और गरीबों में एक उम्मीद है कि मोदी जी उनके लिए कुछ कर रहे हैं। नोटबंदी को भी काफी लोगों ने सकारात्मक रूप में लिया। राष्ट्र धर्म और देश भक्ति भी सर्वोपरि है यह भी एक भावनात्मक मुद्दा है। देश हैं तो हम हैं!

आम आदमी पार्टी और अरविन्द केजरीवाल की टीम को अभी और मेहनत करने की जरूरत है। बेबुनियाद दोषारोपण, जबकि आरोपित पार्टी आपसे अधिक ताकतवाला है, इससे बचना होगा। उनके अपने घर के या टीम के कई नेताओं के दुष्कर्म उजागर हुए, जिससे उनकी छवि को धक्का लगा। कुछ भावनात्मक मुद्दे पर उनके बयान से उनकी छवि देशद्रोही या देश विरोधी की बन गयी। दिल्ली में चाहकर भी वे बहुत कुछ नहीं कर पा रहे हैं क्योंकि उनके अधिकार सीमित हैं। पंजाब में सरकार बनाने का सपना चूर-चूर हो गया। गोवा में खाता भी नहीं खुला। टीम वर्क और समर्पित कार्यकर्ताओं की फौज के साथ मनी मैनेजमेंट भी उतना ही जरूरी है। कुछ धनाढ्य वर्ग और वकीलों को भी साथ में रखना पड़ेगा, तभी आगे बढ़ पाएंगे, नहीं तो दिल्ली में सिमटकर रह जायेंगे।

नीतीश कुमार बहुत ही सधी हुई जबान बोलते हैं। अपना काम चुपचाप करते हैं। अभी उनके साथ ज्यादा जनसमर्थन नहीं है, पर सही मायनों में उनका काम बोलता है जो पिछले कार्यकाल में उन्होंने पूरे किये हैं। बीच-बीच में मोदी जी के अच्छे कदमों की तारीफ भी करते रहते हैं। सधे हुए नेता की पहचान यही होती है। विपक्ष आज बहुत ही कमजोर और बंटा हुआ है। सही लोकतंत्र के लिए एक मजबूत विपक्ष का भी उतना ही महत्त्व है जितना सत्तापक्ष का। विपक्षी दलों को एक बार फिर से आत्म मंथन करना होगा।

सपा का पारिवारिक झगड़ा सड़क पर आना। राहुल का साथ, राज्य में कानून व्यवस्था की गिरती हुई स्थिति, एक जाति विशेष और परिवार को विशेष महत्व देने से मुलायम और अखिलेश की छवि खराब हुई। मायावती और मुलायम के पारंपरिक वोट बैंक में भी भाजपा की सेंध लग गयी और लोगों ने जाति धर्म से ऊपर उठकर मोदी जी को स्वीकारा। जनता जिस पर भरोसा करती है दिल खोलकर करती है और जिससे भरोसा टूट जाता है उसे कहीं का नहीं छोड़ती। राष्ट्रीय और धार्मिक मुद्दे के सामने सभी मुद्दे गौण हो जाते हैं।

भाजपा का सोशल इंजीनियरिंग, सबको साथ लेकर चलने की कोशिश, हिन्दू मतों को एकजुट करना, हर मुद्दे को अच्छी तरह अपने हक में भुनाना, कारगर सिद्ध हुआ। बीजेपी अध्यक्ष ने कहा कि इस बार हमें २०१४ से भी बड़ा समर्थन मिला है और देश का गरीब नोटबंदी के फैसले पर बीजेपी के साथ है। अमित शाह ने कहा कि नरेंद्र मोदी आजादी के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय नेता बनकर उभरे हैं। कांग्रेस नेता चिदंबरम ने भी मोदी को सर्वाधिक लोकप्रिय नेता माना है। बीजेपी की विजय यात्रा हिमाचल, गुजरात होते हुए पूर्व और दक्षिण में भी पहुंचेगी।

उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में बीजेपी की ऐतिहासिक जीत के बाद बीजेपी हेडक्वार्टर में आयोजित अभिनंदन समारोह में पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि लोकतंत्र में चुनाव सिर्फ सरकार बनाने के लिए नहीं होते हैं, बल्कि यह लोकशिक्षण का माध्यम भी है। उन्होंने कहा कि अकल्पनीय भारी मतदान के बाद अकल्पनीय भारी विजय होती है, यह पोलिटिकल पंडितों को विचार करने के लिए मजबूर करता है। भावनात्मक मुद्दों के अलावा विकास एक कठिन चुनावी मुद्दा होता है। पिछले ५० सालों में विभिन्न राजनीतिक दल इस मुद्दे से कतराते रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि चुनाव में कौन जीता, कौन हारा, मैं इस दायरे में सोचने वालों में से नहीं हूं। चुनाव का नतीजा हमारे लिए जनता जनार्दन का पवित्र आदेश होता है। जीत के फल के बाद और अधिक नम्र होना हमारी जिम्मेदारी है।

पीएम मोदी ने कहा, 'मैं देश की गरीबों की शक्ति को पहचान पाता हूं और राष्ट्र के निर्माण में गरीबों को जितना ज्यादा अवसर मिलेगा, देश उतना प्रगति करेगा।' गरीब को अगर काम का अवसर मिला, तो वह देश के लिए ज्यादा काम करके दिखाएगा। मध्यम वर्ग का बोझ कम होना चाहिए। एक बार गरीब के अंदर खुद का बोझ उठाने की क्षमता आ जाएगी, तब मध्यम वर्ग का बोझ कम हो जाएगा। प्रधानमंत्री मोदी ने पांचों राज्यों की जनता को धन्यवाद देते हुए कहा कि जिन्होंने वोट दिया भाजपा की सरकार उनकी भी है, जिन्होंने नहीं दिया उनकी भी है। इसलिए वोट दिया कि नहीं दिया यह कोई मायने नहीं रखता। उन्होंने अपने बारे में कहा कि मैं ऐसा पीएम हूं, जिससे पूछा जाता है कि इतनी मेहनत क्यों करते हो। इससे बड़ा जीवन का सौभाग्य क्या हो सकता है।

विनम्रता के एक उदाहरण और देखिए कि उन्होंने अपने सभी नेताओं कार्यकर्ताओं को होली का त्योहार मनाने के लिए दो-तीन दिनों का समय दे दिया। उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री पद के दावेदारों को भी शांत भाव से रहने के लिए समय दे दिया और १६ तारीख को मुख्यमंत्री के चुनाव के लिए समय निर्धारित कर दिया तब तक अखिलेश भी कुर्सी का लाभ ले लें। इसे भी एक प्रकार के विनम्रता ही कही जा सकती है।

अंत में एक बार फिर से मोदी जी और उनकी टीम को बधाई और भारतीय लोकतंत्र की जय! ■

(पृष्ठ २५ का शेष)

मूरख महामूरख

उधर घर जा रहे दीनू को रास्ते में टोकते हुए उसकी पत्नी ने पूछा- 'का जी आपने तो हमको अलमारी छाप पर वोट डालने को कहा था और खुद पंखा छाप पे बटन दबा दिया?'

'अरी ना रे भाग्यवान। हमहुं अलमारी के ही भोट दिए हैं। इ नेतवन सब हम लोगन से पैसा के बदले भोट खरीद कर पांच साल तक हम लोगों को मूरख बनावत रहते हैं। ई बार पैसा और दारू त लेनी ढेरों नेतवा से पर भोटवा देली दोसर ईमानदार प्रत्याशी के।

इस प्रकार भैयाजी लोगन टाइप नेताओं को इस बार हमने मूरख बना दिया! इ बार एकरो लोगन के इ बात बुझा जाइ कि जनता अगर मूरख बा, त नेता महामूरख! हाहाहा...!' दीनू ने पत्नी की जिज्ञासा को शांत करते हुए बताया।

पत्नी को स्पष्टीकरण देते हुए दीनू के चेहरे पर संतोष का भाव पूरी तरह नजर आ रहा था। ■

बाल लेख

आइए कविता लिखना सीखें-२

प्रिय बच्चो, सदा खुश रहो,

आप सभी को भारतीय नववर्ष की शुभकामनायें.

पिछले महीने हमने कविता-लेखन का एक नया प्रयास शुरु किया था. आशा है, आपने इस प्रयास से कुछ सीखा होगा और कविता की कुछ पंक्तियां मन में सोची होंगी.

हमारे एक पाठक रविंदर सूदन ने जन्मदिन पर कुछ पंक्तियां लिख भेजी हैं-

अपने मन को क्या जवाब दूं ?
अपनी बहन को क्या उपहार दूं ?
कोई अच्छा सा फूल होता तो माली से मांगता
जो खुद ही गुलाब हो उसे क्या गुलाब दूं?

होली-

होली आई, होली आई,
रंग-अबीर-गुलाल भी लाई,
प्रेम-रंग में सबको रंग लो,
गुझिया के संग मस्ती छाई.

सर्दी-

सर्दी आई, स्वेटर लाई,
लाई कंबल और रजाई,
टोपी-मफलर रंगबिरंगे,
गजक-रेवड़ी हमको भाई.

चंदामामा-

चंदामामा आए हैं,
साथ चंदनिया लाए हैं,
ढेरों टाफियां लेकर आए,
इसीलिए हमें भाए हैं.

अगली बार आप भी कुछ लिखकर भेजेंगे, इसी आशा के साथ-

आपकी नानी-दादी जैसी,

-- लीला तिवानी

बाल गीत

खेतों में विष भरा हुआ है, जहरीले हैं ताल-तलय्या
दाना-दुनका खाने वाली, कैसे बचे यहाँ गौरय्या?
अन्न उगाने के लालच में, जहर भरी हम खाद लगाते
खाकर जहरीले भोजन को, रोगों को हम पास बुलाते
घटती जाती हैं दुनिया में, अपनी ये प्यारी गौरय्या
दाना-दुनका खाने वाली, कैसे बचे यहाँ गौरय्या?
चिड़िया का तो छोटा तन है, छोटे तन में छोटा मन है
विष को नहीं पचा पाती है, इसीलिए तो मर जाती है
सुबह जगाने वाली जग को, अपनी ये प्यारी गौरय्या
दाना-दुनका खाने वाली, कैसे बचे यहाँ गौरय्या?
गिद्धों के अस्तित्व लुप्त हैं, चिड़ियाएँ भी अब विलुप्त हैं
खुशियों में मातम पसरा है,
अपनी बंजर हुई धरा है
नहीं दिखाई देती हमको,
अपनी ये प्यारी गौरय्या
दाना-दुनका खाने वाली,
कैसे बचे यहाँ गौरय्या?

-- डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

शिशु गीत

१. कुछ खाकर निकलें

गर्मी में जब भी निकलें, कुछ भी खाकर ही निकलें
नहीं लगेगी लू इससे, नींबू पानी पीकर निकलें

२. सादा भोजन

गर्मी में भारी मत खाएँ, सादे भोजन को अपनाएँ
दही छाछ लस्सी को पीकर, हम सब अच्छी सेहत पाएँ

३. रखें रुमाल

कड़ी धूप में जब भी निकलें, सिर पर रखें रुमाल
रहे जेब में संग प्याज भी, अपना रखिए ख्याल

४. पुदीना

गुणकारी है बहुत पुदीना, डाल इसे पानी में पीना
जूस आँवले का जो लेगा, तन-मन से मजबूत रहेगा

५. जलजीरा

गर्मी में पी लें जलजीरा
खूब खाइए ककड़ी-खीरा
लाभ नारियल पानी देगा
ठंडा-ठंडा पेट रखेगा

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

कुल्फी

मां मुझको तो भूख लगी है, पर रोटी का मूड नहीं है
मैं तो कुल्फी ही खाऊंगा, मैं तो बस कुल्फी खाऊंगा
चाहे कुल्फी हो आरेंज, या हो पिस्ते वाली कुल्फी
चाहे कप हो या हो पार्लर, चॉक बार हो पर हो कुल्फी

बंदर

जब मैं उछल कूद करता हूं, ममी कहती 'तू है बंदर'
पर मेरे तो पूंछ नहीं है, मैं कैसे हो सकता बंदर?
मुंह भी मेरा लाल नहीं है, और न ही है बिलकुल काला
ना लंगूर मैं ना ही बंदर, मुझको तो होना है लाला

-- लीला तिवानी

बाल कविताएं

मेरी गुड़िया

मेरी गुड़िया छैल-छबीली, जींस पहनती गहरी नीली
इलू-इलू बोले वह सबको, प्यार बाँटती सारे जग को
काला चश्मा लाल रुमाल, और सुनहरे सुन्दर बाल
जैकिट है फर वाला लाल, शूज पहनकर करे कमाल
आँखें उसकी नीली-नीली, और टॉप है हल्की पीली
कभी खोलती आँखें अपनी, और कभी ढक लेती ढपनी
मटक-मटककर आँख दिखाती, और कभी आँखें मटकाती
ठुमक-ठुमककर नाच दिखाती, सबके मन को बड़ा लुभाती
जब-जब उसका पेट दबाती, सुन्दर-सुन्दर गाने गाती
मुझको प्यारी मेरी गुड़िया, मैं पापा की प्यारी गुड़िया
गुड़िया मुझको प्यारी लगती, मैं पापा को प्यारी लगती
प्यारा-प्यारा जग से न्यारा, सुखमय है संसार हमारा

मेरा गुड्डा

मेरा गुड्डा मस्त कलन्दर, नाचे ऐसे जैसे बन्दर
उछल कूद में ऐसा माहिर, शैतानी उसकी जग जाहिर
एकबार बस चाबी भर दो, फिर उसको धरती पर धर दो
ऊपर नीचे-नीचे ऊपर, कभी नाचता सिर नीचे कर
कभी हाथ से पैर पकड़ता, कभी पैर पर नाक रगड़ता
पैरों को सिर पर रख देता, और हाथ के बल चल लेता
प्यारा गुड्डा करतब करता, तरह-तरह की हरकत करता
कसरत करता दण्ड पेलता, हमें खिलाता और खेलता
त्राटक करता योगा करता, और बहुत से आसन करता
हरकत वह तब तक ही करता
जब तक चाबी का दम रहता
और बाद में शव-आसन कर
शान्त लेट जाता है भू पर
जब-जब भी मैं चाबी भरता
धमा-चौकड़ी तब ही करता

-- आनन्द विश्वास

बाल कविताएं

देखो समय कैसा आया है, सबको भेड़चाल ने बहकाया है
ममी कहती डाक्टर बन जाओ, जाने दिल में क्या आया है
इम्तिहान में पढ़ें कितना हम, हमें रातों को भी जगाया है
पापा कहते वकील बन जाओ, हमें न कोई जान पाया है
पढ़ें कितना हम बताओ, फिर मौसम ने हमें सुस्ताया है
सबको कैसे समझाएं हम यह
हमें तो खेलना कूदना भाया है
मस्ती भरे दिन ना आएंगे फिर
हमने तो बस यही समझाया है
बचपन पर न बोझ डालो इतना
अभी तो मन कोमल मुस्काया है

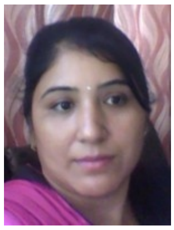

-- कामनी गुप्ता

मुक्तक

बना फूलों से ये गजला करें स्वीकार ये माला
मिटाये गम सभी मेरे इसी में भाव सब डाला
भरोसा है मुझे तेरा तेरे शरणों में आई हूँ
बतादे तूँ कमी मेरी सुधारूँ भाग्य मैं काला

-- बिजया लक्ष्मी

फरेबी लोग ऐसे हैं कि, पल-भर में बदल जाते
जिगर जिनके बने पत्थर, भला कैसे पिघल जाते
महक पाई सुमन से तो, करों में भी चुभे कांटे
मिले कोई गुलिस्तां भी, बिना देखे निकल जाते

-- नीतू शर्मा

तुम्हें क्या है पता मैंने तुम्हें अपना बनाया था
नहीं कोई मिला तुझको पलकों पे सजाया था
तू इतनी दूर है मुझसे पर अब भी नजर आती
न था कोई मेरा अपना तुझे दिल में बसाया था

-- रमेश कुमार सिंह 'रुद्र'

बाल पहेलियाँ

(१) तुमको तुमसे जो मिलवाता, सच्ची-सच्ची बात बताता
टँगकर रहता दीवारों पर, टेबल पर भी यह दिख जाता
(२) तीन लाठियाँ बलशाली, कभी नहीं रहतीं खाली
बारह संख्याओं के बीच, करें रात-दिन रखवाली
(३) हरी-भरी पर घास नहीं, बिल्कुल भी ये खास नहीं
फिसला देती सबके पैर, इसका कुछ विश्वास नहीं
(४) लगें गुफा सी मगर निराली, जब भी हों ये बैठी खाली
कोई उँगली मत दिखलाना,
चीज नहीं ये मस्तीवाली
(५) जलता मगर प्रकाश न देता
टिम-टिम करता जाता
लाल देह इसकी होती है,
बिजली की खबरें बतलाता

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

(इन पहेलियों के उत्तर पृष्ठ ७ पर देखिए।)

बाल कविता

एक किसान दुःखी था मन में, चारों बेटे लड़ते रहते
इस प्रकार लड़ते रहने से, सारे काम बिगड़ते रहते
एक बार रोगी होने पर, चारों बेटों को बुलवाया
एक-एक लकड़ी दे उनको, उसे तोड़ने को उकसाया
झटपट लकड़ी सबने तोड़ी, बोले-‘काम सरल है यह तो’
बापू बोले- ‘लकड़ी चार लो
इनका गट्ठर एक बांध लो’
गट्ठर बन जाने पर उनको
कोई बेटा तोड़ न पाया
‘मिलकर रहने में ताकत है’
ऐसा उनकी समझ में आया

-- लीला तिवानी

लघुकथा: एक और एक ग्यारह

एक बडे अस्पताल के प्रतीक्षालय में दो औरतें बैठी थी। दोनों में बातचीत शुरू हुई तो पता चला कि नयना विधवा है और उसका बेटा कैंसर से पीडित है। कई अस्पताल घूमने के बाद यहाँ आज घर गिरवी रख कर आई है, लेकिन रकम कम पड गई है तो डाक्टर इलाज करने से मना कर रहा है। आज उसके गोद से लाल ही नहीं सर से छत भी छिनने वाली है।

वहीं सुनयना के पेट में दो महीने का बच्चा है, उसके शराबी पति की दोनों किडनी फेल हैं। धन दौलत की कमी नहीं है, पर किडनी मिलना ही समस्या है।

कुछ देर में ही दोनों ने एक-दूसरे की समस्या का समाधान प्रस्तुत कर दिया। नयना अपनी किडनी देने के लिए तैयार हो गई और सुनयना उसके बेटे का इलाज कराने और गिरवी घर छुड़ाने के लिए। दो इकाईयां मिलकर अब दहाई को भी पीछे छोड़ चुकी हैं।

-- कुमार गौरव

इन्द्रधनुषी अनुभूतियों का अनुपम संग्रह

पूनम माटिया की तीसरी कृति ‘अभी तो सागर शेष है...’ उनकी चुनी हुई अतुकान्त और तुकान्त कविताओं का अनुपम संग्रह है। डॉ कुँअर बेचैन के शब्दों में- ‘पूनम माटिया ने नम आँखों और भीगी हुई पलकों से कविता की माटी को भिगोया है और संवेदना की मूर्ति को गढ़ा है। ऐसी मूर्ति जिसमें भावना के नए-नए रंग भरे गये हैं, जिसको काव्य के मानकों पर ठीक से तराशा गया है, सुन्दर नाक-नक्श वाली बनाया गया है, जिनमें नये-नये प्रतीकों की छवि और सुंदर बिम्बों की संयोजना की गयी है, जो बोलती सी नजर आती हैं और जिनका हर बोल अनमोल है।’

संग्रह की लगभग सभी कविताएँ उत्तम कोटि की और गम्भीरता से लिखी गयी लगती हैं, जिनमें लम्बी कविताओं के साथ लघु कवितायें या क्षणिकायें भी सम्मिलित हैं। कविताओं में अनेक सामाजिक, धार्मिक और पारिवारिक विषयों पर भी अपनी भावनायें व्यक्त की गयी हैं।

कविताओं की भाषा सरल किन्तु परिष्कृत है। छपाई उत्तम है और मुखपृष्ठ अत्यन्त आकर्षक है। हार्डकवर को दृष्टि में रखते हुए संग्रह का मूल्य भी उचित रखा गया है।

-- विजय कुमार सिंघल

कविता संग्रह : अभी तो सागर शेष है...
रचनाकार : पूनम माटिया
प्रकाशक : अमृत प्रकाशन, दिल्ली
पृष्ठ संख्या : ६८, मूल्य : रु. २५०

एक अभिनव एवं उत्कृष्ट साझा संकलन

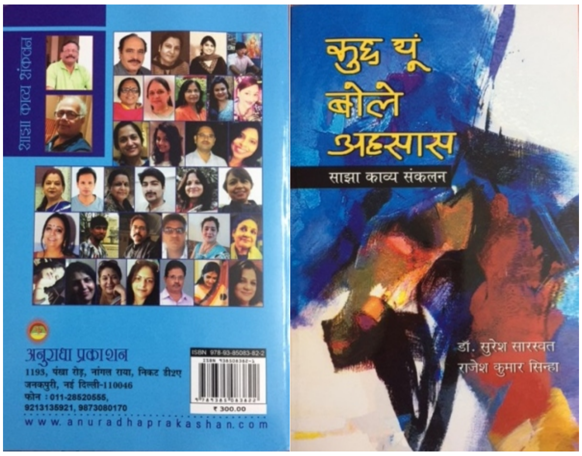

‘कुछ यूं बोले अहसास’ फेसबुक के माध्यम से बने ‘छन्द, मुक्त अभिव्यक्ति मंच’ से जुड़े हुए ३४ रचनाकारों का पहला साझा संकलन है, जिसे सम्पादक द्वय डॉ सुरेश सारस्वत एवं राजेश कुमार सिन्हा ने अपने श्रेष्ठ सम्पादन से उत्कृष्ट रूप दिया है। रचनाकारों में अधिकांश नवोदित हैं, तो कई पहले से यत्र-तत्र प्रकाशित हो चुके हैं।

संकलन की अधिकांश रचनायें अतुकान्त हैं, तो कई तुकान्त और गजलें भी हैं। प्रत्येक रचनाकार को इसमें पाँच पृष्ठ दिये गये हैं। इनमें रचनाकार के संक्षिप्त परिचय के साथ उनकी चुनी गयी रचनायें छापी गयी हैं।

साझा काव्य संकलन : कुछ यूँ बोले अहसास
सम्पादक : डॉ सुरेश सारस्वत, राजेश कु. सिन्हा
प्रकाशक : अनुराधा प्रकाशन, नई दिल्ली
पृष्ठ संख्या : १८६, मूल्य : रु. ३००

संकलन की अधिकांश कवितायें उत्तम श्रेणी की हैं और उनके सम्पादन में भी पर्याप्त परिश्रम किया गया लगता है, क्योंकि वर्तनी आदि की गलतियाँ बहुत कम हैं। अगर रचनाकारों के सम्पर्क सूत्र जैसे दूरभाष संख्या, ई-मेल पते आदि भी दिये जाते, तो और भी अच्छा रहता।

आज के समय में जब प्रकाशकों द्वारा रचनाकारों के शोषण की कहानियां आम हैं, ऐसे प्रयास स्तुत्य और सराहनीय हैं। संकलन की छपाई अच्छी है और मुखपृष्ठ सामान्य होते हुए भी आकर्षक है। इसका मूल्य भी पृष्ठ संख्या को देखते हुए उचित रखा गया है।

-- विजय कुमार सिंघल

दोहे

एक पुत्र ने माँ चुनी, एक पुत्र ने बाप।
माँ बापू किसको चुने, मुझे बताएँ आप।।
खाली बर्तन देखकर, बच्चा हुआ उदास।
फिर भी माँ से कह रहा, भूख न मुझको प्यास।।
अम्मी अब्बू ही नहीं, रोए तुलसी नीम।
देख लाल की हरकतें, आँगन की तकसीम।।
नैन नैन से जब मिले, गढ़े नए आयाम।
चाहे राधा-कृष्ण हों, चाहे सीता-राम।।
मुझे अकेला मत समझ, पकड़ न मेरा हाथ।
मैं तनहा चलता नहीं, दोहे चलते साथ।।

-- अमन चाँदपुरी

राबिया अम्मा

निशा गुप्ता

यह कहानी है राबिया अम्मा की। मेरे गांव में मेरी पड़ोसी थी। तब मैं काफी छोटी थी। बात की गहराई को नहीं समझती थी। आज लगभग तीस साल बाद राबिया अम्मा की बातें मेरे दिल में हलचल मचा रही है। इसलिए इस कहानी के माध्यम से उसे निकालने की कोशिश कर रही हूं क्योंकि अम्मा की यह बातें हर माँ को अपनी सी लगेंगी।

रामपुर में अम्मा के पति जिन्हें हम चचा कहा करते थे। उनका अपना व्यवसाय था। अच्छे उच्च श्रेणी के लोगों में उनकी गिनती थी। तीन बच्चे थे। दो बेटियां और एक बेटा। उनकी बीच वाली बेटी रूबी मेरी हम उम्र थी। हम दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते थे पर स्कूल अलग-अलग थे। रूबी भी पढ़ने में बहुत अच्छी थी। हम दोनों ही अपने अपने स्कूल में प्रथम आते थे। रूबी से छोटी सबिया थी। वह भी पढ़ने में बहुत अच्छी थी। राबिया अम्मा को हम 'अम्मा' इसलिए बोलते थे क्योंकि उनके तीनों बच्चे अम्मा कहते थे। अपनी माँ को हम 'माँ' कहकर ही पुकारते थे।

राबिया अम्मा का एक बेटा था जो रूबी और सबिया से बड़ा था। उसका नाम रिहान था। रिहान भाईजान भी पढ़ने में काफी अच्छे थे। रिहान से रूबी सात साल छोटी थी। जब रिहान इंजीनियर बन के अमरीका गए, उस समय हम और रूबी मैट्रिक में पढ़ते थे और दो साल छोटी होने के कारण सबिया आठवीं में थी। अम्मा ने तीनों बच्चों को बहुत मेहनत से बहुत अच्छी तरह पाला था। चचा अपने व्यवसाय में व्यस्त रहते थे। धन की कोई कमी नहीं थी। अम्मा के तीनों बच्चे अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में पढ़ते थे। उन स्कूलों की फीस बहुत अधिक थी इसलिए हम जैसे मध्यम श्रेणी के लोग उसमें नहीं पढ़ सकते थे। वे तीनों हर वक्त अंग्रेजी बोलते थे। अंग्रेजी के ही गाने व फिल्म देखते थे। अम्मा और चचा अपने बच्चों को देखकर बहुत खुश होते थे।

हम लोग हिन्दी माध्यम के स्कूलों में पढ़ने के कारण अंग्रेजी में थोड़े कच्चे थे, पर पढ़ने में बहुत अच्छे थे। रूबी और सबिया तो छोटी होने के कारण ठीक थी पर रिहान पर अंग्रेजियत का रंग कुछ अधिक चढ़ रहा था। वे अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे थे। प्रतिदिन अम्मा और रिहान का किसी न किसी बात पर झगड़ा होता रहता था। उस समय हम इतना ध्यान नहीं देते थे।

पर आज एक एक बात मुझे याद है। रिहान भाईजान ने एक बार तो हमारे सामने अम्मा पर हाथ भी उठा दिया था। अम्मा बहुत रोती थी। वे अम्मा से कहते थे तुमने हमारे लिए क्या किया है। सब अब्बू ने ही किया है। तुमने हमें जन्म देकर कौन सा बड़ा काम कर दिया है। सभी मां बच्चों को जन्म देती हैं। रिहान भाईजान अम्मा से नफरत करते थे। इसका कारण क्या था। हमें मालूम नहीं था। रूबी और सबिया भी अम्मा की अपेक्षा अब्बू को ज्यादा सम्मान देती थी। जब तब अम्मा को जवाब देती थी। घर का कोई काम भी नहीं करती थी। घर का सारा काम अम्मा अकेले करती थी। अम्मा पढ़ी-लिखी थी। उनको एक स्कूल में नौकरी भी मिल गई थी पर रूबी के अब्बू ने नहीं करने दी।

आज इतने सालों बाद सब ज्ञात हुआ कि चचा अम्मा को बहुत दबाकर रखते थे। हमेशा ही उनको डांटते रहते थे। तीनों बच्चों को उनके खिलाफ भड़काते रहते थे, इसलिए रिहान तो अम्मा को एक नौकर जैसा समझते थे। अम्मा बहुत छोटे घर की थी। रूबी के अब्बू को अपने धन का बहुत घमंड था। धीरे-धीरे उनके तीनों बच्चे भारतीय संस्कृति से बहुत दूर होते गए। रूबी और सबिया तो बेटी होने के कारण अम्मा को थोड़ा बहुत मानती थीं पर रिहान का अत्याचार तो देखा नहीं जाता था। अम्मा रो-रोकर कहती अपना खून ही ऐसा है। शिकायत भी करूँ तो किससे और किसकी? मेरा बेटा है अल्लाह मियाँ उसको लम्बी उम्र दे, उसको समझदार बनाये। अम्मा का मन अपने बेटे के लिए तड़पता था।

अमेरिका जाने के बाद तो वह पूरी तरह अम्मा को भूल गया। अम्मा कभी फोन करती तो फोन पर ही उनसे लड़ता था। उनको बुरा-भला कहता था, क्योंकि अब्बू ने बचपन से ही अम्मा के विरुद्ध इतना भरा था कि वह भूलता नहीं था। जबकि अम्मा में कोई बुराई नहीं थी। वे बहुत समझदार व अनुशासित महिला थी। उन्हें बच्चों का समय से सोना समय से उठना पसंद था जबकि उनके तीनों बच्चे इसके विपरीत थे। वे पूरी-पूरी रात जागकर फिल्म देखते रहते और सुबह दो बजे तक उठते थे। कभी-कभी तो नहाते भी नहीं थे। अम्मा पांचों वक्त की नमाज पढ़ती थी। उन्हें अपने बच्चों का यह रवैया बिल्कुल पसंद न था पर उनके अब्बू उनका साथ देते थे। इसलिए तीनों बच्चे अम्मा से चिढ़ते थे।

रूबी मेरी सहेली होने के कारण मेरा उनके घर में आना जाना लगा रहता था। मैं जब भी रूबी के घर जाती तब घंटों अम्मा से बातें करती। वे पूछती थी बेटा तुमने नहा लिया, तब मैं बताती थी कि हमारे पापा तो सुबह पांच बजे नहाकर नाश्ता बनवाते हैं। बिना नहाये बनाने से वे नहीं खाते हैं। अम्मा बहुत खुश होती और कहती तुम्हारे पापा बहुत अच्छे और समझदार हैं। देखो दिन चढ़ आया, ये तीनों तो अभी तक सो रहे हैं। मैं कहती, आप रूबी को उठा दीजिए तो वे कहती बेटा आज रविवार है, वे लोग दोपहर में उठेंगें। उनको उठाने से अभी घर में कलह हो जाएगी। तू तो बहुत समझदार है। तेरे माँ बाप भी बहुत अच्छे हैं।

उस समय मैं कुछ नहीं समझती थी। पर अम्मा को देखकर लगता था कि अम्मा बहुत दुखी हैं। वे मेरे साथ बहुत सी बातें करती थी। उनकी उस घर में कोई हैसियत नहीं थी। उनसे कोई सलाह मशविरा भी नहीं लिया जाता था। उनके अब्बू का एक छत्र राज्य था। वह हमेशा खोई-खोई सी रहती थी। वे मुझसे बात करके अपना मन हल्का कर लेती थी। बातों ही बातों में उन्होंने मुझे बताया कि उनकी एक भी ऐसी सहेली नहीं है जिससे वह अपने मन की बात खुल कर बता सके। आजकल तो सभी लोग दूसरे के दुख को देखकर हँसते हैं।

वह मुझे अपने बचपन की बातें बताती थी। उनके घर में किसी बात की कमी नहीं थी। सब लोग हँसी खुशी से रहते थे। उनके पिता ने बीस वर्ष की उम्र में उनकी शादी कर दी थी। जब वो बाइस की भी नहीं हुई थी कि रिहान हो गया। उन्होंने तीनों बच्चों को बहुत प्यार से पाला, पर कहीं कोई चूक हो गई, जिसके कारण वे अपने बच्चों को अच्छे संस्कार नहीं दे सकी। उनके बेटे ने अमरीका में एक बच्चे की मां से शादी कर ली थी।

एक दिन फेसबुक में मैंने अपनी पुरानी सहेली रूबी को देखा तो मैं बहुत खुश हुई। उससे फोन नंबर लिया। बात की तो पता चला कि वह दिल्ली में है। सबिया लंदन में है। जब मैंने अम्मा और चचा के बारे में पूछा तो वह जोर-जोर से रोने लगी। फिर जो कुछ उसने बताया उसे सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ। उसने बताया कि अम्मा का इंतकाल हुए तो लगभग पंद्रह साल हो गए। अम्मा के जाने के बाद अब्बू अकेले घर में रहते हैं। रिहान भाईजान और सबिया तो बाहर रहते हैं। मैं कभी-कभी अब्बू के पास चली जाती हूँ। आजकल उनकी मानसिक अवस्था भी ठीक नहीं है।

रिहान ने हम सबके साथ रिश्ता खत्म कर दिया है। उनका कभी फोन भी नहीं आता है। वे तो अम्मा के इंतकाल पर भी नहीं आए थे। आज अब्बू को अपने किये पर पछतावा होता है। इसलिए वे शरीर से अधिक मानसिक रोगी हो गए हैं। अकेले अपने आप से बातें करते रहते हैं। अम्मा की फोटो के आगे रोते रहते हैं। अपने गुनाह की माफी मांगते हैं।

रूबी की बातें सुनकर मैं कांप उठी और सोचने लगी यह पुरुष प्रधान समाज कब तक औरत को दबा कर रखेगा। कोई न देखे पर खुदा सबके कर्म देखता है। हर किसी को जीते जी ही अपने कर्मों का फल इस धरती पर भोगकर जाना पड़ता है। अम्मा ने अच्छे कर्म किये थे, इसलिए बिना कष्ट भोगे चली गई और अब अब्बू अपने किये पर पछताकर विक्षिप्तावस्था में दिन काट रहे हैं। पुरुष वर्ग क्यों नहीं समझता है कि नारी पुरुष की सखी-संगिनी है, सहचरी है, वह भी इंसान है, उसकी भी ख्वाहिशें हैं। वह भी पुरुष की तरह फलक छूना चाहती है। इन सबसे बढ़कर वह भी प्रेम और सम्मान चाहती है। अब फैसला आपके हाथों में है कि आप कैसा पुरुष बनना पसंद करेंगे। ■

शादी के लड्डू

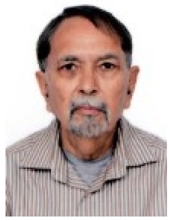

रविन्दर सूदन

मैने कॉलेज की पढाई सफलतापूर्वक पूरी कर ली। पढ़ना इसलिए जरूरी है जिससे कोई काम मिल सके। काम भी मिल गया। घर के अनेकों काम, अपना लंच बनाना, फिर ऑफिस जाना, मैं काम पर देर से पहुँचता था, बॉस नाराज होता था। मेरा एक रिश्तेदार था, एक बार मैंने उसे पैसे उधार देने से मना कर दिया था। वो शायद मन ही मन मुझसे बदला लेने की सोच रहा था। उसने सोचा बदला लेने के लिए इससे अच्छा और क्या हो सकता है कि इसकी शादी करवा दी जाए। मेरी शादी करा के मेरी परेशानी बढ़ा दे, लड़की वालों की परेशानी दूर कर दे। लड़की वाले और मैं दोनों उसके एहसान से दबे रहेंगे। उसने लड़की की फोटो दिखाई। मैं जिंदगी में पहली बार शादी कर रहा था। शादी का कोई तजुर्बा नहीं था। झट से हाँ कर दी।

बॉस शादी जैसे बेकार से काम के लिए छुट्टियां देने के लिए राजी नहीं था क्योंकि उसका कहना था 'हमें मालुम है जन्नत की हकीकत, लेकिन दिल को बहलाने को गालिब ये ख्याल अच्छा है।' मैने उसे यकीन दिलाया की शादी के बाद काम पर ठीक वक्त पर पहुँच जाया करूंगा, क्योंकि अभी खाना बनाने में ही टाइम लग जाता है। बॉस ने बड़ी कुटिल मुस्कान से मुझे देखा, उस वक्त मैं उसकी मुस्कान का मतलब न समझ सका। लीजिये जनाब शादी भी हो गयी। वह एक स्कूल में टीचर थी। स्कूल से आकर जब वह सब्जी बनाने के लिए प्याज काटती तो उसकी आँखों में आंसू देखकर मेरी आँखों में आंसू आ जाते।

एक दिन मैने उससे कहा कि 'हम दोनों काम करते हैं फिर तुम ही अकेली क्यों खाना बनाओ, मैं भी तुम्हारे साथ खाना बनाने में मदद किया करूंगा।' वह यह सुनकर हैरान रह गयी। कहने लगी कहीं ऐसा भी होता है, लोग क्या कहेंगे, नहीं नहीं, मैं ऐसा सोच भी नहीं सकती। मैं ठहरा क्रांतिकारी, अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने की मैंने भी ठान ली थी। मैंने कहा, 'नहीं मैं लोगों की परवाह नहीं करता। आज से घर के काम हम दोनों मिलकर किया करेंगे।' मेरी श्रीमती बड़ी ही शर्मीली लजीली संस्कारों वाली थी। मेरे घर पहुँचने पर ही खाना खाती, मेरे बिना खाना न खाकर भूखी रहती। मैं एक क्रांतिकारी विचारों वाला नौजवान था। मैंने कहा कि भूखी ना रहा करो, मुझे कभी-कभी देर हो जाती है खाना खा लिया करो। मैं जब घर पहुँचता तो श्रीमती जी सब्जी, प्याज, टमाटर, हरी मिर्च, लहसुन, धनिया वगैरह बाहर निकालकर रख देती थी। मैं सब काट देता था। यह रोज का नियम हो गया।

एक दिन कहने लगी मुझसे आटा नहीं गूंथा जाता, मैं ठहरा क्रांतिकारी, आटा भी गूंथ के रख दिया। एक दिन लहसुन प्याज टमाटर सब काट दिया कि श्रीमती जी आएंगी खुश हो जाएंगी कि बिना कहे सब कर दिया। श्रीमतीजी आयी, देखा, कहने लगी कितने दिन हो गए सब्जी काटते-काटते यह भी नहीं पता कि भिन्डी में टमाटर नहीं डाला जाता। क्रांतिकारी की क्रान्ति सब धरी कि धरी रह गयी। कभी धनिया भूल जाता कभी टमाटर काटकर रख देता। एक दिन सब्जी प्याज वगैरह बाहर नहीं रखे थे, मैंने पूछा सब्जी कहाँ है श्रीमती जी ने कहा कि देख लीजिये फ्रिज में ही कहीं होगी। धीरे-धीरे रोज का नियम हो गया कि सब्जी टमाटर प्याज लहसुन वगैरह आप ही निकालिये, आप ही काटिये।

एक दिन श्रीमती जी किसी काम कि वजह से देरी से घर पहुंची। मुझे भूख लगी थी मैंने सोचा अपनी रोटी बनाकर खा लूँ। सोच रहा था श्रीमती जी कितनी खुश होंगी कि मैने अपनी रोटी आप बनाकर खा ली। श्रीमतीजी पहुंची, मैंने शुभ समाचार सुनाया। श्रीमतीजी कहने लगी मेरी रोटियां बनायी कि नहीं? मैं तो शर्म से पानी-पानी हो गया, मैंने कहा जब तक आप कपड़े बदलती हो खाना आपको तैयार मिलेगा। दूसरे दिन श्रीमती ने काम से आते ही पूछा खाना बन गया क्या? मैंने कहा नहीं आटा भी गूँथना था, सब्जी भी खत्म थी, बाजार जाना पड़ा, इसलिए देर हो गयी। अच्छा आगे से ध्यान रखा करो श्रीमतीजी का कहना था।

ऑफिस समय पर पहुँचने में फिर देरी होने लगी। बॉस ने पूछा कहो पहले तो अकेले थे अब देरी क्यों होती है? मैंने उत्तर दिया सर अब दो लोग हैं देरी तो होगी ही। बॉस को उस दिन पहली बार खुलकर हँसते देखा। मैं तो उनकी उस हंसी को देखकर अपने गुस्से को पी गया क्योंकि गुस्सा पीने की कला अब मुझे अच्छी तरह आ गयी थी। बॉस की कुटिल मुस्कान का मतलब मुझे उस दिन समझ में आया। लिखते-लिखते काफी वक्त हो गया है। अभी तक झाडू पोंछा नहीं हुआ। श्रीमती जी आती ही होंगी। कहेंगी- 'क्या करते रहे दिन भर? आपसे इतना भी नहीं हो सका?' ■

बौराती प्रकृति, कुत्ते और राम लुभाया

अशोक मिश्र

फागुन में पहले प्रकृति बौराती थी। फिर आम्र मंजरियां बौराती थीं। फिर पोपले मुंह और पिलपिले शरीर वाले सत्तर-पचहत्तर साल की उम्र वाले 'बाबा' बौराते थे। इनके बौराते ही भौजाइयां बौरा जाती थीं। फिर तो देवर, सालियां-सलहजें, ननद-ननदोई के बौराने का एक सिलसिला ही शुरू हो जाता था। हंसी-ठिठोली के नाम पर श्लील-अश्लील का जैसे भेद ही मिट जाता था। फागुनी बयार शरीर में मादकता, कामुकता या छिछोरेपन का ऐसा संचार करती थी कि सारी मान-मर्यादाएं बिला जाती थीं। फागुनी बयार अब भी चलती है, लेकिन अब बाबा, भौजाइयां, साली-सहलजों की बजाय कुत्ते बौराते हैं, राजनीति बौराती है, नेता बौराते हैं और बौराते हैं मेरे वरिष्ठ पत्रकार साथी राम लुभाया।

वैसे राम लुभाया तो बारहों महीने बौराये रहते हैं। अभी कल की ही बात है। सुबह आफिस आए, तो मैंने लपकर अभिवादन किया, 'सर जी गुड मार्निंग!' राम लुभाया ने अपनी पीठ पर टंगा छोटा सा बैग मेज पर पटका और घूमकर झल्लाते हुए बोले, 'क्या है? अरे हो गया एक दिन गुड मार्निंग... अब रोज-रोज आते ही मेरे सिर पर काहे दे मारते हैं गुडमार्निंग? एक तो रात भर मोहल्ले के कुत्तों ने सोने नहीं दिया, सुबह थोड़ी देर के लिए झपकी भी आई, तो एक मरघिल्ली सी खबर छूटने की वजह से सुबह-सुबह संपादक जी हौंकते रहे। जीना हराम हो गया है मेरा।'

जैसे बरसात में किसी बच्चे के छू लेने पर केंचुआ सिकुड़ जाता है, उसी तरह राम लुभाया की बात सुनकर मैं सिमट गया। शायद राम लुभाया को अपनी गलती का एहसास हुआ। बोले, 'यार... क्या बताऊं। इधर जब से चुनावी बयार बहने लगी है, तब से सारे मोहल्ले के कुत्ते मेरे दरवाजे पर रात दस-ग्यारह बजे के बाद इकट्ठा हो जाते हैं। दरवाजे के सामने का खुला हिस्सा चुनावी सभा में तब्दील हो जाता है। कुत्ते मुंह उठाकर मानो भाषण देने लगते हैं। कोई नाली के इस पार, तो कोई नाली के उस पार। अगर उनकी भाषा मेरी समझ में आती, तो शायद यही कहते होंगे- 'प्यारे कुत्ता भाइयो! हमारी पार्टी की सरकार बनी, तो विकास की हड्डियां सबको चूसने को मिलेंगी। सबको कहीं भी टांग उठाकर सूसू करने की स्वतंत्रता होगी।'

राम लुभाया अब अपनी रौ में आ गए थे। बोले, 'तब तक दूसरा मुंह उठाकर भौंकता है- झुट्ठे हैं ये विकास की बात करने वाले। ये हम कुत्तों को छोटा-बड़ा, नस्ल, रंग के नाम पर लड़ाते हैं और मौज करते हैं। हमारी सरकार में किसी के साथ भेदभाव नहीं होता है। हमारी सरकार बनी, तो सबको किसी के भी घर में घुसकर रोटी और बोटी चुराने की पूर्ण स्वतंत्रता होगी।'

राम लुभाया थोड़ी देर सांस लेने के लिए रुके। फिर बोले, 'रात में जब देखा कि इस कुत्ता सभा के चलते सोने को नहीं मिलेगा, तो मैंने उठाया डंडा। चुपके से गेट खोला और पिल पड़ा इन कुत्तों पर। खूब लठियाया। तीनों गली के कुत्तों को खूब धोया। ससुरो! मेरा दरवाजा छोड़कर कहीं और जाकर करो अपनी चुनावी सभा। आदमी अगर कुत्तों के चुनाव में वोट दे सकता, तो मैं कतई तुम कुत्तों को वोट नहीं देता।' इतना कहकर राम लुभाया फिस्स से हंस दिए। उनके साथ-साथ मैं भी खीसें निपोरने लगा। ■

गोवा में लौटा असली शिगमो योद्धा

डॉ. शुभ्रता मिश्रा

११ मार्च २०१७ को आए पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव के नतीजों ने इस बार की होली को उन लोगों के लिए और भी अधिक रंगमय बना दिया, जो ऐसे ही नतीजों की उम्मीद लगाए हुए थे। पंजाब में आम आदमी पार्टी को झटका देकर कांग्रेस को बहुमत मिलना और उत्तरप्रदेश व उत्तराखण्ड में भारतीय जनता पार्टी की अद्भुत, अकल्पनीय और अविश्वसनीय विजय ने लोगों में अभूतपूर्व उत्साह भर दिया। गोवा और मणिपुर अपनी असमंजस की स्थितियों के चलते अलग तरह से चर्चा में रहे।

लेकिन कांग्रेस द्वारा गोवा में बीजेपी की बनने जा रही सरकार में अवरोध डालने के लिए मामले को जिस तरह सुप्रीम कोर्ट में घसीटने का असफल प्रयास किया गया, उसने गोवा और पर्रिकर को पूरे देश की सुर्खियां बना दिया। अचानक से मनोहर पर्रिकर फिर एक बार अखबारों से लेकर न्यूज चैनलों और सोशल मीडिया के हीरो बन गए। उनकी सादगी और राजनैतिक त्याग के चर्चे देशभर में फिर से होने लगे। इस सबसे बढ़कर गोवा के लोग खुशी से झूम उठे, क्योंकि गोवावासियों का सुपरहीरो अब पूरी तरह से उनका अपना मनोहर बनकर वापस आने वाला था।

गोवा का शिगमोत्सव पूरे भारत में लोकप्रिय उत्सव है। दूर-दूर से पर्यटक शिगमोत्सव परेड देखने आते हैं। यह उत्सव होली के दूसरे दिन से शुरु होकर १४ दिनों तक चलता है। होली के दिन गोवावासियों को स्पष्ट हो गया था कि मनोहर पर्रिकर ने रक्षामंत्री पद से इस्तीफा दे दिया है और वे गोवा के चौथी बार मुख्यमंत्री बनने जा रहे हैं। इस खबर ने १४ मार्च से मनाए जाने वाले शिगमोत्सव में मानो जान डाल दी। वैसे भी शिगमोत्सव मनाने के पीछे एक कारण यह बताया जाता है कि गोवा के योद्धा दशहरा के समय रणभूमि में युद्ध करने के लिए घरों से निकलते हैं और दुश्मनों को पराजित कर विजयी योद्धा बनकर होली पर वापस आते हैं। उनके वापस आने की प्रसन्नता और उनको सम्मान देने के लिए पूरे गोवा में शिगमोत्सव मनाया जाता है। मनोहर पर्रिकर भी एक सच्चे योद्धा की तरह देश के रक्षामंत्री बनने नवम्बर २०१४ में गोवा छोड़कर गए थे और उनकी वापसी इस साल शिगमोत्सव के दिन हुई। वे सही मायनो में शिगमो योद्धा के रूप में वापस आए हैं।

उन्होंने भारत के रक्षा मंत्री के रूप में स्वयं को एक शिगमो योद्धा साबित किया है। रक्षा मंत्री रहते हुए उन्होंने भारतीय सेना के बल में वृद्धि कराने के उद्देश्य से कई बड़े रक्षा सौदे किए। नियंत्रण रेखा (एलओसी) पारकर पाकिस्तानी कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में की गयी सर्जिकल स्ट्राइक जैसे अदम्य साहस वाले निर्णय ने उनको एक असली विजयी शिगमो योद्धा के रूप में प्रतिष्ठित किया है। पर्रिकर के रक्षामंत्री से फिर मुख्यमंत्री बनने को राजनीतिक विश्लेषक, विचारक, बुद्धिजीवी और आलोचक अपनी अपनी तरह से विवेचना कर रहे हैं। लेकिन गोवावासी को इन सब राजनैतिक बातों से कोई लेना देना नहीं हैं, क्योंकि उनके लिए इससे अधिक खुशी की बात और कोई नहीं है कि उनका चहेता नेता फिर से उनका पूरा हो गया है। पर्रिकर की सादगी और अपनेपन के स्वभाव ने गोवा के हर व्यक्ति के हृदय में अपने लिए स्थान बनाया हुआ है।

पर्रिकर अपनी सादगी के लिए जाने जाते हैं। रक्षा मंत्री रहते हुए गोवा आने पर वे गोवावासियों से उतनी ही शालीनता और सहजता से मिलते रहे हैं। एक आधी बांह वाली कमीज और साधारण पैंट पहनने वाले, शादी समारोह हो या विधान सभा चुनाव की लाइन हो आम लोगों के साथ आम आदमी की तरह लाइन में खड़े दिखने वाले, आम चाय की दुकान पर स्कूटर खड़ा करके चाय पीते दिखने वाले, निजी जीवन में पत्नी मेधा के कैंसर से निधन का गहरा आघात मौन सहन करने वाले, अपने दो किशोर बेटों के एकल अभिभावक की निष्ठापूर्ण भूमिका निभाने वाले, गोवा के मापुसा में जन्मे, १९७८ में आईआईटी बॉम्बे से बीटेक और एमटेक, देश के किसी राज्य के मुख्यमंत्री बनने वाले पहले आईआईटी स्नातक, मुख्यमंत्री बनने के बाद भी अपने पुश्तैनी घर में रहने वाले मनोहर पर्रिकर हमेशा अपनी साधारण जीवनशैली के लिए चर्चित रहते हैं।

उनका राजनैतिक सफर आईआईटी से निकलने के बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से जुड़ने से शुरु होता है। २६ साल की छोटी सी उम्र में संघचालक, राम जन्मभूमि आंदोलन के दौरान उत्तरी गोवा में प्रमुख संगठनकर्ता, १९९४ में पहली बार विधायक, १९९९ में गोवा विधान सभा में नेता प्रतिपक्ष, २४ अक्टूबर २००० में गोवा में पहली बार बनी भाजपा सरकार के मुख्यमंत्री, फिर २००२ में मुख्यमंत्री और २०१२ में अकेले पूर्ण बहुमत से जीतकर गोवा के मुख्यमंत्री बनने से लेकर भारत के एक सशक्त रक्षा मंत्री बनने तक की उनकी कर्मठशील राजनीतिक यात्रा में पर्रिकर ने अथक परिश्रम करते हुए देश की जो सेवा की है, उसने ही उनको गोवा की ही नहीं वरन् देश की जनता का चहेता नेता बनाया है। ऐसा लोकप्रिय नेता जब गोवा का मुख्यमंत्री बनकर शिगमो योद्धा की तरह वापस गोवा आया है, तब गोवावासी खुशी से झूमकर उनके शौर्य के सम्मान में घोड़ेमोड़नी नृत्य कर रहे हैं।

पर्रिकर के जाने से गोवा कुछ अधूरा सा लगता था। हांलाकि इस सबके बावजूद भी उन्होंने गोवा को हर सम्भव समय दिया था। रक्षा मंत्री बनने के बाद भी गोवा में पर्रिकर की मांग हमेशा रही। उनकी लोकप्रियता इसी से समझी जा सकती है कि विधान सभा चुनाव से पहले भाजपा को कई बार यह आश्वासन देना पड़ा था कि अगर गोवा की जनता चाहेगी तो पर्रिकर को केंद्र से राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में वापस भेजा सकता है और अंततः केंद्र को वैसा करना भी पड़ा। राजनैतिक और अदालती कसौटी पर खरे उतरने के बाद १४ मार्च, २०१७ को मनोहर पर्रिकर ने चौथी बार गोवा के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। गोवा बहुत ही प्रसन्न है क्योंकि वो फिर मनोहरमय हो गया है। ■

हास्य-व्यंग्य

मूरख बनाम महामूरख

विनोद कुमार विक्की

'का हो दीनू दे देलस भैयाजी को वोट?' मतदान कर वापस लौट रहे दीनू दंपति से चौराहे पर खड़े भैया' के कार्यकर्ता दयाल ने पूछा।

'हां दयाल बाबू। भैयाजी के ही दे देली भोट! पंखा छाप पर बटनवा दबा के आ रहल बानी हम दोनों प्राणी! आखिर वोटवा खातिर आपने दु सौ रूपैया आरू एगो पौवा अंग्रेजी जो दिये थे। त भला कैसे दे देते दोसर को भोट?' दीनू ने दयाल को भरोसा दिलाते हुए कहा।

'अरे उ त भैयाजी ही भेजवाए थे तुमको देने के लिए! दुगो भोट पर दु सौ रूपया! केतना ध्यान देते है भैयाजी तुम लोगों पर और बदले मे मांगे क्या! एगो अदना सा भोट!' दयाल ने अन्य कार्यकर्ताओं के सामने दीनू को समझाते हुए कहा। 'ठीक है भाई अब घर जा।' दीनू अपनी पत्नी के साथ घर की ओर चल देता है।

दीनू के वहां से निकलने पर दयाल अन्य कार्यकर्ताओं से बतियाने लगा 'अच्छा मूर्ख बनाया दिनवा को! भैयाजी ने एक वोट के बदले दो सौ रूपया बांटने को कहा था और हमने दो सौ रूपया नगद और सत्तर रूपये की दारू में दोनों प्राणी का वोट खरीद लिया और एक सौ तीस रूपया बचा भी लिया !हाहाहा...!'

दयाल संतुष्ट होते हुए बोला, 'चलो अच्छा है भैयाजी को वोट मिल गया, दीनू को फोकटिया नोट मिल गया और हम लोगों का भी खर्चा-पानी का जुगाड़ लग गया इ चुनाव में।'

(शेष पृष्ठ २० पर)

(दूसरी और अंतिम किस्त)

अन्ततः

ज्योत्सना सिंह

'हम सब बहुत बुरे हैं, किसी को उनकी परवाह नही। बेचारी हर वक्त काम में लगी रहती हैं, किसी ने कभी उनके लिए कुछ नही सोचा।'

'उसने कभी कुछ कहा ही नहीं। मुझे कैसे पता लगता?'

'आप तो कुछ कहिये ही मत, जब मैंने आपसे उन्हें डॉक्टर के पास ले चलने को कहा था, आपने तब भी टालने की कोशिश की थी, ये कहकर कि क्रोसिन दे दो बुखार उतर जाएगा।' वह बिफर पड़ी। 'अगर माँ को कुछ हुआ तो मैं आपको कभी माफ नही करूँगी' वह फूट फूटकर रो पड़ी। ग्लानि से अरुण का भी चेहरा स्याह पड़ गया था।

माँ के सर पर हाथ फेरते हुए अवनि के आँसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे। उसे माँ के साथ गुजारे लम्हे याद आ रहे थे। कैसे उन लोगों की छोटी-छोटी इच्छाओं को पूरा करने के लिए माँ दिन-रात लगी रहती थी। विश्वविद्यालय में संगीत की व्याख्याता मृणाल ने नौकरी सिर्फ इसलिए छोड़ दी थी कि अरुण को उसका नौकरी करना पसंद नहीं था। उनका कहना था कि जब वो भरपूर कमा लेते हैं, तो उसे धक्के खाने की क्या जरूरत। संगीत मृणाल की आत्मा में रचा बसा था। जब गाने बैठती थी तो लोग मंत्रमुग्ध होकर सुनते रह जाते थे। वह कई बार आकाशवाणी पर भी अपने गाने का कार्यक्रम दे चुकी थी। पर ससुराल में आपत्ति की गई, तो उसने घर की खुशी के लिए वह भी त्याग दिया।

महिलाओं में बैठकर बेमतलब की गप्पों में उसका मन कभी नहीं रमा, इसलिए कोई न कोई काम निकालकर वह बैठ जाती। बच्चों को भी अच्छी शिक्षा और संस्कार देने में उसने कोई कोताही नहीं बरती। हर जगह वह प्रशंसा की पात्र थी। सारी कॉलोनी में यही कहा जाता था कि पांडे जी की बहू जैसा कोई नहीं हो सकती। इतनी पढ़ी-लिखी और योग्य है, पर मजाल है कि कभी किसी को इस बात का जरा भी अहसास करवाए। बोलती है तो जैसे फूल झरते हैं। यह सब सुनकर बच्चों और अरुण का सर गर्व से तन जाता।

ऐसा नहीं कि अरुण को उससे प्रेम न हो, पर हर कदम पर साथ-साथ कदमताल करती हुई पत्नी को भी कोई जरूरत हो सकती है, यह उन्होंने सोचा ही न था। उन्होंने कल्पना भी न की थी कि उसे भी कभी कुछ हो सकता है। लगता था जैसे वह यूँ ही चिरयुवा रहकर हमेशा सबकी आवश्यकताओं का ध्यान रखती रहेगी।

जब चाहे किसी को भी खाने पर निमंत्रित कर लिया, फिर घर में सामान है या नहीं, इसकी फिक्र में वह हलकान होती रहे। दिन भर अपना काम करके जब घर आते, तो उम्मीद करते कि वह उनकी सेवा में लग जाए। देर रात तक क्रिकेट मैच देखते तो कई बार उन्हें कॉफी और स्नैक्स की जरूरत पड़ती, तो उससे फरमाइश करते और वह बिना शिकन लाए उठ जाती।

याद आया कि एक दिन उसे तेज बुखार था और उसने खाना नहीं बनाया था। बाहर कुछ खा आने को बोला, तो दूध पीकर सोने चल दिए। हारकर वह गिरते पड़ते उठी और जल्दी से उनके लिए खाना बनाया। एक बार किसी सम्बन्धी के देहान्त होने के कारण उसे चार पाँच दिन को बाहर जाना पड़ गया। जाने से पहले वह खाना बनाने वाली का इंतजाम कर गई थी। पर लौटी तो देखा उन्होंने सिर्फ जैसे बनाने वाली पर अहसान करते हुए मुँह झूठा ही किया था। उसके आने के बाद बोले कि तुम कहीं मत जाया करो, सारा घर अस्त-व्यस्त हो जाता है। लोग उसे बुला-बुलाकर थक जाते पर उसके पास एक दिन का भी अवकाश नहीं था।

आज ये सब बातें याद करके उन्हें बहुत ग्लानि हो रही थी। स्वयं पर शर्म आ रही थी। एक सेविका भी अवकाश लेती थी, परन्तु पत्नी नामधारी प्राणी के लिए साँस रहते अवकाश की कोई व्यवस्था नहीं थी। वह कैसे इतने निष्ठुर हो सकते हैं। 'मुझे आपसे शिकायत है, आपने कभी मुझे कुछ नहीं दिलाया।' शुरू में कई बार उसने शिकायत की थी।

'तुम भी हद करती हो मृणाल, जो चाहे खरीदो, मैंने कभी रोका है तुम्हें?' वह बिफर पड़े थे 'अरे घर की मालकिन हो तुम!'

'मालकिन हूँ या बंधुआ मजदूर? जिसके सिर्फ कर्तव्य हैं, अधिकार कुछ नहीं। मेरा भी मन करता है कि कभी बिना माँगे मेरे लिए कोई कुछ करे। कभी आप मुझे कोई सरप्राइज दें।'

'यार ये बेकार के चोंचले मुझे नहीं आते, क्या अधिकार नहीं है तुम्हें? जो चाहे करो, जहाँ चाहे जाओ। मैंने कभी रोका है तुम्हें?'

'रोकेंगे तो वो सारी ड्यूटी कैसे बजाऊँगी जो करती हूँ।'

'देखो कमाना मेरा काम है, जिसे अच्छे से कर रहा हूँ मैं, तुमसे तो नहीं कहता कि कमाकर लाओ। अब घर का मोर्चा तो तुम्हें ही सम्हालना पड़ेगा।'

'मैं कब घर की जिम्मेदारियों से पीछे भागी हूँ, पर मेरा भी तो मन करता है कि कोई मेरी फिक्र करे, मेरे लिए कुछ करे, मुझे कुछ खास अहसास करवाए।'

'अगर तुम चाहती हो कि मैं मजनूँ बनकर दिन रात तुम्हारे पीछे चक्कर लगाऊँ, तो ये मेरे वश की बात नहीं। बी मेच्योर मृणाल, ये टीन एजर जैसी हरकतें अब शोभा नही देतीं।'

'आप कभी मेरे मन को नहीं समझेंगे।' वह नाराज होकर चली गई थी।

अपने असंवेदनशील व्यवहार को याद करके वह बेचैनी से सारी रात चहलकदमी करते रहे। काश कि उन्होंने उसके मन को समझा होता। काश कभी उसकी इच्छा अनिच्छा को समझा होता, तो आज ये हालात न होते। बरसों से उसने कोई शिकायत करना छोड़ दिया था। फायदा भी क्या था। शिकायत वहाँ की जाए जहाँ कोई फरियाद सुनने बैठा हो। जहाँ कोई ध्यान ही न दे वहाँ व्यर्थ ही सर फोड़ने से क्या फायदा। बच्चे अपनी माँ को बहुत चाहते थे। उनके लिए वह दुनिया की सबसे अच्छी माँ थी।

वह पत्नी के बिना घर की कल्पना करने लगे। अगर मृणाल न रही तो क्या करेंगे वह। एक-एक छोटी से छोटी बात पर तो आश्रित थे वह उस पर। उन्हें बड़ा गुमान था खुद पर, कि बहुत अच्छा कमाते हैं वह, परिवार की प्रत्येक आवश्यकता को पूरी करने में सक्षम। अक्सर न चाहते हुए भी ये ख्याल आ जाता था कि वह आश्रित है उनकी, इसलिए उसे उनके मिजाज के अनुसार कार्य करना चाहिए। पर जब उसके बिना जीवन की कल्पना की तो सिहर उठे। सच्चाई यह थी कि वे स्वयं आश्रित थे उस पर एक अक्षम शिशु की तरह। उनका एक क्षण भी गुजारा न था उसके बिना। तभी उसकी हालत बिगड़ने लगी, अस्पताल में हलचल मच गई। नर्स ने जल्दी से डॉक्टर को बुलाया और एक अफरा-तफरी का माहौल बन गया। 'शी इज सिंकिंग, आपलोग बाहर जाइये।' मुआयने के बाद डॉक्टर ने कहा। सभी कमरे से बाहर निकल आये।

अवनि के चेहरे पर तनाव के भाव थे। फ्लाइट पकड़कर बेटा भी आ चुका था। बच्चों से नजर चुराते हुए अरुण डबडबाई आँखें लिये बैठे थे। उन्हें भली प्रकार अहसास था कि अगर मृणाल को कुछ हुआ तो दोनों बच्चों की दृष्टि में वह अपराधी साबित हो जाएंगे। वह हमेशा के लिए उनकी नजरों से गिर जाएंगे। इससे भी बढ़कर प्रश्न यह कि वे स्वयं कैसे जियेंगे? एक-एक पल भारी गुजर रहा था। उन्हें दम घुटता सा महसूस हो रहा था। उसके न रहने पर कौन उनकी परवाह करेगा। छी, अब भी वह अपने लिए ही सोच रहे हैं। अपनी सोच पर वह लज्जित हो उठे। सदा का नास्तिक मन बारम्बार प्रभु से प्रार्थना कर उठा।

'हे ईश्वर, मेरी मृणाल को जीवन दे दे, मेरे अपराधों का दंड मुझे दे, उस बेचारी ने किसी का क्या बिगाड़ा है। मैंने बहुत अन्याय किया है उसके साथ, बस एक मौका दे दे मुझे, अपनी गलती सुधारना चाहता हूँ। मैं उसे अब बहुत सम्हालकर रखूँगा, उसकी हर ख्वाहिश पूरी करूँगा।' उनक चेहरा आँसुओ से तर हो गया था। उनके परिवार के सभी सदस्य उपस्थित थे पर कोई उनसे हमदर्दी नहीं जता रहा था। हर एक की निगाह में वह सबसे बड़े अपराधी थे। जी चाह रहा था कि कोई आकर उन्हें तसल्ली दे, कहे कि फिक्र मत करो, सब ठीक हो जाएगा। पर कोई नहीं था पास। अब जाकर अहसास हुआ कि पत्नी का उनके जीवन में क्या महत्व था। वही थी जो उनका मान रखती थी।

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

जंगल में मंगल

आरती तिवारी

एक उनींदी दोपहर में डायरी के पन्नों से एकाएक मेरा बचपन यादों की खिड़की से झाँककर मुस्कुराता है, और मैं भाव-विभोर हो एक आर्द्र हंसी हंसने लगती हूँ। बचपन के इस कोलाहल में झरनों का संगीत, और रसीले आमों की मीठी सुगन्ध मुझे बैचेन करने लगी है। जो पीछे छूट गया उसे भुला देने के छोड़ देने के सिवा कोई चारा नही हमारे पास, पर आज मैं अपनी स्मृतियों को पीछे खूब पीछे अपने बचपन की ओर मोड़ देना चाहती हूँ, वो बुला रहा है मुझे हिला-हिला कर, झंझोड़-झंझोड़ कर और मैं अपनी कल्पनाओं के हिंडोले में सवार हूँ जैसे कि वो एक टाइम मशीन हो, और मुझे ले चली हो मेरी मातृभूमि की गोद में।

ये मेरे स्कूल का बगीचा है, क्यारियों में गेंदा, गुलाब, सेवंती के फूलों पर बहार है। गुड़हल की लाल लाल सुंदर चेनें ऐसी लटक रही है जैसे इनमें से अब्बी के अब्बी रस टपक पड़ेगा। स्कूल के गेट से अंदर आते ही दायीं तरफ है हमारा ये बगीचा जिसके प्रवेश-स्थल पे ही माली काका ने एक क्यारी ऐसी बनाई है, जिसकी पहली पंक्ति में ही उगे छोटे छोटे जामुनी फूलों में तराशा है हमारे स्कूल का नाम 'शासकीय उच्चतर माध्यमिक कस्तूरबा शाला, पचमढ़ी' और उसके नीचे लिखा है- 'जय हिन्द' और इसको सजाया है केसरिया सफेद और हरी डंडियों से। हम सुबह जल्दी ही स्कूल पहुँच जाते जब हमारे माली काका चाय पीने गए होते थे, और जी भरकर ऊछलकूद करते नरम घास पर, फूलों को छूते, कलियों को सहलाते पर तोड़ते कभी नहीं थे, क्योंकि इससे भी जुड़ा एक किस्सा था। हमारे माली काका फूलों से बड़ा प्यार करते थे और हमें असेंबली में रोज प्रार्थना गाने के बाद शपथ दिलवाई जाती थी कि कोई भी बच्चा फूलों को नहीं तोड़ेगा। पर एक दिन हम एक उजली सुबह झूठ बोलकर कि 'आज स्कूल जल्दी ही जाना है, माली काका को बुखार है, बगीचे में पानी देना है, मैडम ने चार बच्चों की ड्यूटी लगाई है' निकल पड़े।

माँ ने आश्चर्य से देखा और हमने नजरें चुरा लीं, कहीं हमारा झूठ आँखों से टपक न पड़े और जल्दी से बैग उठाये दौड़ लगाकर सीधे स्कूल। माली काका पहुंचे नहीं थे, हमने अपनी-अपनी पसन्द के फूल तोड़कर बैग में रख लिए, और जब प्रार्थना स्थल से कक्षा में आये तो हमारे बैग देसी गुलाबों से महक रहे थे। हम भूल ही गए थे हमने फूलों के साथ-साथ खुशबुएँ भी चुराने की भूल कर दी थी। थोड़ी देर में ही वो खुशबू पूरी कक्षा में फैल गई थी। हमें पकड़े जाना ही था। हमें तत्काल ऑफिस में बुलाया गया, वहाँ खड़े माली काका को देखकर हमारी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी। दस उठक-बैठक लगवाकर चेतावनी देकर हमें तो छोड़ दिया गया, पर माली काका से हमने कई दिनों तक नजरें नहीं मिलाई थीं।

उन दिनों कोई भी बगीचा उजाड़ नहीं हुआ करता था, हमारे स्कूल के माली काका हों या स्कूल की हमारी साफ-सफाई करने वाली बाई, छुट्टी की और स्कूल खुलने की घण्टी बजाने वाले भैया- सब अपना काम ईमानदारी और मेहनत से करते थे। स्कूल कितना साफ-सुथरा और चमचमाता रहता था, मेरी आँखों में कितने सारे नजारे हैं, पर सब कितने साफ-झक्क, कहीं नहीं कोई कलुष। हाँ मन की बात सब मुंह पर कह दिया करते थे, कोई ढोंग नहीं करता था आदर्शवादी होने का।

हाँ तो, मैं उन हरी डंडियों की बात कर रही थी, जिससे हमारे बगीचे का 'जय हिन्द' सजा था। इसी के पास थोड़ा हटकर था हमारा प्रार्थना-स्थल जिसे सजाया था जोगी भैया ने। जोगी भैया हमारे पीटी मास्टर थे जिन्हें हम सब जोगी भैया ही कहते थे। अब क्यों और कैसे उनका ये नाम पड़ा ये तो मुझे याद नहीं, पर उनसे शुरू में तो डर लगा था। अरे हाँ हमारे स्कूल की ही एक लड़की साधना ने जिसका घर का नाम कूका था और वो कूका बुलाये जाने से चिढ़ती थी, उसी ने बताया था कि जोगी भैया को उनके दोस्त 'जिन्दा भूत' कहते थे।

जब उसने ये बात बताई तो हम सबने उससे पूछा कि क्यों, और तुम्हें कैसे पता? तब उसी ने कहा कि जोगी भैया उसके पीछे वाली गली में एक कमरा लेकर किराये पर रहते हैं, और वो जब बाहर खेलने जाती है, तो जोगी भैया के दोस्त जो अक्सर उनके घर के बाहर चबूतरे पर इकट्ठे होकर ताश खेलते हैं और दहला पकड़ में हार जाते हैं, तो बेचारे जोगी भैया को कहते हैं- 'इस जिन्दा भूत से जीतना मुश्किल है।' हम आश्चर्य से कूका का मुंह देखते कि इसमें जिन्दा भूत कहने का क्या मतलब? वो हमारा ज्ञान बढ़ाती- 'अरे बुद्धुओ, तुमने देखा नहीं उनका रंग कितना दबा हुआ है!' और हमें लगा हम सच में बुद्धू थे।

कूका ने हमे काले गोरे का भेद बताया और एक दिन मैंने जोगी भैया को पीछे से 'जिन्दा भूत' कह दिया था। पर बाद में जब घर में माँ को मेरी सहेलियों ने ये बात बताई थी और जहाँ तक मुझे याद है वो पहली बार था जब माँ ने मुझे डांटा था और दीवाल की तरफ मुँह करके पंद्रह मिनट खड़ा करके रखा था। इसके बाद मैंने जोगी भैया से माफी मांग ली थी।

हाँ तो मैं बता रही थी कि जोगी भैया ने चूने की लकीरों से हमारे वर्ग विभाजन वहाँ करवा रखे थे, एक कक्षा के बाद दूसरी कक्षा के बच्चे आगे, फिर दो, फिर तीन और चार, और सबसे अन्त में बड़ी कक्षा के बच्चे और ये सोचकर तो मैं अवाक रह जाती हूँ कि जोगी भैया ने खेल-खेल में ही हमारी जिम्मेदारियां आपस में बाँट दीं थीं। हम जाने कब अपने से छोटों को सम्हालने में खुद इतने अनुशासित हो गए कि कोई काम कभी मुश्किल लगा ही नहीं। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का वो निबन्ध तो बाद में बड़ी कक्षाओं में पढ़ा, किन्तु जिन्दगी की इस पाठशाला में कितने सहज सरल स्वाभाविक रूप से सीख गए, वाणी में विनम्रता, छोटों से स्नेह, बड़ों के प्रति सम्मान, हमउम्र से प्रेम ये विचारों में कब समाविष्ट हो गया जान ही नहीं सके।

इन्ही दिनों संभाग स्तर की शैक्षणिक गतिविधियाँ हमारे पचमढ़ी में ही आयोजित की गईं थी, जिनमें मैंने तात्कालिक निबन्ध प्रतियोगिता में दूसरा स्थान प्राप्त किया था और विषय था 'मेरे शिक्षक'। मैंने अपनी प्रथम शिक्षक अपनी माँ शांतिदेवी को बताया था, जिन्होंने मुझे स्कूल में प्रवेश दिलाने से पहले ही अक्षर ज्ञान, अंकों का ज्ञान, कुछ सूक्तियाँ, श्लोक, पक्षियों जानवरों फलों फूलों सबके नाम सिखा दिए थे। ये उन दिनों की बात है जब आमतौर पर माँएं न इतना समझती थीं, न जानती थीं। फिर मैंने नाम लिया था अपनी एक शिक्षक सुधा सूबेदार का जो हमें बहुत अच्छे से पढ़ाती थीं और बहुत प्रेम करती थीं। उनकी जो बात मुझे सबसे अच्छी लगती थी, वो कहती थीं कि मेरा एक ही बेटा है पर मैं उसे भारतीय सेना में भेजना चाहती हूँ। उनका वो रूप मेरे लिए गरिमामयी शिक्षक का ही नहीं, आत्मगौरव से लबालब भरी एक स्त्री का भी था।

देश पर न्यौछावर होने वाले वीरों की शौर्य-गाथाएँ पढ़-पढ़कर मैं अपनी उस छोटी सी उम्र में भी देश प्रेम की भावना से लबरेज रहती थी, और मन ही मन भगतसिंह से प्रेम करने लगी थी। मैं जानती थी कि वो शहीदे-आजम भगतसिंह थे, पर मैं क्या करती उनसे प्रेम न करना मेरे वश में नहीं था।

मेरी नजर से न हो दूर एक पल के लिए
तेरा वजूद है लाजिम, मेरी गजल के लिए

आज बरबस कतील शिफाई का यह शेर उनके लिए जुबान पर आ गया। और ये प्रेम आज भी मुझमें जिन्दा है। मेरी सहेलियाँ मुझसे अक्सर कहती थीं कि मैं बहुत भावुक हूँ और मैं उनसे कहती थी कि मेरे भावुक होने में बुराई क्या है भला? खैर। हाँ, तो मैं कह रही थी मेरे स्कूल की उस संभागीय स्तर की प्रतिस्पर्धाओं की, तो मैंने उसमें एक देशभक्ति कविता गायन में भी प्रथम पुरस्कार जीता था और मेरे स्कूल के लिए वो जश्न का दिन था। जब तक मैं उस स्कूल में पढ़ी मेरे सारे शिक्षक मुझसे बहुत प्यार करते थे। उस साधारण से स्कूल की शिक्षा बड़ी असाधारण थी। जो मेरे जीवन के हर पहलू में मेरे बहुत काम आई।

पचमढ़ी की हरीभरी वादियों में मेरा छोटा सा स्कूल एक नरम-गरम दुशाला था, जिसकी शिक्षा ओढ़कर हम सारे विद्यार्थियों ने उम्र के हर कठिन सबक को सहजता से समझा और बिना नानुकर हल किया। वहाँ के सफ्फाक पानी के सदाबहार झरने हममें आज भी नमी बरकरार रखते हैं। हरे सीधे खड़े पहाड़, जंगली गुदगुदे खरगोश जिन्हें हम भींच लिया करते थे, नटखट बन्दरों की टोलियाँ जो हाथ से आम छीनकर भाग जाया करती थीं।

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

(दूसरी और अंतिम किस्त)

नीली पगड़ी

मनमोहन भाटिया

खाई से निकलने के पश्चात पापा मुझे और मां को घर छोड़ने के बाद गांव की चौपाल के लिए रवाना हुए। गांव के सारे पुरुष चौपाल पर रात की दिल दहलाने वाली गोलीबारी पर चर्चा कर रहे थे। शुक्र था, कि कोई हताहत नहीं हुआ। इतने में फौज के दो अफसर आए। रात की भंयकर गोलीबारी के बाद सीमा पर तैनात बटालियन ने गांव खाली कराने का निर्णय किया। बड़े अफसर ने बच्चों और औरतों को फौरन गांव छोड़ने की सलाह दी। सेना के दो ट्रक इस कार्य के लिए लगा दिये, ताकि शाम से पहले सुरक्षित स्थान पर पहुंच सके। पुरुषों को सलाह दी गई कि वे जरूरी सामान के साथ जितनी जल्दी सम्भव हो, गांव खाली कर दें।

फौजी ट्रक में गांव के सभी औरतों और बच्चों को बिठाया गया। मां के साथ जब मुझे ट्रक में बिठाने लगे, तब मैं रोने लगा कि मैं पापा के साथ जाऊंगा।

'गोलू बेटे, तुम मां के साथ जाओ, मैं पीछे-पीछे अपनी बैलगाड़ी में घर का सामान लेकर आता हूं।' पापा मुझे पुचकारते हुए कहने लगे।

'नहीं, मैं आपके साथ जाऊंगा।' कहते हुए मैं पापा से चिपक गया।

'गोलू जिद्द नहीं करते, देखो, मैं तुम्हारे साथ-साथ चलूंगा, तुम मुझे ट्रक में बैठकर देखना।' कह कर पापा ने फटाफट घर का जरूरी सामान बैलगाड़ी में रखना शुरू किया। फौजी ट्रक रवाना होने में थोड़ी देर हो गई, तब तक पापा ने बैलगाड़ी में सामान रख लिया था। फौजी ट्रक रवाना हुआ और पापा ने पीछे-पीछे बैलगाड़ी रवाना की। पापा ने नीली पगड़ी पहनी हुई थी। गांव की कच्ची सड़क पर धीरे-धीरे ट्रक आगे बढ़ने लगा। पीछे-पीछे पापा बैलगाड़ी में आ रहे थे। मैं पापा को देखते हुए हाथ हिलाता रहा। थोड़ी देर में ट्रक और बैलगाड़ी की दूरी बढ़ने लगी। पापा की शक्ल धुंधली दिखने लगी, लेकिन उनकी नीली पगड़ी देखकर मैं हाथ हिलाता रहा। पापा की नीली पगड़ी मुझे दिलासा देती रही कि पापा मेरे आसपास हैं। धीरे-धीरे ट्रक और बैलगाड़ी के बीच दूरी और बढ़ गयी और पापा की नीली पगड़ी भी दिखाई देना बंद हो गई।

ट्रक अब पक्की सड़क पर फर्राटे लगाने लगा। दिन ढल चुका था, रात की कालिमा छा चुकी थी। मेरा मन अभी भी पापा की सूरत देखना चाहता था, कि कहीं से पापा की नीली पगड़ी दिखाई दे जाए। लेकिन फासला काफी हो चुका था। एक रात फाईरिंग की वजह से और दूसरी रात पापा की जुदाई से सो नहीं सका था। बार बार उचक-उचककर देखता कि कहीं से चाहे दूर ही हो, पापा की नीली पगड़ी एक बार नजर आ जाए।

पौ फटने से पहले ट्रक ने हमें एक स्कूल में लाकर उतार दिया। सरकार ने एक स्कूल में सीमा पास के गांव वालों को ठहराने का प्रबंध किया था। धीरे-धीरे स्कूल में एक मेला सा लग गया। एक के बाद एक करके बहुत से फौजी ट्रक आए, जिनमें हमारे जैसे दूसरे गांवों के औरते और बच्चे थे।

हमारे आने के कारण स्कूल बंद कर दिया था। स्कूल में दो तरफ लाईन लगाकर कमरे थे और बाकी खाली मैदान। स्कूल कम्पाउन्ड के बाहर भी काफी खाली मैदान था, जहां टैन्ट लगाकर हमारे रहने का इन्तजाम किया गया था। मेरी निगाहें हमेशा स्कूल के गेट पर रहतीं और पापा के आने की आहट सदा लगी रहती। धीरे-धीरे गांव के पुरुषों ने भी आना शुरू कर दिया था।

'पापा अभी तक नहीं आए।' मैंने मां से पूछा।

'तू फिक्र मत कर, आ जाएंगे, देख कुलजीत के घर वाले भी नहीं आए। एक साथ आएंगे।' मां ने जवाब में कहा। 'बाकी बच्चे बाहर खेल रहे हैं, तू भी उनके साथ खेल। पापा आ जाएंगे।' लेकिन मेरा मन खेलने मे नहीं लग रहा था। दो दिन बीत गये, पापा नहीं आए। मैं रोने लगा। मां चुप कराने में लग गई, लेकिन मेरा रोना और ज्यादा हो गया। मुझे इतना ज्यादा व्याकुल, अधीर हो रोते देख बहुत सारी औरतें आस-पास जमा हो मुझे दिलासा देने लगीं। एक औरत ने मुझे गोदी में उठाकर पुचकारते हुए कहा, 'तू तो बड़ा बहादुर बच्चा है, क्यों रोता है, देख मेरा गोगी तेरे से कितना छोटा है, बड़े मजे से खेल रहा है, उसके पापा भी अभी नहीं आए।' लेकिन मेरा रोना बंद नहीं हो रहा था। 'मेरे पापा' कहकर और जोरों से रोने लगा। रोते-रोते भी मेरी निगाहें स्कूल के गेट पर टिकी थीं, मालूम नहीं, कब पापा आ जाएं।

तभी स्कूल गेट पर हलकी सी परछाई उठी, नीले रंग की धुंधली सी छाया दिखाई देने लगी, मेरी उत्सुकता अधिक हो गई। 'पापा की नीली पगड़ी' मैं चिल्ला पड़ा। हां वो मेरे पापा ही थे। नीली पगड़ी के बाद पापा हल्के हल्के नजर आने लगे। नजदीक आने पर मां ने चिल्ला कर कहा, 'गोलू तेरे पापा आ गए।'

पापा ने आते ही मुझे गोद में ले लिया, 'पागल रोता क्यों है?'

'इतनी देर से क्यों आए?'

'बैलगाड़ी ट्रक से रेस थोड़ी कर सकती है। इसलिए देरी हो गई।' पापा ने सांत्वना देते हुए कहा।

मैं पापा से चिपक गया था। पापा को पास पाकर ऐसा लग रहा था, जैसे पूरा जहां मिल गया है। उदासी दूर हो गई थी, चित प्रसन्न होकर छलांगें लगाने लगा, कि फटाफट दूसरे बच्चों के साथ खेलने भाग जाऊं।

'पागल कहीं का, मां को परेशान किया। इतने छोटे छोटे बच्चे कितनी मस्ती से खेल रहे हैं। और तूने यहां सबको परेशान कर दिया। अब खेलने नहीं जाएगा?' पापा ने पूछा।

मैं फौरन पापा की गोदी से उछलकर कूदा और जोर से चिल्लाकर गोगी की तरफ भागा। 'गोगी मैं खेलने आ रहा हूं।'

उस उम्र में बस खेल कूद से ही मतलब होता था। खेलकर वापिस घर आए तो मां बाप का साथ। दीन दुनिया से बेखबर।

युद्ध समाप्त होने के बाद अपने गांव लौटे। बमबारी के कारण खेती लायक नहीं रहे थे खेत। जीविका की तालाश में शहर आ गए। गांव में बडा खेत, बडा घर, जहां छलांगें मारते खेला करते थे। शहर के एक कमरे के मकान में दम घुटता था। जीवन का दूसरा नाम शायद यही है, यानी कि संघर्ष। हंसता खेलता पल कैसे संकटों में घिर जाता है, कोई कल्पना नहीं कर सकता है। अनिश्चितता से जीवन का हर पल घिरा रहता है। हंसी जैसे गायब हो गई थी।

किसान मां बाप मजदूर बन गए। दो तीन वर्ष संघर्ष करने के पश्चात गांव की जमीन बेच पाए। औने-पौने दामों में जमीन बेच कर अनाज बेचने का काम शुरू किया। मां की मजदूरी समाप्त हुई। मेरी शिक्षा शुरू हुई। वो गांव का आजाद बचपन शहर की कठोर जिन्दगी में बदल चुका था। दूसरी अनजान जगह पर जीवन को दुबारा संवारना कोई आसान काम नहीं है। राजा रंक हो जाते हैं। जब भी ऐसी कोई खबर सुनता हूं तो अपना बचपन और परिवार की व्यथा याद आ जाती है। आज भी वही हुआ, पाकिस्तान से आए सिख परिवारों की व्यथा देखकर आंखों में पानी आ गया।

इतने में पत्नी चाय बनाकर रसोई से आई। चाय बनाने के चंद पलों में चलचित्र की तरह मेरे मन पटल में यादें छा गई। चाय का कप पकड़ाते हुए बोली 'कुंभकरण के खानदानी जश्ने चिराग, चाय बिस्कुट के साथ हाजिर हैं।' चाय का कप मैंने हाथों में लिया। उसने मेरी आंखों की नमी देख ली थी। पहले भी कई बार वह मेरी आंखों की नमी देख चुकी थी। मैं कुछ कह न सका। सामने टीवी पर न्यूज देखकर वह सब समझ गई थी। (समाप्त)

(पृष्ठ ५ का शेष)

भापस्नान की विधि

सावधानियाँ

१. भाप स्नान रोज नहीं लेना चाहिए। दो या तीन दिन छोड़कर हर मौसम में बेखटके लिया जा सकता है।

२. भाप स्नान के अगले दिन यदि सरसों के तेल से मालिश की जाये, तो बहुत लाभ होता है। इससे शरीर की चर्बी घटती है और त्वचा लटकती नहीं।

लाभ

भाप स्नान से खून की बहुत सफाई होती है, जिससे त्वचा रोगों में बहुत लाभ होता है। इससे फालतू वजन कम होता है तथा वात और कफ दोष शान्त होता है। शरीर में खून का दौरा तेज होता है, जिससे सभी रोगों में लाभ मिलता है। मोटापा कम होता है तथा थायराइड आदि बीमारियों में बहुत लाभ मिलता है। ■

आँचल के शूल

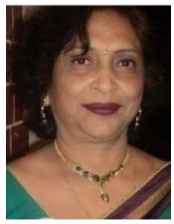

डॉ. रजनी अग्रवाल

हमेशा की तरह आज भी सौतन बनी घड़ी ने सनम के आगोश में मुझे पाकर मुँह चिढ़ाते हुए दस्तक दी। मैं अनमने मन से उठने ही वाली थी कि बाहों के घेरे से छनकर निकला स्नेह अनुरोध सुनाई पड़ा- 'अभी हॉस्पिटल चलने में समय है, थोड़ा आराम कर लो, बाद में तुम्हारा वात्सल्य हमें एक नहीं होने देगा।' मैं खिलखिलाकर हँस पड़ी। कोहरे की गहनता में रुई से छितराए बादलों की मोहक छवि निहार कर मैंने उम्मीद के पंख सजा नए दिन की शुरुआत की और पुत्र की चाहत में भगवती की आराधना में जुट गई। एकाएक सन्नाटे को भेदती हुई आहत चीख सुनाई पड़ी- 'अम्मा! अम्मा, हमें छोड़कर ना जाओ।' मैं दौड़कर पास के वृद्धाश्रम में गई, जिसकी बेजान बूढ़ी इमारत में सर्वत्र नेह को तरसते वृद्धों के नयन बेतावी से टकटकी लगाए अपनों के आने की बाट जोह रहे थे। चेहरे पर पड़ी झुर्रियों सी सलवटों वाले पर्दे को हटाकर मैं कमरे के भीतर गई और रो-रोकर बेहाल कमली को जमीन से उठाकर अपने सीने से लगा लिया। चारों ओर से घूरती दीवारें उसकी लाचारी का उपहास उड़ाती नजर आ रही थीं। खटिया के पास लुढ़की सुराई चिल्ला-चिल्लाकर एकाकीपन की करुण कथा सुना रही थी।

मैं हिम्मत जुटाकर अम्मा की बेजान खटिया की ओर बढ़ी। बुझे हुए दीपक की काली लौ सी अम्मा की ठहरी आँखें एकटक मुझे घूरती सी नजर आईं। मैंने पास जाकर उनकी आँखें बंद कीं और सिरहाने रखी उनकी बूढ़ी जीवन संगिनी डायरी को उठा लिया, जो उनके हर पल की गवाह बनी आज अपने अकेलेपन पर आँसू बहा रही थी। मैंने कमरे की खिड़की खोली और आगंतुक के इंतजार की राह तकती कुर्सी को अपने स्पर्श से अभिसंचित कर डायरी का पहला पृष्ठ खोला जो साजोसिंगार से सुसज्जित नवविवाहिता के गुदगुदाते यौवन की सुहाग रात की कहानी कह रहा था। दुलारी को बाहों में समेटे रमेश बाबू कह रहे थे- 'दुलरिया, तुम मेरा पूनम का वो चाँद हो, जो मेरी अँधियारी रातों का उजाला बनकर मेरी जिंदगी को रौशन करने आई हो। तुम्हारी सुर्ख माँग में भरा प्रीत का सिंदूर मेरी भोर की वो लालिमा है जिसके आगोश में आकर मेरी 'वन-बगिया हर रोज मुस्कुराकर महका करेगी।'

इस जुगल जोड़ी का खिलखिलाता प्यार ऐसा परवान चढ़ा कि जल्दी ही घर के आँगन में बच्चों की किलकारी सुनाई पड़ने लगी। राम, लखन और कमली की निश्छल हँसी से घर गुलजार रहने लगा। रमेश बाबू और दुलारी ने अपने सारे हसीन सपने इन बच्चों को समर्पित कर अब इनकी आँखों से दुनिया देखना शुरू किया। कितने सुखद थे वे पल, जब राम नन्हे लखन के हाथ से एक फुटा गन्ना छीनकर सरपट दौड़ लगाता और लखन उसके पीछे-पीछे भागते हुए कहता- 'भैया गन्ना दे दो ना। अच्छा आधा तुम्हें भी दे दूँगा।' वहीं पास खड़ी कमली दोनों पैरों से कूदती हुई जोर-जोर से ताली बजाती और रमेश बाबू दुलरियों को साथ लिए इस अगाध सुख का रसास्वादन करते हुए ईश्वर का आभार प्रकट करते। उनके दिन-रात यूँ ही खुशहाल जिंदगी जीते हुए गुजरने लगे। पता ही नहीं चला, कब दुलारी माँ से सास बन गई और दो प्यारी बहुएँ वसुधा और सुगंधा उसकी ममता के आँचल में आ समाईं।

भगवान ने छप्पर फाड़कर खुशियाँ बरसाईं, पर शायद नियति को यह मंजूर न था। उम्र का सातवाँ दशक पूरा किए हुए अभी दो दिन ही बीते थे कि अँधेरी काली रात को यमराज ने द्वार पर दस्तक दी और हार्ट अटैक के एक ही झटके ने रमेश बाबू की जीवन लीला समाप्त कर दी। उनके सीने पर सिर रख कर फफकती दुलारी के अरमानों की दुनिया के सबसे अहम किरदार रमेश बाबू ने आज उसे इस अँधियारी रात का हिस्सा बनाकर हमेशा के लिए उससे विदा ले ली। अरमानों की चिता सजाए, निढाल दुलारी ने असमय आए इस तूफान का धैर्यपूर्वक सामना किया और कमली को सीने से लगाकर उन्हें अश्रुपूरित विदाई दी। समय की मार से कोई नहीं बच सका तो दुलारी कैसे बचती? रमेश बाबू के आँखें मूँदते ही दुलारी को राम-लखन की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी। अब घर में वही होता था जो राम-लखन चाहते थे। पाश्चात्य संस्कृति के अंधे अनुकरण और आँख पर चढ़े भौतिकवादी चश्मे ने अशिष्टता को जन्म देकर संस्कारों की नींव हिला दी।

अर्थशास्त्र में बी.ए. ऑनर्स कर रही कमली को पढ़ाई छुड़वाकर गृहस्थी की भट्टी में झोंक दिया गया। चाहकर भी दुलारी कुछ न कर सकी बस कोने में पड़ी झाड़ू की तरह आँसू बहाकर अपने भाग्य को कोसती रहती। बेशर्मी की हद तो उस दिन पार हुई जब सुगंधा ने घर आईं अपनी सहेलियों से कमली का परिचय नौकरानी कहकर कराया। आँखों में आँसू भरे बेबस कमली सामने खड़ी लाचारी को देखकर वहाँ से चुपचाप चली गई। रात को माँ से चिपटकर कमली पिता को याद करके घंटों रोती रही। अचल भाव से शिला बनी दुलारी समय की मार व तीक्ष्ण वात का कटीला प्रहार चुपचाप झेलती रही।

सवेरा होने पर हिम्मत जुटाकर दुलारी ने राम-लखन के समक्ष कमली के हाथ पीले करने की बात रखी। लखन बोला- 'इतनी जल्दी क्या है माँ ! अभी पिताजी का क्रियाकर्म करके चुके हैं और अब इसकी शादी! इतना पैसा आएगा कहाँ से? पिताजी ने कर्जे और दो जिंदा लाश के अलावा छोड़ा ही क्या है?'

दुलारी बोली- 'बेटा, घर गिरवी रखकर किसी तरह इसके हाथ पीले कर दो ताकि मैं सुकून से मर सकूँ।' दुलारी का इतना कहना था कि राम ने माँ के घायल घावों पर नमक छिड़कते हुए कहा- 'घर? किस घर की बात कर रही हो माँ? ये घर गिरवी रखकर ही पिताजी की अंत्येष्टि की गई है।' दुलारी के पैरों तले जमीन खिसक गई। वह मूर्छित होकर धरा पर गिर पड़ी।

भाग्य की विडंबना तो देखिए, दूसरे दिन जब दुलारी ने होश सँभाला तो खुद को वृद्धाश्रम की बूढ़ी इमारत की चरमराती चार दीवारी से घिरा पाया। आज पहली बार बिना कफन, बिना अर्थी बिना काँधे के पति के घर से निकली इस तिरस्कृत विदाई को देखकर सारी कायनात रो रही थी। पूछने पर दुलारी को पता चला कि राम-लखन अपने से दूर कर उसे हमेशा के लिए यहाँ दफन करके चले गए हैं। कुछ दिन बीत जाने के बाद दुलारी ने संरक्षिका महोदया से हकीकत बयान कर कमली को साथ रखने की अनुमति ले ली और तब से आज तक ये माँ-बेटी गुमनामी के साये में सिसक-सिसककर घुटन भरी जिंदगी जी रही हैं। कलयुग में अपनी कोख से अपमानित माँ की असहनीय पीड़ा से मैं तड़प उठी और हाथ जोड़कर भगवती से कह उठी, 'इस जन्म में मुझको बिटिया ही देना।' ■

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

राजकिशोर मिश्र 'राज'

८ मार्च को हम अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाते हैं। यह गौरव की बात है, लेकिन यह कागजों में दबा हुआ या दिखावा मात्र हो तो बड़ा दुख होता है। नारी परिवार का अभिन्न अंग होती है, उनके शोषण की शुरूआत भी परिवार से होती है। पुरुषवादी समाज में स्त्री शोषण में कभी-कभी खुद स्त्रियाँ सहयोगी होती हैं। बेटा-बेटी में अंतर और बेटी-बहू में अधिकाधिक अंतर देखा जाता है। अगर बेटी को बेटे के समान बहू को बेटी के समान, बहू द्वारा सासू को माँ के समान समझें तो समस्या का निदान हो सकता है। हमें इस मामले में अपना नजरिया बदलना चाहिए। नारी कोई वस्तु नहीं, बल्कि आपकी माँ, बहन, बेटी, पौत्री, पत्नी आदि के रूप में आपकी सहभागी है।

मैं इस प्रयोजनवादी समाज से पूछता हूँ आखिर नारियों के साथ अन्याय एवम् शोषण क्यों होता है? उन्हें सम्मान ही नहीं, बल्कि अधिकार चाहिए। स्त्री का बढ़ता रुतबा देख उन्हें ईर्ष्या क्यों होती है? कुछ कट्टरपंथी विचारधारा के अनुयायी उन्हें परदे में क्यों रखना चाहते हैं? ऐसे समाज से गुजारिश करता हूँ मलाला युसुफजई, तसलीमा नसरीन आदि द्वारा यथार्थ को दर्शाना, जनजागरूकता लाना कोई अपराध नहीं है। सरकारें

(शेष पृष्ठ ३० पर)

ऐतिहासिक है केंद्र सरकार की नई स्वास्थ्य नीति

मृत्युंजय दीक्षित

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई वाली एनडीए सरकार ने अपनी बहुप्रतीक्षित राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति को सदन के पटल पर रख दिया है। मोदी सरकार ने जो नई स्वास्थ्य नीति प्रस्तुत की है वह बेहद अहम तथा काफी चुनौतीपूर्ण भी है। इस नीति में पहली बार योग को शामिल किया गया है। यह संघ की विचारधारा से भी कुछ सीमा तक मेल खा रही है। मीडिया में सरकार की स्वास्थ्य नीति पर कोई विशेष चर्चा नहीं हो रही है, यह एक बहुत आश्चर्य की बात है। संसद के दोनों सदनों में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जे.पी. नड्डा ने बताया कि वर्तमान स्वास्थ्य नीति देश के इतिहास में बहुत बड़ी व अभूतपूर्व उपलब्धि है। नई नीति १५ वर्षों के बाद पेश की गयी है। नई स्वास्थ्य नीति बदलते सामाजिक, आर्थिक, औद्योगिकी और महामारी विज्ञान परिदृश्य में उपस्थित और उभरती चुनौतियों से निपटने के लिए १५ वर्ष के अंतराल के बाद आयी है। इससे पहले वर्ष २००२ राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति लायी गयी थी।

नई नीति में रोकथाम और स्वास्थ्य संवर्धन पर बल देते हुए रुग्णता देखभाल की अपेक्षा आरोग्यता पर जोर दिया गया है साथ ही मरीजों को अधिकार संपन्न बनाने का प्रयास किया गया है। इसमें सरकार ने बहुत सारे लक्ष्यों को निर्धारित किया है। सरकार का सबसे बड़ा और पहला लक्ष्य यह है कि मनुष्य से संबंधित जीवन प्रत्याशा को ६७.५ वर्ष से बढ़ाकर वर्ष २०५० तक ७० वर्ष करने और वर्ष २०२२ तक आमुख रोगों की व्याप्तता तथा इसके रुझान को मापने के लिये अशक्तता समायोजित आयु वर्ष सूचकांक की नियमित निगरानी करने के साथ-साथ वर्ष २०२५ तक पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों में मृत्यु दर को कम करके २३ करना, नवजात शिशु मृत्यु दर को घटाकर १६ करना तथा मृत जन्म वाली शिशु दर को वर्ष २०२५ तक घटाकर एक अंक तक में लाने का लक्ष्य रखा गया है।

सरकार ने अपनी नई नीति में कई रोगों के उन्मूलन का भी लक्ष्य रखा है, जिसमें २०१८ तक देश से कुष्ठ रोग की समाप्ति, वर्ष २०१७ तक कालाजार और वर्ष २०१७ तक ही लिम्फेटिक फाइलेरियसस का उन्मूलन करने की बात कही गयी है। इसके साथ ही क्षय रोगियों में ८५ प्रतिशत से अधिक इलाज दर प्राप्त करने पर जोर दिया गया है, ताकि वर्ष २०२५ तक इसका उन्मूलन किया जा सके। साथ ही सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सरकार ने स्वास्थ्य सवंर्धन पर बल देते हुए जन स्वास्थ्य व्यय को समयबद्ध ढंग से जीडीपी के २.५ प्रतिशत तक बढ़ाने का प्रस्ताव किया है। दूसरी सबसे बड़ी बात यह है कि अकाल मृत्यु दर को भी २५ प्रतिशत कम करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसके अतिरिक्त सरकार ने हृदयवाहिका रोग, कैंसर मधुमेह या श्वांस संबंधी रोगों से होने वाली अकाल मृत्यु दर को वर्ष २०२५ तक घटाकर २५ प्रतिशत करने की बात कही है।

नई स्वास्थ्य नीति का सबसे महत्वपूर्ण विषय इस बार योग है। योग को अच्छे स्वास्थ्य संवर्धन के भाग के रूप में स्कूलों एवं कार्यस्थलों में अधिक व्यापक ढंग से लागू किया जायेगा। नीति के तहत विनियामक परिवेश में सुधार करने और उसे सुदृढ़ करने के लिए नीति में मानक तय करने के लिये प्रणालियां निर्धारित करने तथा स्वास्थ्य देखभाल की गुणवत्ता सुनिश्चित करने का अधिकार प्रदान किया गया है। नीति में स्पष्ट किया गया है कि चिकित्सा शिक्षा में सुधार करने की अपेक्षा की गयी है। यह नीति व्यक्ति आधारित है। स्वास्थ्य सुरक्षा का समाधान करने और औषधियों एवं उपकरणों के लिए मेक इन इंडिया को लागू करने की परिकल्पना की गयी है। इसमें जनस्वास्थ्य लक्षणों को ध्यान में रखते हुए चिकित्सा उपकरणों तथा उपस्करों के लिए नीतियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने की भी परिकल्पना की गयी है।

नई नीति में प्राथमिक स्वास्थ्य पर भी जोर दिया गया है तथा स्वास्थ्य प्रणालियों को मजबूत करने पर भी बल दिया गया है। नई स्वास्थ्य नीति के अंतर्गत सभी सार्वजनिक अस्पतालों में निःशुल्क दवा, निःशुल्क निदान तथा निःशुल्क आपात एवं अनिवार्य स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं प्रदान करने का प्रस्ताव किया गया है। नई नीति में मेक इन इंडिया की परिकल्पना को बढ़ावा देने की बात कही गयी है। इस पर पीएम मोदी ने कहा कि राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति में नागरिकों का हित सर्वोपरि रखा गया है। नई राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति का दस्तावेज भविष्योन्मुखी है। सबसे बड़ी बात यह है कि अब राष्ट्रीय स्वास्थ्य देखभाल मानक संगठन का सृजन किया जायेगा जो स्वास्थ्य देखभाल के लिए दिशा निर्देश और प्रोटोकाल तैयार करेगा। विवादों और शिकायतों के त्वरित निस्तारण के लिए एक सशक्त न्यायाधिकरण की स्थापना का भी प्रावधान रखा गया है। जिसके अंतर्गत अब मरीज अपनी शिकायतें भी रख सकेंगे।

सरकार की ओर से पेश किया गया नई स्वास्थ्य नीति २०१७ का दस्तावेज वाकई में बेहद ऐतिहासिक है तथा सरकार के लक्ष्य भी। यदि सरकार नई स्वास्थ्य नीति को कारगर ढंग से लागू करने में सफल रही तो देश के स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक बड़ा बदलाव आ सकता है। लेकिन अभी देश के सभी नागरिकों को उच्च तकनीक की स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराने के लिए बडा काम करना है। अब इतना बड़ा देश कम से कम हर जिले में एक बडा चिकित्सालय और उसमें हर प्रकार की सुविधा तो चाहता ही है। हमारे देश में आयुर्वेद का बड़ा महत्व है तथा उसका क्षेत्र भी काफी विस्तृत है। लेकिन विगत ७० सालों में जितनी भी सरकारें आयी हैं उनमें से लगभग सभी ने आयुर्वेद का तिरस्कार ही किया है जिसके कारण आयुर्वेदिक चिकित्सालय तो बहुत हैं लेकिन उनकी हालत बद से बदतर है। यदि आयुर्वेद को विकसित किया जाये व सरकारी सहायता मिले तो सरकारी लक्ष्यों को पूरा करना आसान हो जायेगा। ■

(पृष्ठ १६ का शेष) **रामजन्मभूमि विवाद...**

पर किसी समूह संगठन या विशेष समुदाय एकाधिकार नहीं हो सकता. तिरुपति, ताजमहल और अयोध्या बिना किसी धार्मिक और सामुदायिक भेदभाव के प्रत्येक भारतीय की विरासत हैं.

मेरा मानना है जब अयोध्या राम का जन्म स्थल है तो मुसलमानों को आगे बढ़कर ये कहना चाहिए कि हां मंदिर बनाओ, तब ही मुसलमान एकता व भारतीयता का उदारता का सच्चा उदहारण दे पाएँगे. यदि एक मुसलमान की हैसियत से वो बाबरी मस्जिद का केस जीत भी जाएँगे तो मुझे कोई दुख भी नहीं होगा, अगर हार जाएँगे तो कोई खुशी नहीं होगी क्योंकि मजहब या धर्म का पहला सबक ही है इंसानियत, भाईचारा. देश ने इस छोटे से मुद्दे की कीमत बहुत बड़ी चुकाई है, अब बस करो जब नबी की भूमि संयुक्त अरब अमीरात जैसा इस्लामिक मुल्क मंदिर के लिए जमीन दे सकता है. तब हमारा तो इतिहास, पूर्वज, संस्कृति और विरासत सब कुछ साझा है .तो आओ मंदिर और मस्जिद भी साझा कर पूरे विश्व को एकता उदारता का परिचय दें! ताकि अगली बार जब जनसंख्या की गणना हो तो उसमे हिन्दू और मुस्लिम नहीं बल्कि इंसानों की गणना में हमारा नाम आये. ■

(पृष्ठ ४ का शेष) **संस्कृत की महत्ता**

का क्या उद्देश्य है यह धार्मिक शिक्षा ही सिखाती हैं। समाज में शिक्षित वर्ग का समाज के अन्य वर्ग पर पर्याप्त प्रभाव होता हैं। अगर शिक्षित वर्ग सदाचारी एवं गुणवान होगा तो सम्पूर्ण समाज का नेतृत्व करेगा। अगर शिक्षित वर्ग मार्गदर्शक के स्थान पर पथभ्रष्टक होगा तो समाज को अन्धकार की और ले जायेगा। संस्कृत भाषा में उपस्थित वांग्मय मनुष्य को मनुष्यत्व सिखाने की योग्यता रखता हैं। हमारे देश की अगली पीढ़ी को संस्कृत भाषा का पर्याप्त ज्ञान हो और उससे उन्हें जीवन में दिशानिर्देश मिले। यही संस्कृत की महत्ता है। ■

(पृष्ठ २६ का शेष) **महिला दिवस**

सिर्फ ढोल पीटती हैं। खुद के अंदर झाँकने का प्रयास नहीं करतीं। भारत में ३३ प्रतिशत आरक्षण की बात की जाती है क्यों न उसे ५० प्रतिशत किया जाये? जब ३३ प्रतिशत मिलना ही भारी है, तो ५० प्रतिशत के लिए तो भगीरथ प्रयास ही करना होगा। बहुत कुछ लिखना और करना अभी शेष है। अंततोगत्वा हम यही कहेंगे हमें अपने नजरिए को बदलना होगा। प्रकृति और पुरुष रथ के दो पहिए है। एकांगी व्यवस्था से कभी भी समाज का कल्याण नहीं हो सकता। ■

बच गया पंजाब!

विजय कुमार सिंघल

हाल ही में जिन पाँच राज्यों में विधानसभा चुनाव सम्पन्न हुए हैं उनमें पंजाब का चुनाव परिणाम सबसे अलग रहा। इसमें कांग्रेस को लगभग दो-तिहाई बहुमत मिला, आम आदमी पार्टी (आआपा) दूसरे स्थान पर आई और अकाली-भाजपा गठबंधन तीसरे स्थान पर खिसक गया, जो पिछले १० साल से प्रदेश में राज कर रहा था। वैसे अकाली-भाजपा गठबंधन की हार की आशंका पहले से थी, क्योंकि १० साल से शासन करने के कारण प्रदेश में सरकार विरोधी वातावरण का निर्माण हो गया था। ड्रग के व्यापार में कई वरिष्ठ अकाली नेताओं के लिप्त रहने के चलते भी गठबंधन की छवि धूमिल हुई थी। लेकिन यह आशंका बिल्कुल नहीं थी कि वह तीसरे स्थान पर लुढ़क जाएगा।

कांग्रेस को बहुमत मिलना अवश्य आश्चर्यजनक है क्योंकि विपक्षी दल के रूप में कांग्रेस ने ऐसा कुछ नहीं किया था कि उसे दो-तिहाई बहुमत मिल जाता। वास्तव में सरकार विरोधी मतों का एक बड़ा भाग अनायास ही कांग्रेस की ओर चला गया। नवजोत सिंह सिद्धू के भाजपा छोड़ने और कांग्रेस में जाकर अकाली सरकार और मुख्यतः बादल परिवार के विरुद्ध धुआँधार प्रचार करने का भी इसमें बड़ा योगदान रहा।

सबसे अधिक आश्चर्यजनक बात है आआपा का दूसरे क्रमांक पर आ जाना। यों तो दिल्ली के अलावा पंजाब और गोआ में ही आआपा का कुछ प्रभाव है। इनमें से गोआ में तो वह अपने सभी प्रत्याशियों की जमानत जब्त कराकर अंडा बटोर लायी, लेकिन पंजाब में काफी वोट पाकर अकालियों को भी पछाड़कर दूसरे नम्बर पर पहुँच गयी।

उल्लेखनीय है कि २०१४ के लोकसभा चुनावों में आआपा को केवल पंजाब से तीन स्थानों पर सफलता मिली थी। इसीलिए आआपा के बड़बोले नेता केजरीवाल पंजाब में ११७ में से १०० सीटें जीतने का दावा कर रहे थे, पर वे २० ही जीत सके। केजरीवाल द्वारा किया गया आक्रामक प्रचार भी अधिक सफल नहीं रहा। हालांकि कई चुनाव पूर्व के सर्वेक्षणों और चुनाव पश्चात अनुमानों में भी आआपा के बहुमत प्राप्त करने या उसके निकट रहने की भविष्यवाणियाँ की गयी थीं, परन्तु वे सब गलत निकलीं।

पंजाब से प्राप्त जानकारियों से पता चलता है कि इस बार पंजाब में आआपा के प्रचार में खालिस्तान समर्थक आतंकवादियों की ताकत लगी हुई थी। कनाडा जैसे देशों में खालिस्तान समर्थक सिखों की बड़ी संख्या है जो बहुत धनी भी हैं। वे अकाली और कांग्रेस दोनों से घृणा करते हैं। इसलिए वे पंजाब में ऐसी किसी भी पार्टी का समर्थन करने को तैयार रहते हैं जो उनके खालिस्तान के सपने को साकार करने में उनकी सहायता कर सके। देश के दुर्भाग्य से उन्हें आआपा के रूप में एक ऐसी पार्टी मिल गयी। अतः उनका धन विभिन्न स्रोतों से आआपा के चुनाव प्रचार में लगने लगा। आये दिन होने वाले जनमत सर्वेक्षणों ने भी उनका मनोबल बढ़ाया। ऐसी स्थिति में सभी देशभक्त भारतीयों में चिन्ता हो गयी कि यदि पंजाब में केजरीवाल के हाथ में सत्ता आ गयी तो वह दिल्ली की तरह पंजाब जैसे विकसित प्रदेश का सर्वनाश तो करेंगे ही, देश को फिर से खालिस्तानी आतंकवाद को भी भुगतना पड़ेगा।

परन्तु ऐसी बातें कभी छिपी नहीं रहतीं। इसलिए खालिस्तान की आहट पाते ही पंजाब का गैर-सिख हिन्दू मतदाता, जो अकाली सरकार से बहुत नाराज था, आआपा के बजाय कांग्रेस की ओर खिसक गया। इस तरह बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा तो कांग्रेस को बहुमत मिल गया और पंजाब केजरीवाल के चंगुल में जाने से बच गया। दिल्ली में तो उपराज्यपाल ने केजरीवाल की नाक में नकेल डाल रखी थी, परन्तु पंजाब के राज्यपाल ऐसा कुछ नहीं कर पाते, क्योंकि पंजाब एक पूर्ण राज्य है।

कई भाजपा समर्थक कहते हैं कि भाजपा को इस बार अकालियों का साथ छोडकर पंजाब में अकेले चुनाव लड़ना चाहिए था। हो सकता है कि ऐसा करने पर भाजपा को वहाँ वर्तमान में मिली ३ सीटों से कुछ अधिक सीटें मिल जातीं, लेकिन ऐसा करना दीर्घकालीन राजनीति की दृष्टि से उचित न होता, क्योंकि अकाली दल ही देश में भाजपा का सबसे पुराना और विश्वसनीय साथी रहा है। उसका साथ छोड़ना अनैतिक व राजनैतिक रूप से हानिकारक होता।

पंजाब में कांग्रेस को बहुमत मिलने से हमें पहली बार कांग्रेस के जीतने पर प्रसन्नता हुई है। अगर यहाँ आआपा जीत जाती तो पंजाब का और पूरे देश का बहुत दुर्भाग्य होता। साथ ही मोदी सरकार के लिए एक नया सिरदर्द पैदा हो जाता। इसलिए अच्छा ही हुआ कि भले ही कांग्रेस आ गयी, लेकिन पंजाब बच गया। ■

(पृष्ठ २७ का शेष)

जंगल में मंगल

वे मीलों लम्बे पथरीले रास्ते जो धूल रहित थे, और उनके दोनों तरफ घने छतनार वृक्षों की छाया में लम्बी दूरियाँ जो जैसे पलक झपकते ही पूरी हो जाती थीं, और हम दौड़कर बी फॉल, महादेव, जटाशंकर जैसी खूबसूरत प्राकृतिक जगहों पर पहुँच जाया करते थे। वो प्राकृतिक दृश्यावली, वो सहज सरल निश्छल निष्पाप जीवन मुझसे मीलों दूर और सालों पीछे छूट गया। लगता है उस हिंडोले से नीचे उतार दिया हो टाइम मशीन ने मुझे। पर अभी अलविदा नहीं कहूँगी, फिर आऊँगी बार-बार आऊँगी, हजार बार आऊँगी, लौटूंगी अपने बचपन में तब तक, जब तक कि हर साँस में उसे समा न लूँ।

सबसे मुश्किल है अपने अंदर के बच्चे को ताउम्र जिन्दा रखना, पर हिसाबी-किताबी जिन्दगी से अगर कोई कुछ बचा पाता है, तो वो है बचपन चाहे वो किसी भी रूप में लौटे, हर बार चकित कर देता है, खुशियों से पूर देता है। ■

(पृष्ठ २६ का शेष)

लम्बी कहानी : अन्ततः

स्वतः उनके कदम अस्पताल परिसर में स्थित मंदिर की ओर बढ़ चले। वहाँ स्थापित देवी की प्रतिमा की ओर देखा तो लगा कि देवमूर्ति उन्हें आग्नेय दृष्टि से देख रही है और कह रही है कि जिसने अपना सारा जीवन तुम्हें अर्पण कर दिया उसे क्या प्रतिफल दिया तुमने?

'क्षमा देवी माँ, अज्ञानी समझकर मुझे क्षमा कर दो, बस एक मौका दे दो माँ, मुझे अपनी गलती सुधारने का। मृणाल को जीवन दे दो। मैं अब उसे अपनी आँख की पुतली की तरह सम्हालकर रखूँगा, उसकी बहुत देखभाल करूँगा।'

'सॉरी, हम उन्हें बचा नहीं सके, शी इज नो मोर।' डॉक्टर ने कहा। उनके पैरों तले जमीन निकल गई। 'आप कातिल हैं माँ के, मैं आपको कभी माफ नही करूँगा।' अमन घृणा से उन्हें देख रहा था।

'चले जाइए आप यहाँ से, जब जीते जी माँ की परवाह नहीं की तो अब क्या कर रहे हैं। जाकर अपनी फर्म में बैठिये, वरना कितने क्लाइंट निकल जाएंगे। नहीं तो क्रिकेट मैच देखिये। माँ के लिए अब भी कुछ करने की जरूरत नहीं। उनका अंतिम संस्कार भी हम निबटा देंगे।' अवनि सिसक रही थी। वे बेदम से गिर पड़े। वहाँ उपस्थित सभी मित्र और सम्बन्धी उन्हें हेय दृष्टि से देख रहे थे। सबकी निगाहों से गिरकर कैसे जियेंगे वह।

'काश मुझे एक मौका मिल जाता, बेशक वह कई दिन बिस्तर पर पड़ी रहती। मैं उसकी खूब सेवा करके अपने बुरे बर्ताव का प्रायश्चित कर पाता।'

तभी घण्टी बजने के स्वर से वह जैसे जाग पड़े, आस-पास देखा तो सन्तोष की साँस ली। शुक्र है कि ये उनके मन का डर था। 'देवी माँ, मृणाल को जीवन दे दो!' वह जार-जार रो रहे थे। 'मुझे एक मौका दे दो माँ, अपनी भूल सुधारने का।'

'पापाऽऽ!' पीछे से अमन की आवाज आयी तो उन्होंने पलटकर देखा।

'कबसे आपको ढूंढ रहा था, चलिये माँ अब खतरे से बाहर हैं।' भावावेश में वह बेटे से लिपटकर रो पड़े। उसने तसल्ली देने के लिए उनकी पीठ पर हाथ फेरा और फिर उन्हें लेकर माँ के पास चल दिया। अंदर प्रवेश किया तो देखा अवनि माँ का सर सहला रही थी।

'मुझे माफ कर दो मृणाल, मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गई।' उसका हाथ पकड़कर वे रो पड़े 'तुम हमेशा मेरे साथ रहना, मैं अब कभी तुम्हें शिकायत का मौका नहीं दूँगा। तुम्हारा पूरा ख्याल रखूँगा।' (समाप्त)

राम सेतु की सच्चाई जानने को होगा अध्ययन

नई दिल्ली। भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद (आइसीएचआर) रामायण में वर्णित राम सेतु की वास्तविकता का पता लगाने के लिए शोध अध्ययन करेगा।

इसके लिए वह इस वर्ष अक्टूबर से दो महीने के लिए पायलट प्रोजेक्ट शुरू करने जा रहा है। अपने अध्ययन में आइसीएचआर पुरातात्विक रूप से यह सुनिश्चित करेगा कि राम सेतु ढांचा मानव निर्मित है या यह प्राकृतिक रूप से बना है। उल्लेखनीय है कि पौराणिक मान्यताओं के अनुसार भारत और श्रीलंका के बीच राम सेतु का निर्माण राम की सेना को लंका में पहुँचाने के लिए नल-नील नामक वानरों ने किया था।

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष वाई सुदर्शन राव ने इस आशय की घोषणा की है। पत्रकारों से उन्होंने कहा, 'राम सेतु से जुड़ी एक महत्वपूर्ण परियोजना पर हम काम शुरू करने जा रहे हैं। इसकी अवधि अक्टूबर, नवंबर होगी। अध्ययन के अन्तर्गत हम यह पता लगाने की कोशिश करेंगे कि राम सेतु मानव निर्मित है अथवा यह किसी प्राकृतिक प्रक्रिया की देन है।'

उन्होंने कहा कि यह पूरी तरह से आइसीएचआर की परियोजना है, लेकिन आवश्यकता होने पर केंद्र सरकार से भी सहायता ली जाएगी। ■

भरूच में देश के सबसे लंबे केबल ब्रिज का उद्घाटन

अहमदाबाद। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ७ मार्च को दो दिवसीय दौरे पर गुजरात गए। इस बीच उन्होंने भरूच जिले में नर्मदा नदी पर बनाये गये देश के सबसे लंबे एक्स्ट्रा डाज्ड केबल ब्रिज का उद्घाटन किया।

यह पुल चार लेन का है और इसका निर्माण अहमदाबाद-मुंबई राष्ट्रीय राजमार्ग पर यातायात को सुगम बनाने के लिए किया गया है। इस पुल की लंबाई १३४४ मीटर है और चौड़ाई २०.८ मीटर है। इसे बनाने में दो वर्ष का समय लगा और इस पर लगभग ३७६ करोड़ रुपये का खर्च आया है। ■

वैदिक मंत्रों का जाप करके परीक्षा में पा सकते हैं अच्छे अंक

हैदराबाद। परीक्षा में बेहतर अंक पाने के लिए वैदिक मन्त्र कारगर पाए गए हैं। वैदिक मंत्रों का जाप करने से छात्रों को पढ़ाई से होने वाले तनावों से निपटने और चीजों को याद रखने में मदद मिलती है। हाल ही में बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नॉलजी पिलानी के हैदराबाद कैम्पस की एक रिसर्च में यह दावा किया गया है। इतना ही नहीं, शोध में कहा गया है कि वैदिक मंत्रों के जाप से छात्र मनोवैज्ञानिक और शारीरिक तौर पर भी बेहतर होते हैं और उन्हें एकाग्रता बढ़ाने में मदद मिलती है।

बिट्स पिलानी, हैदराबाद कैम्पस में सोशल साइंस और ह्यूमैनिटी विभाग की डॉ. अरुणा लोला ने बताया कि उनके इस शोध के पहले और बाद में मनोवैज्ञानिक टेस्ट किया गया। इसमें विषयों को लेकर दिमागी स्पष्टता और सामान्य खुशहाली में बढ़ोतरी देखी गई। मंत्रोच्चारण एक शक्तिशाली आवाज या वाइब्रेशन है, जिसकी मदद से कोई भी अपने दिमाग को स्थिर रख सकता है। ओम के उच्चारण से तनाव से राहत मिलती है और याददाश्त भी बढ़ती है। बिट्स पिलानी का यह शोध 'धर्म और स्वास्थ्य' के नए अंक में प्रकाशित भी हुआ है। ■

साझा काव्य संकलन पर चर्चा एवं संगोष्ठी

मुम्बई। दि. १९ मार्च २०१७ को नवी मुम्बई के खारघर में एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जो 'छंद, मुक्त अभिव्यक्ति मंच' ने अपने प्रथम साझा काव्य संकलन 'कुछ यूँ बोले अहसास' पर चर्चा के लिए आयोजित की थी। इस गोष्ठी में मंच के संस्थापक व संकलन के सम्पादक श्री राजेश सिन्हा के साथ ही अन्य अनेक रचनाकारों ने भाग लिया, जिनमें प्रमुख हैं- श्री त्रिलोचन अरोड़ा, श्री कुलदीप सिंह, श्रीमती मोनिका सिन्हा, श्रीमती राधिका भंडारी, सुश्री श्वेता सिंह तथा श्री विजय कुमार सिंघल। कई रचनाकारों ने गोष्ठी में अपनी- अपनी रचनाओं का पाठ किया।

सभी उपस्थित रचनाकारों को काव्य संकलन की प्रति भेंट की गयी।

इस संकलन में श्री राजेश सिन्हा के अलावा भी जय विजय से जुड़े कई रचनाकारों की रचनायें सम्मिलित हैं, इनमें कुछ के नाम हैं- नीरजा मेहता, मीनाक्षी सुकुमारन, ज्योत्सना सिंह, डॉली अग्रवाल, तथा कृतांशा अरोड़ा। ■

कार्टून -- श्याम जगोता

जय विजय मासिक

कार्यालय- १००२, कृष्णा हाइट्स, प्लॉट ८, सेक्टर २-ए, कोपरखैरणे, नवी मुंबई-४००७०९ (महा.)

मोबाइल : 09919997596; ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com

वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in

सम्पादक- विजय कुमार सिंघल

सहसम्पादक- सौरभ कुमार दुबे, विभा रानी श्रीवास्तव, अरविंद कुमार साहू

'जय विजय' का नेट संस्करण ई-मेल से निःशुल्क भेजा जाता है। रचनाओं में व्यक्त किये गये विचार सम्बंधित रचनाकारों के हैं। उनसे सम्पादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।